

रसतरंग ॥



जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्रआनन्दकन्द व श्रीमतीजगज्जननी
भवभयभमनी श्रीराधिकाजीमहारानीकाचरित्र
अनेक,दोहा,चौपाई,सोरठा,सवैया,कवि
त्तादि छन्दोंमें मनोहरपदोंसे वर्णितहै

जिसको

श्री ५ श्रीमन्महाराजाधिराज बांधवेश रघुराजसिंहजू
देवके परमकृपापात्र श्रीयुतद्विजराजउदारशिर-
ताजपाँड़ेलक्ष्मणप्रसादजूने कविकमलापति
की सहायतासे भाषा काव्यानुरागियों के
उपकारार्थअत्यंतपरिश्रमसे रचनाकिया

पहलीबार

257

स्थान लखनऊ



मुंशीनवल किशोर के छापेखाने में छपा
एप्रिल सन् १८८६ ई० ॥

के लियेतय्यारहैं उनमें से कुछ इस सूचीपत्रमें लिखी हैं औ
बहुत किफ़ायत से घटाके नियत हुआहै औरव्यापारियों
सस्तीहोंगी जिनको व्यापारकीइच्छाहो वह मुंशीनवलकि
मुक़ामलखनऊ हज़रतगंज के पतेसेख़तभेजकर क़ीमत का

नामकिताब	नामकिताब	न
संस्कृत व भाषाटीका तथा संस्कृतही टीका सहित की पुस्तकें	सख्यसरोजभास्कर	भगवत
	लीलावतीसंस्कृत	व्रताव
	माधवनिदान	हंसरा
	मुहूर्त्तचक्रदीपिका	शार्ङ्ग
लघुसिद्धांत कौमुदी	मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक	बृहत
सिद्धान्तचंद्रिका	शीघ्रबोधसटीक	अवध
समासचक्र	मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक	परमा
रूपावली	मुहूर्त्तगणपति	सामु
निर्णयसिंधु	मुहूर्त्तदीपक	रघुवं
	बृहज्जातक सटीक	संस्
संध्योपासन पंचमहायज्ञ	लघुजातक भाषाटीकास०	महि
संग्रहशिरोमणि	षट्पंचाशिका	विष्ण
मार्कंडेयपुराण मूल	जातकालंकारसटीक	शिव
दुर्गापाठमूल व सटीक	होरामकरन्द	भ
श्रीविष्णुभागवत	जातकाभरण	महा
श्रीमद् भागवतदशमस्कं·	पाराशरी संस्कृत भाषा	पर्व



अथ रसतरंगालिख्यते ।



छन्द चतुरानन ॥

शंकरजय गिरिजापतिशंकर करोदयामोहिंप
बरणौकहौं हरिकीरति कियोरहसब्रजमाहीं ॥
विधिसोंसुन्दर आनँदउरउपजावै । होतुमइष्टदेवफ
दासगुणगावै १ मृगछालापटमालालीन्हे फिरतर
कण्ठनाग भस्मांगबिभूषित औडमरूकरमाहीं
अर्धंगसंगगिरिसुतअंग अनंगदहिकीवै । भालबिशाल स

विज्ञापन॥

इस महीने अर्थात् अप्रिल सन् १८८६ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें बेंचने के लियेतय्यारहैं उनमें से कुछ इस सूचीपत्रमें लिखी हैं और उनका मोलभी बहुत किफ़ायत से घटाके नियत हुआहै औरव्यापारियों के लिये और भी सस्तीहोंगी जिनको व्यापारकीइच्छाहो वह मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ामलखनऊ हज़रतगंज के पतेसेख़तभेजकर क़ीमत का निर्णय करलें॥

नामकिताब

संस्कृत व भाषाटीका तथा संस्कृतही टीका सहित की पुस्तकें

लघुसिद्धांत कौमुदी
सिद्धान्तचंद्रिका
समासचक्र
रूपावली
निर्णयसिंधु
संध्योपासन पंचमहायज्ञ
संग्रहशिरोमणि
मार्कंडेयपुराण मूल
दुर्गापाठमूल व सटीक
श्रीविष्णुभागवत
श्रीमद् भागवतदशमस्कंध भाषाटीका सहित
अपराधभंजनस्तोत्र
...स्यकुलभास्कर
...यविनोद
...कसंहिता

नामकिताब

सख्यसरोजभास्कर
लीलावतीसंस्कृत
माधवनिदान
मुहूर्त्तचक्रदीपिका
मुहूर्त्तचिन्तामणिसटीक
शीघ्रबोधसटीक
मुहूर्त्तमार्त्तण्ड सटीक
मुहूर्त्तगणपति
मुहूर्त्तदीपक
बृहज्जातक सटीक
लघुजातक भाषाटीकास०
षट्पंचाशिका
जातकालंकारसटीक
होरामकरन्द
जातकाभरण
पाराशरी संस्कृत भाषा टीका सहित
लग्नचंद्रिका
अमरकोषप्रथमकांड
अमरकोषतीनोंकांड
गीतगोबिन्द आदर्श
कथाश्रीसत्यनारायण

नामकिताब

भगवतीगी०संस्कृतटी-स-
व्रतार्क
हंसराजनिदान
शार्ङ्गधरसंहिता
बृहत्संहिता
अवधयात्रा
परमार्थसार
सामुद्रिक
रघुवंश

संस्कृतउर्दूटीकास०

महिम्नस्तोत्र
विष्णुसहस्रनाम
शिवसहस्रनाम

भाषाइतिहास

महाभारत काशीनरेशकी पर्व पर्व भी मिलसक्ते हैं

तुलसीकृतरामायण

रामा०तु०कृ०टी०रामचरण
रामा०तु०कृ०टी०शुकदेव
रामायणमोटेअक्षरोंकी मूल हरएककांड भी हैं



अथ रसतरंगालिख्यते ॥

——※——

छन्दचतुरानन ॥

शंकरजय गिरिजापतिशंकर करोदयामोहिंपाहीं । तौमैं बरणिकहौं हरिकीरति कियोरहसब्रजमाहीं ॥ बनैचरित सब विधिसौंसुन्दर आनँदउरउपजावै । हौतुमइष्टदेवफलदायकलषन दासगुणगावै १ मृगछालापटमालालीन्हे फिरतरजतगिरिताहीं। कण्ठनाग भस्मांगबिभूषित औडमरूकरमाहीं ॥ धरिगिरिजा अरधंगगंगशिरभंग अनंगहिकीवै । भालबिशाल सुधानिधिशोभित मोहिंबरदानसोदीवै २ करीकृपाजापै तुमशंकरतबसोहरिचित लायो । तातेचरणकमलकरिबन्दन हौंआनँदअतिछायो ॥ वृन्दा वनबरसानोगोकुल मथुरारसलसरसायो । तेब्रजचन्दनन्दनन्दनको चाहों गुणगणगायो ३ सोरठा ॥ जयजगजननिउदारशैलसुत सुखमासदन । सौंरतलगैनबार लहनजुजनआनन्दघन४॥बरवै॥ मोपरकृपाकीजिये होइअनन्द । जगतमातुपदबन्दौंआनँदकन्द५ कवित्तघनाक्षरी ॥ कोकनददासनिकोसुखददिनेशवेश दाहनबिघनत्रिनपावकसोलोलमैं । प्रीतयुतध्यायेमुख अमलसुधाकरसो बाढ़त समुद्रउरआनँदकलोलमैं ॥ लषनेशमेरेजान अलिहैंअमान नाहिंदानमैंलोभान गानकरतअमोलमैं । वृन्दवृन्दअभिलाष हैकरिमलिंदपुंज गुंजतरहतगजकरणकपोलमैं ६ सुन्दरसुआप

शब्द अक्षरतरंगतुंग अर्थ कौ गँभीर लषनेअमतिधारती । बिबिध बिधानछन्दभेदकौ अपारताहै रसरतनाकरप्रभावभावसारती ॥ लक्षणसमक्षमच्छकक्षगुणगक्षताहै कबिपन्थमरयाद भूषणमहारती । दूषणकलंकधोइशुभतालखावध्वनिकविकुलवन्द आनंदांबुनिधिभारती ७ चहौंजोबड़ाई बन्दनीयतौरमेअजूके भारधरचाहौंतौभुखैयाअंगशेषके । चाहौंधनताई एककौनतौ धनेशसबैगुणगरुवाई चहौंतौपितुगनेशके । चाहौंरणजीतिआदिसिद्धिहूतौ दुरगेशपावनजोचाहौंतौ धरैयागंगकेशके। मनकरिवेशलषनश्यह देअरहैध्यानकेहमेश पदपंकजमहेशके ८ छन्दचतुरानन ॥ जपउलटेहूकरतकरत कबिकियोआदिकबिगाना । आधोजपतफणोशहिकोन्होंलषनलाभजगजाना ॥ सीधोजपतपशंभुकियतारकभावअभावमुदाना । रामनामसोनामीयुतनित सेवतजय हनुमाना ९ दोहा ॥ रूपरसिकरक्षानिपुण रसिकरूधाअरुनाम । रामदूतजयसिधिसदन प्रभुपदकरतप्रणाम १० जयगुरुज्ञानप्रदीपिका दीपतिदीपतिजासु । तमअगारसंसारयहि वरभिदरभबिलासु ११ राधाजूकरियेकृपा हौसन्ततनसुखदाति । बाधारहैननेकहूबसौहियेदिनराति १२ गौरिगणेशमहेशके चरणबन्दिलषनेश ॥ मतिमांगतमंगलमयोकरणिकाव्यपथवेश १३ राधाहरिकीरतिबिमल बाधाहरणिअपार । कछुवरणनचाहौंकरणजेहिंकियसुकविउचार १४ प्रकटभयेवसुदेवगृह चरितकियेव्रजआइ । तेनँदनन्दनरसिकगुण गावहु ग्रन्थबनाइ १५ छन्द रूपमाला ॥ काव्यरसहरिगुणरसिक कबिमाधुबूधमतिखानि । करणथप्पनऔउथप्पननरनिसमरथवानि।करौंवन्दनजोरिकरकरिकृपा शिशुसमजानि । ग्रन्थलहुसुधारिममसुखदानियहअनुमानि १६ रामप्रभुप्रदगामनौमी रामग्रन्थआरम्भु । सैवोनैसएकैससंबतकियोध्यावतशम्भु ॥विन्ध्यदेशसुदुर्गबांधवविश्वनाथनरेश। तातनैरघुराजराजित राजमंडलवेश १७ सैनपतिनृपविश्वनाथकेमित्रमंत्रीचारु । भयेहँ श्रीधरसुपांड़ेश्रेष्ठद्विजसरवारु ॥ तनयतिनकोनाममेरो अहैलषनप्रसाद । रसतरंगसुग्रन्थबिरचौंहरण

सकलबिशाद १८ दोहा ॥ भयेविश्ववारिधविषे विश्वनाथसुख सेतु । तिनकोकरतकवित्तमैं ग्रन्थसुमंगलहेतु १९ ॥ कवित्तघनाक्षरी श्लेषालंकार ॥ सुभगलकतिधारिमहिमाबिभूतिसारिअनुग विचारि केतेतारिभवकूपहैं । चारुयशभूषनअमानद्विजराजराजे विबुधसंगीतयंतजानेसुरभूपहैं ॥ बन्दनीयजगतबिराजेशुभआसनमैंलषनेअल्योंहीजीतेअरिहूं अनूपहैं । ध्यायरघुनाथकोबनाय गुणगाथभये भूपविश्वनाथविश्वनाथकेस्वरूपहैं २० दोहा॥ तनय विश्वनाथाधिपति राजतश्रीरघुराज । कुबलैसहितप्रदोषतम सोखकअखिलसमाज २१ कबित्तघनाक्षरी ॥ गुरुपितुमातुअनुशासनकेपालिबेकोबंधुप्रजालालिबेकोदीबेकोसुथान हैं । सुजन प्रवीनकबिपण्डित गुणीगणकोज्ञाताग्रुणदाताउरमोदवेप्रमानहैं ॥ खलकुलखंडिभुवमंडलमैमंडिवेको श्रुतिसत्पंथनृपनीतिकेनिधान हैं । कहिलषनेशभूपभूपमैअनूपगुणभूपरघुराज कितौरघुराजगानहैं २२ समतद्रूपकालंकार ॥ मुदितबसतसुरसंतान समाजसदा क्षांहक्षितिमंडलकोपालिबेसमाजहैं । सेवतविबुध गणपावतप्रमोदसदासम्पतिसमूहयुतसोहैथिरताजहैं ॥ कंचनसमूहतुचछलेखैदेतलषनेश कीरतिसुरापगासी संयुतसुसाजहैं । भाग्यखंडभारतकेसुभगबघेलखंड अचलसुमेरुसेनरेशरघुराज हैं २३ पुनः ॥ श्रीपतियसतहियेपावतनपारकोऊ परमगँभीर क्षितिमद्धिकरिछाज है । सेवतबिबुधगणपावतप्रमोदसदासम्पतिसमूहयुतसोहैथिरताजहै ॥ जीवनअपारकोअधारकरतार आप आपकोअधारततगहीसुखसाजहै । कहिलषनेशगुनेआवत अँदेशमोको सुधासिन्धुरूपबिन्धरूपरघुराजहै२४ समाभेदरूपक॥ राजैजितवार रघुराजनरनाहनिमैंचाहतपनाहसुखसाहहूतकेरहैं । विचरैंप्रफुल्लितप्रजानिपुंजबांधवराज दुष्टकीकहाहैवनराजहूजके रहैं ॥ वरणैकोपारलषनेशकृपाकोरजन पोतसमपाइदुखसिन्धु केथकेरहैं । जासुकरकंजमकरंददानपानकैकै हमसेमलिंद गुणगानमैंछकेरहैं २५ छन्दचौपैया ॥ शोभितरजधानीगुणगण खानी श्रीरघुराजसमाजे । बरणैकबिबानीपार न जानी उकुत

सिन्धुसमसाजै॥ हैंनगरघनेरेसुथलबड़ेरेप्रजापुंजछबिछावैं। चलि
श्रुतिपथभावैंहरिहिंरिझावैंबिबिधबिनोदबढ़ावैं २६ छबिचतुलित
सीमातहँपुरसीमा नृपतिबासभलभावै। गुनिजन्ममहीकोवर
नौटीकोकलिअघवृन्दनशावै॥ युगशैलजजङ्गम सरितासंगम
शोभितसरिसप्रयागै। मृत्युंजयवासी प्रभुकपलासी समकाशी
द्युतिजागै २७ शोभितहरिराधागुणनिअगाधा समवृन्दावनसोहैं।
जगदीशसुभद्रायुतबलिभद्रा पुरीवोहैसामोहैं॥ युतसीतारामै
परम प्रभामैपुरीअयोध्याजानो। ज्वालासुखसालीदीसतकाली
हिंगलाजतटमानो २८ श्रीमन्नारायणजनपारायणसुधासिन्धुमन
हारी। युतविबुधघनेरेसरिससुमेरे प्रभुगणेशसिधिकारी॥ त्यौं
सरस्वतीथरकरतबुद्धिबर सत्यलोकसमसाजै। बरणौंकिमि
तटतटजहंजनघटघट प्रभुवैकुण्ठबिराजै २९ सवैया॥ द्वितीयपद
जमक॥ कोबरणैधनजामैजवाहिर ज्योतिजगैनरनारिसमाजै।
शोभितभूषनरूपसुवाससुवाससुवासनिमैसुखसाजै॥ बांधवराज
केरीमासुथानकोयौंबरणैमतिमंगलकाजै। मुद्राविरंचिदियोजग
कै महिमंडल को सुखमंडलराजै ३० छन्दत्रिभंगी॥ सरितहु
सरवक्रैमधिसमचक्रैसमपुरशक्रैप्रभाकरै। जलदुर्गबनावैसहजसुहा
वैप्रजनिलोभावैरचतघरै॥ वरकोटकँगूरेहैंछबिपूरे सुभटगरूरे
युत्थसजैं। बहुनौवतिवज्जैंजनुघनगज्जैं दुज्जनलज्जैंलखत
भजैं ३१ सबलरसअगाराबनीबजारा द्वारनिद्वारासुजनरजैं।
कहुंहरियशगावैंकहूंपढ़ावैं कहूंबतावैंकर्मभजैं॥ कहुंशूरनि
जूहैविरचतव्यूहै सिखतफतूहभांतिसबै। कहुंअश्वसवारनि
सिखवतवारनि बरछीधारनिरीतफबै ३२ कहुंसुभटपदाती
अरिगणघाती अगणितभांतीगतिसाजैं। मारतबंदूकैंनेकनचूकैंबु-
ज्जनसूकैं सुअवाजैं॥ सीखतबहुबानैहाथ कृपानैढालविधानै
हियेलिखैं। कहुंपोलसमानै ढोलमहानैसुपहलवानैदाउँसिखैं ३३
कहुंसुभटउमंगैंमत्तमतंगै सिखवतजंगैंबिबिधगथै। सांड़िचि
निग्वावैंकहुंदौरावैं वाग्नलावैंनातपथै॥ कहुंस्यन्दनसोहैंलखै
बिमोहैं नहिंवसकोउहैंतनुधारी। जोहेचतरंगाबढ़ैउमंगाप्रज

निश्रभंगासुवकारी ३४ बिचबिचवरवासामकलसुपासा लसत
बिलासापथिकरहैं। बहुभटकबिपंडितगुनीअखंडित सौदहुमं-
डितबसततहैं॥कहुंनृपतिउकोलायुतहयपोला रहतसुशीलाज्ञान
चहैं। कहुंराजारविकहुंउमरावै सहितप्रभावैसेवकहैं ३५
चहुंदिशिआरामालसैंललामा देवनिधामाबिबिधबने। लतिका
लहरातीतरिवरपातीअगणितजातीकौनगने॥ गुंजैंअलिवृन्दा
छकिमकरन्दाकरतअनन्दामत्तमहां। कलरवखगबोलैंसुनतअ-
तोलैंमनबिनमोलैंबिकततहां ३६ हैंलसततड़ागातटचहुबागा
तहँजपजागासुजनकरैं। प्रफुलितअरविंदालसतमलिंदाजल
खगवृंदाविविधिचरैं॥ चलसुरभिवयारीअतिसुखकारी बहुपथ
चारीमुदितरहैं। थापेबहुदेवाकरिजनसेवा चहुँफललेवाकरततहैं
३७ ढिगसरिततड़ागावरवनबागा अतिअनुरागादानिलसैं। बहु
संतमहन्ताज्ञानलसंता लषतअनंतारूपवसैं॥ सुमिरैंगिरिधारी
अवधविहारी प्रभुभुजचारीचिह्नयुते। गिरिजागिरिजेशैतथागने
शै प्रभानिवशैमोदनुते ३८ तिनपगकरपरसेछबिदृगदरसे सरनै
सरसेविघननसै। तातेगुणगाऊंजेहिमतिपाऊं ग्रंथबनाऊंसुखद
लसै॥ सबकेहितकारीहैंतनधारी वेषमुरारीसुजनररैं। जलकंज
पत्रजिमिप्रगटेजग तिमिसरिसभूपनिमिचरितकरैं ३६ सोक्षक
महराजैंप्रजनिसमाजै जिनयशछाजैजगमाहीं। निजप्रभुकरिइष्टै
परमवरिष्टैसरिसवशिष्टैतपकाहीं॥ अतिक्रियाअचारब्रह्मवि-
चाराकरनप्रचारासमताहीं। जीवनिकोरक्षनकरिवोतक्षनहैतिन
लक्षनहरिपाहीं ४० विलसतजिनबासाविरतिबिलासाजनसब
आसामुदितरहैं। खगमृगपसुमीनावैरबिहीनाप्रेमअधीनाउदित
रहैं॥ होमनिकोधूमैंनभपैघूमैंतेजसुभूमैंकुंडधरैं। ब्रह्मस्वरसोरासु-
निचहुंओराषटऋतुमोरानृत्यकरैं ४१ पाछिलनिशियामैंउठिप्रति
धामैंहरिगुणगामैंध्यानधरैं। पुनिकरिअस्नानैहनतनिशानैसुध्वनि
षमानैभुवनभरैं॥ पुनिपूजनठानैसकलविधानैकरिसनमानैहियो
हरैं। तेहिप्रतिवसुयामाकृत्यललामासबगुणधामासुजनकरैं ४२
तिमिषटऋतुशीलामासनिमीलातिथीसुशीलाजौनिपरैं। तिन

उत्सवठानैंसहितविधानैंदानरुनानैंविविधिकरैं ॥ तीर्थनिचलि जाहींकहुंवनमाहींभजनकराहींप्रेमपगे। मुखगदगदबैनाजलझरि नैनागातसचैनारहतजगे ४३ दंडकलाछन्द ॥ जिमिसुरगनि समाजैंवासवराजैंतिमिमहिपालनिजालइतैं । सेवितदिनराती अगणितभांतीविलसतनृपरघुराजनितैं ॥ साहनिनिरवाहकदुष्टन दाहकलहिजायशकीचारुमितैं । छांड़ेकलिकालाअपनीचालादर- शैकृतयुगधारमितैं ४४ धीरजधरधरतासुधरमकरतासिद्धिरिद्धिप्रद बुद्धिलसैं। सत्यप्रणपालकअरिकुलघालकशासनपरमप्रसिद्धिवसैं करिसकलउपावैंप्रजनबसावैंपुण्यप्रेमव्रतकहिनपरैं। रघुराजम- हीपाजनुकुलदीपा नृपननीतिउपदेशकरैं ४५ अतिसुमतिनिकेता परमसचेताषटगुणऔपंचांगफवे। विद्यादसचारीशास्त्रहिधारीकर त्रिकालकोसुवनभवै ॥ सुन्दरकुलवलमैंविदसबकलमैंसोहतदल केमाहिँनवै । बोलतवरबैनापरमसचैनायोंसंगमंत्रीमित्रसवै ४६ जितअमरणधीगवुद्धिगँभीरास्वामिभक्तयशवन्तजगैं। कछुभीतन राखतसतिमुखभाषतआलसत्यागिसुकर्मपगैं॥ करविदितपराक्र- मजलथलमहँसमसूगारोजैगहिमर्दिहँसैं। इमिसुबलअगाराभट सरदारासेनापतिनृपसंगलसैं ४७ चहुंश्रुतिमतज्ञातानृपहितख्या तासत्यरूपवरवृत्तिठई । अँगसकलपवित्रादीननमित्रारिझवारे मतिमोदमई॥ब्राह्मणसुरमानैंहरिगुणगानैंषटविकारजितयज्ञकलै। इमिवृंदनिवृन्दानन्दअतिछन्दापविडतमविडतराज्यथलै४८ ज्ञाता अब्दार्थैंकाव्ययथार्थैंदेशनिबानीकोशतथा । जानतमनकेरोमति टगहेरीकरतकाव्यमनमाहिंकथा ॥ अतिकठिनसमस्यनिपूरतप- स्यनिइष्टदेवपदप्रीतिगहे । इमिसुकविउदारानृपदरबाराविलस तबुद्धिजहाजलहे ४९बहुगुणीसचायकहैंतिमिलायककोबरनेकवि पारलहैं। रथतरलतरंगामत्तमतंगाराजद्वारइनवृन्दरहैं ॥ बरसौ धसोहावैंषटऋतुभावैंचित्रादिकछविचित्तहरैं। बिरच्योबिसकर्मा सभासुधर्माकअसहींछबिदेखिपरैं ५० बहुहनतनिशानाकरत पयानाकहुंदेशनिरघुराजजबै ।फहरातपताकाघहरतचाकाहयगय गज्जनिचालफबै ॥ धुधुरिकीधाराधौरिअपाराछावतिअम्बरऔनि

पथै । दुज्जनभजिजाहींमिलसमाहौंछोड़िगढ़ीगढ़गर्बगथै ५१ दोहा ॥ लषनदासरघुराजकोकहौंकहांलगिभाव्य । सिवाजासुसमीपलहिहौंहूं बिरचतकाव्य ५२ अधमउधारनजगतमेंविलसत नामविचित्र । बन्दौंराधाहरिचरनबरनौचरितपवित्र ५३ छप्पै ॥ विबुधधरनिजनकाजजन्मबसुदेवसदनलिय । चलिगोकुलकहँ चाहिनन्दकहँअतिआनँददिय ॥ बजतढोलहैंतालबजतमिरदंग झंडिधुनि । बजततबलसारंगिलियेततथेइततथेइधुनि ॥ अति कियउतसवनरनारिसबगाननृत्यसुखमाखह्यो । हरिमृगमदके सरिकीचबरबजवीथिनवीथिनरह्यो ५४ ॥ दानवीरछप्पै ॥ सुजनसंगतनेबसनतोयमनतोषशुद्धकर । आत्मज्ञानकरजीव पूतजपयज्ञविप्रवर ॥ मुखचषश्रुतिशुचिकरतपरतहरिनाम रूपजस । धनपवित्रकरदानजानिलषनेअवेसअस ॥ तनपुलकि नंदसुखकंदलषिवृंदबंदलंक्रितगवै। मनिभूषनपटधनधान्यपशुदि यद्विजअरुयांचकसवै। ५५ धर्मवीरछप्पै ॥ पूजतब्राह्मनसाधुसुज नपंडितसुरठामै । करतपरमसनमानलोगयांचकजेआमै ॥ देत चाहिचितचोपगोपगोपीशिशुकन्यनि । खगमृगजलचरजीवसवै हनिजाहिंनहन्यनि ॥लषिपुत्रपुन्यप्रनठानिइमिअधिकअधिकवर्ध नचहत। बृजचंदनंदआनंदमढिधुवलोधुववैननिकहत ५६ दोहा यहिविधिवसिलसिकालकछुगयेदनकरनंद । तबआईबृजपूत नाकालकूटकरिफंद ५७ वीभतसरसकवित्तसवैया ॥ भूलसुरूपकु रूपभैपतनाछोटतेंकोसनिभारीबढ़ायो। छोंड़िपुकारिछोड़ायोहरी नहिंछोड्योयमंडघटाइकैभायो ॥ पीवतदूधहिप्रानपियोमृतकैपर लोटिलटपटआयो । सूंघतिमोयमोमतिघूमिथकोथहरैअंगबो लिनआयो ५८ वालरतिभावछंदमनोहरा ॥ पूतनापिछानीतहँ नँदरानीशुनअस्नानीसुविधानी। सबतियआनी।वहुभावनिठानीअँ गअँगवानीपढ़िगुनखानीरक्षानी ।यारँगपानी।हिंडोलवितानीतेहिं मुददानीझुलैसयानीगुनगानी । सोवतजानी ॥ विप्रनिसनमानी भीतिहिभानीमोदअघानीदुखहानी । प्रदपहिंचानी ५९ (राज रतिभावछंदचामर) नंदजाइकंसगेहनेहवसछाइकै ।भांतिभांति

भेटदैप्रसन्नपर्मपाइकै ॥ भेविदानिकेतकोसहेतभूपजानियो । बारबारवंदिकैअनंदिबासठानियो ६० । (छंदरामगीती)वसुदेव क्रियतहँभेटभेटिअनंददोउअधिकान । तनछूटफिरिजिमिप्राण पावतज्ञानगतजिमिज्ञान ॥ अँगपुलकपूरिप्रफुल्ललोचननलिन नीरवहाय । वरवधूपठायेगेहआयेगोपयुतबूजराय ६१ ॥ (इति सख्यरति भयानकरससवैया) देखतपूतनैपर्यतैठाढ़पुरीमैपरी वहुठौरदवायो । आनकदुंदुभिवैनटरैनठिकैकरिनंदद्याविसरायो॥ कंपबढ़ैनहिंबैनकढ़ैमखचित्तमढ़ैनबहींयहखायो । बाटविलोकै हमैनाटरैनटिढांढ़नठाढ़ेठगेसुधिपायो ६२ (शांतरसघनाक्षरी) लेतहींकरोंटपयपानहेतसकटपैमारिपगउलटिनवस्तुपष्टकीनेहैं। त्रिणावर्त्तआयोफेरिहरिकैअकाशचल्यो बांधिभुजपाशतासु प्राण हरिलीनेहैं ॥ फेरिसंगसखनिलैखेलतअनेकखेलचोरीदधिमाख- नकैमातुभीतिभीनेहैं । देखिकैचरित्रयोंबिचित्रनंदद्वैसुछंदकान्ह रकोत्यागिचित्तऔरपैनदीनेहैं ६३ (हासरसछंद) गोपीवधूएक जातेलैगेहधांधौदहोखातभागेसखागोल । आईयशोदैकहैहाल सोजानिभाष्योइतैलाउदेहौंदहीमोल ॥ सोलैचलीतौछलीकान्ह भेवेषताकेपियाकोतियानालष्योलोल । त्याईजबैपासुदेखेंद्या तासुमाईढिगेहासुफावैनहींबोल ६४ (वीररससवैया)वत्सचरा- वनकोगमनेवनोवत्सत्योंवत्सासुरैकोनिहारयो । जानिकैश्याम जनाइकैरामकोजंगउमंगभरेपगुधारयो ॥ मत्तमतंगसोगौनकै कौतुकैताहिभमाइकपित्थपछारयो । फूलेअँगैफरमंडलमैफिरे फव्वफरक्कभुजानिपसारयो ६५ (रौद्ररससवैया) वत्सासुरैवध्यो त्योंबकफारिमुरारिवसेबूजमैंविलसाते । लील्योअघासुरबालक वत्सविचारिकैकंसपटेउतपाते ॥ काटतदंतनिवोंठगयेभकुटीठटी भंगभौनैनभेराते । मारतताहिलगीनहिंवारजगीउरभारसँहारसु- हाते ६६(करुनारसछंदमहाभुजंगप्रयात)धसेकान्हकालीदहैसोसु नेतेसबैसुक्खभूलेगिरेनंदभूमे। तथागोपगोपीअचेतेलहैतैरुदैभानु जातोरह्वैपीरधूमै। लहैनाकहूं सोधभावैनहींबोधहैप्राणआरोधजो सोधघूमै॥ढरैनैनवारीहियोमोदमारीररैहाविहारीकपैंपायदूमै ६७

(अद्भुतरसघनाक्षरी) दरशदेखायदृगदीहदुखदूरिकीन्हीफनपै
सवारकढ़योफुंकरतकालीके । नृत्यतफननपुंजपौनहूं नपावैंवेग
पकरैंकहांलौंपारमुखविषमालीकें । थाकतभुजंगत्यौंउमंगअधि
कातोगातलातहीकैंघातकियोमृदुताफनालीके ॥ कोनेठयोहैको
जयोकैसेनंदनंदभयोठाढ़ोगोपालयोंचरित्रवनमालीके ६८पुनर॥
दावानलपानकै बचायोगौवैंग्वालसब पासीपासजायकैपिताको
पायल्यायोहै ।मबबूजवासिनबिकुण्ठदरशायोफेरिवासवकोभागदै
गोबर्धनैलखायोहै ॥ गिरिवरसातरोजछोगुनीकेछोरधारिछत्रकै
विहालबूजबूडतबचायोहै । देखियोंचरित्रवृन्दहरिकेसुनंदआदि
चकितअफललहुवैविचारैंकौनजायोहै ६८ दोहा ॥ यहिविधिनित
नवशिशुचरित कियगोकुलनंदनंद । वृद्धतरुणशिशुनारिनर डारि
प्रेमकेफन्द ७० छन्दगीतिका ॥ करिचीरहरणकदंबचढ़िकैप्रीति
अतिगोपिनठन्यो । मग गोकुलै दधिदानलीन्होकंसकोभय नहिं
गन्यो ।बहुभांतिआदिकखेलखेलतवत्सधेनुचराइकै॥हरिबसतवृन्दा
विपिनिविलसे अतिअनन्दबढ़ाइकै ७१ छन्दतोमर ॥ बहुभांति
करतविहार । संगगोपिकानिअपार ॥ यकसमयअश्वनिमास ।
भोपूर्णचन्द्रप्रकाश ७२ दोहा ॥ सबगोपिनकेमनभयोकरैंश्याम
संगकेलि । वृन्दावन महँजाइके हिलैमिलैं भुजमेलि ७३
छन्दभुजंगप्रयात ॥ यहोजानिकैश्यामलायाहियेते । बनीबाततौ
पूर्णआशै कियेते ॥ निशाख्वक्षवृन्दावनै कोसिधाये । तटै का
लिंदीकेसुयन्शोबजाये ७४ उठाहैतरंगैंजोबन्शोबजाई । तिहूं
लोकमेंयकदगोमंजुछाई ॥ थकेसूर्यचन्द्राग्रहौसर्वतारे । थकेलोक
लोकानकेगौनवारे ७५ थकेपौनडोलैंनवृक्षौपलासैं । थकेसर्वपक्षी
जहांतासुवासैं ॥ थकेहैंमृगाजीवजेहैं तहांहीं ॥ थकेवारिकेजीवजी
यकितनाहीं ७६ सबैवृक्षशाखाझुकैंश्यामआरैं । द्रवैंभूमिपाषाणहैं
जेकठोरैं ॥ थकेदेवतादैत्यगन्धर्वयक्षौ । विद्याधरौप्रेतपीशाच
रक्षौ७७ कवित्त ॥ दिव्यदिव्यभूषणवसनअंगरागजेतेसलिलसुगंध
जेसिंगार शुचिहोवेको । षटऋतुफूलफलफलता फवनिफैलमं-
दवेगसरिताउथलनीर पीवेको ॥ विविधि विधानबाजेकोविद

करमरंगरासकेविलासजेप्रकाशकरिलीवेको। जोगमायाप्रेरितसु-
नेतेबेनुवृन्दावनकल्पवृक्षभयोइन्हैंआदिसबदीवेको ७८ सोरठा॥
सुनिधुनिसबबृजबाम। अतिआनँदपुलकितभईं॥ हरिलीन्ह्यो
हियकाम। चलींतुरतवृन्दावनहिँ ७९ ॥ दोहा ॥ नहिंसम्हरततन
वसनहूंनहिंघरवारसम्हार। सुरतिनहींकुलकानिकीसूझतनंदकु-
मार चौपाई॥ कोउतियसुनेतुरतचलिजाती। विपिनिपन्थ
निशिकोउनसंघाती ८० काहूकोचिंतामतिमाती॥ चलीललीलै
सखीसंघाती ८१ कोउकेमनकसमिलिहहिँराती। कोउहियबिर
हबूड़िमुरझाती ८२ कंचनकलितललितदुतिसोहैं॥ मृगनैनीजो
हतमनमोहैं ८३ केहरिकटिपहिरेजेवरसब। धरतपांयफैलतम
ञोठफब ८४ बाजतभूषनविविधिसुहावन॥ चलीजाहिंजहँहैंम
नभावन८५ चंदमुखनिनागिनिसेकेसैं। फैलिरहेसम्हरैनसुवेसैं८६
विविधिविधानकरतमनजाती॥ पियेसनेहसुरामतिमाती ८७
कुंडलहलतचलतमगचंचल। तदपिगनैमगद्रोपदिश्रंचल ८८
कोउकाहूकहंपरिखतनाहीं॥ मगबहुकुमगचलीनिशिजाहीं ८९
छंदगीतिका॥ निशिजातगोपिनजानिगोपनसकलहियविनचेत
हैं। विपरीतभूषनवसनपहिरेबँधीकेवलहेतहैं॥ तबकियनेवार
नदेवदेवनिनाथतातनिआदिकै। नहिंरुकींतृणसममानितिनको
चलींभजिहठिबादिकै ९० कोउकानितजिकोउबानितजिकोउपा
नितजिझझकोरिकै॥ कोउकाजतजिकोउसाजतजिकोउलाजत
जितृणतोरिकै। कोउदारपकरिश्रगारगोपनिबेड़िदीनकेवारहै॥
फंदिगईंतबतिनछईदुखमनदईनंदकुमारहै ९१ दृगमूंदिनटवर
रूपकोकरिभावनाहमजाइकै। दोउभुजपसारिकलिंदिकुंजनिले
तअंकलगाइकै॥ असभावनाकेकरतमिटिगेपुण्यपापशरीरके।
भवबंधतनतजिदिव्यवपुलहिगईढ़िगबलवीरके ९२ दोहा॥ सु-
मिरतअरिहुप्रकारहरिहरतखदसंसार। कछुनआचरजगोपिकाभ
ईंजारमिलिपार ९३ पहुंचीसबबृजसुन्दरीनंदनँदनकेपास॥ क
मलबदनसुखमासदनदेखहिंसहितहुलास ९४ छंदचतुरानन॥
कोहौकौनकहांतुमबसतीकहौआपनोनामा। हमतुमकोपहिचा

नतनाहींकहांरहींलअबामा॥ अलसुरतिहमदेखीनाहींसुन्दरिना रिललामा। चंद्रबदनिमृगलोचनिगोरीआईइतकेहिकामा।९५बंसी धुनिसुनिभई बावरीलखोरूपघनश्यामा॥ कोउसुनिग्रीरपहुमि मेंलोटतिकोउजियकोपतकामा। काहूकोमनछोभितुनिकैमुखभो जैसोतामा।कोऊझकिकेउठतिगिरतिपुनिआई हमबृजबामा।९६हा हाहेतपुकारतिवनवनहेरतिहैंवनमाली। कोउकाहूकहँलखतन प्यारेहोतुमपूरेजाली॥ काहूकोकोउसुनतनबैननिहमइतआइ खडीहैं। वंशीवटतटफाटोदुपटानैननिमोदमडीहैं ९७ कांटनकें झौरनमेंआलीकाहेकियोविहाला॥ योंहमजानतिहियेआपनेतु मखेल्योहैख्याला। छूटोधामकामसबहमरोभईं विकलवनबाला॥ करौहेतहमसोंनँदनंदननहींधरैंकरमाला ९८ ऊबतिहैंडूबतिपुनि ऊबतिऊबिकैलेतिउसाला। बीचधारमेंबहतजियहैखैंचिलेहुनँद लाला॥ जोहमकहीहकीकतिअपनीसोअबकीजैख्याला। बिरह समुद्रकेबीचपरीहैंपियेबिषमबिषप्याला।९९यहसुनिमोहनहँसिकै बोलेघरहिजाहुसबबाला। कौनबातहमऐसीकोन्हीजोतुमभई बिहाला। लोकरीतिकुलधर्मछोडिकैसबबौरीहोइआई। खीझत होइहैंमातुपितापतिबालकदूधललाई १०० कठिनधर्महैपतिब्रत केरोउनकोसेवनकीजै। मुदितअनेककेलिकरिरचनाप्रेमअमीरस पोजै॥ नितचितचासबढायआसुहितसुभगपंथकोलीजै॥ सब बिधिहेलमेलकरिसौगुणचित्ततासुसुखदीजै१०१हमवनफिरतरैनि दिनडोलतचहहुहमैंतुमलीनो। जियतेहायकरतिहौकाहेकहती वैनअधीनो॥ काहेकोयहहमचितलावतअहैंउदासप्रवीनो॥ कौन नफाहितहियेजानिकैमृदुचितहमपैदीनो१०२जोतुमकहौभजैतुम कोजगहमहुंप्रीतिकरिआई। तौकरिकामविहारकामिनीहैदुख दानिसदाई॥ कीन्हेदरअध्यानगुणगानैधर्मकर्मसमुदाई। रीझतहैं हमजाइकरौसोइकरिचितसुद्धलगाई१०३ दोहा॥ बोलीसबबृज सुन्दरीसुनिमोहनकेबैन। कहांसिखेयहचातुरीचितलैकरतअचैन १०४ पुनःछंदचतुरानन॥ हमयेबातएकनहिंमानैंरँगीप्रेमकेरंगी। योंपतंग औदीपसमागमबरणौंप्रीतियकंगी॥ अबक्षणहू नहिं

छांड़हिंलालनरहैंतुम्हारेसंगी ॥ क्रोधगजाइरैनिदिनभ्रमिहैक्योंभा छककोंग्यंगी१०५ जबतेसूरतिलखीलालयहवानिकवनीत्रिभंगी । डारोतुम्हरहाथतबतेंभइअकाथकीचंगी ॥ तुमकोतनमनदीन्हों मोहनहेश्यामलरँगरंगी।हमपैकृपाकरोगुनिप्यारेनेहकबहुंनहिंसं- गी१०६ सुनेपुराणवेदइतिहासनिआपुनिकटनहिंआई॥ पैयहसुनें रावरीपदरतिलोहतजीवसदाई॥ ताहिछोड़ाइहमहिंदरसावतघर बारनिसेवकाई।काटतनाहकलालनेहतरुकरिकुठारनिठुराई१०७ सोरठा॥ असमुनितिनकेबैनबिहँसिकह्योनंदलालतब । चितेकृपा करिनैनकरहुकछुकनहिंसोचहिय१०८छन्दरूपमाला ॥ जोकियो तुमनेनेहहमपैकर्ममनअरुबैन।करैंगेजोचाहतुम्हरीदेहिंगेअतिचै न॥ करौसबबिधिकेलिहमसोंआदकायहरैन । दुखितअबनहिंहो हुप्यारीहियसतावतमैन१०९ छन्दभुजंगप्रयात सुन्योबैनयोंकान्ह केमोदबामा । लिख्योचारुशोलेमुखैमंजुकामा॥चहूंओरहैमध्यकै नंदनन्दे ।मनोसर्वतारालियेमध्यचन्दै ११०छन्दमनोहरा॥तहँगोप कुमारीअतिछबिवारीतनद्युतिधारी।चम्पकली । तेहिरासथली ॥ आननद्युतिचन्दैदृगअरबिन्देरतिमदनिन्देभांतिभली । मनमोहि चली ॥ लचकैकटिछीनोपरमप्रवीनोगहिकरलीनोदलछै । मृदु बोरबलै ॥ करिनैनलजीलेअतिरसीलेचितैरसीलेकरहिंकलै । जितिछैलछलै १११ छन्दचतुरानन ॥ पीताम्बरकटिपेंटाराजित गरबैजंतीमालललै । मुकुटएककरलसतछबीलोमुरलीमुखकर बीचतसै ॥ कुंजनलताछटाछबिछावतयोंकिअवमनमाहँबसैं । नृ- त्यतगानकरतसबगोपीमंडलरहसकोकमरकसैं ११२ यमुनातट कोमलरजराजितगोपिनलैरँगतुरतगये ।त्रिविधिसमीरबहतअति सुंदरकरिगलबाहींरमतभये॥ आलिंगनचुंबनकरिविहँसतनीं- वीकुचकरहाथगहे । मर्दनखंडननखरददानहिंतिनहियकामकला उमहे११३ दोहा॥ लखिअतिमृदुलमनोहरीसूरतिसूरतिश्याम। धन्यभागनिजजीवकोगनतभईसबबाम११४गोपिनमदबाढ्योत- हाँहैंहमरेवशलाल । तिनकौतुकदेखनबिरहकियचितमदनगो- पाल ॥ अंतर्द्धानभयेतहांविकलभईसबबाल । विहवलहवेढूढ़ें

बिपिनिछिपिनरहेकंदुलाल११५ छंदरूपमाला॥दुखितभईसबगोपिकाहियबढ़ोदुःखप्रचंड। द्रवनिनोंझरनाग्लागोबढ़ोशोचउमंड॥ चलतपद्दिकँपतहियरोगिरहिंमहिजिमिदंड। करिबिनाजिमिविकलकरिणीबढ़ोप्रेमप्रचंड११६ छन्दचतुरानन॥जेहिविधिहेरतमदनमनोहरतेहिविधिहेरहिंप्यारो। मंदचलनिमृदुकानिमनोहरगहिचितवनिअनियारो॥ बोलनिमिलनिमिलाइसबैविधिहौंठिचलींब्रजनारी। सालतिहियेकरालअनीजनुबिरहाहर्नीकटारी११७ मूरतिश्यामलहियेधरोहैंहँसिबोलीब्रजनारी। कसकेतजिहैंहमकोप्यारसूरतिकोबलिहारी॥ हमहरिहैंहरिहमहैंग्वालहैंसुशीलबनमाली॥ सबमिलिबनमेंजाइगानकरिहेरहिंजिमिमतवाली ११८ दोहा॥ व्यापितनभसमजगतमेंघटघटप्रमतनुरारि। असबिचारिपूछनलगींवृक्षनिप्रतिमबनारि ११९ बासुदेवतुमदेवहौवरदायकवरदेउ।मनकोहरिहरिजातभेमिलैतिन्हैंयंमलेउ१२० छन्दनाराच॥ सुवृक्षबालपूछिप्लक्षलालकोकहूंलखी। बियोगिनीफिरैंबिहालबालछूटहोंझखी॥ अशोकशोकतूहरोकदम्बबेलभूरुहो। कुरौसुनागचंपकौहियेहिकामधरुहो १२१ दोहा॥ तुलसीतूहरिकहुंलखेअनिशयजिनकोप्यारि॥ पियतमधपमधुमंजरीतदपिलेतगिरधारि १२२यहिविधिसोंपूछनलगींसबैवृक्षसोंबाम। जातलख्योकोउश्यामकोकरिहमकोबसकाम १२३ होइमानिनीजोतियालखतलालतेहिंराल।छूटतमानिलेबँधैंकठिनप्रेमकेजाल १२४ छन्दचतुरानन॥ सोअबबिछुरिगयेमनमें हनकोअबकरैसहाई। करोकरमनोविधिलिखिदीन्हासमुझिमनझिपछिताई॥ श्यामश्यामकरिटेरहिंव्याकुलजियकोबिरहधधेरी। उठतकराहिआहिकरिहियरोउपजीपीरघनेरी १२५ पीवहिपीयपपीहाटेरैंऐसोबिनउचारो। गोपीबसनछूटलटलोयनरह्योनबपुषसँभारो॥ मिलहुआनिगिरिधारीहमकोहोइतरगबिहारो।प्यारोथकयोजीवअबबूड़तहाहाकरतनिहारो १२६ ज्योंचकोरकोचन्दवोरकीलगीरहतिजियआशा। मूरतिमृदुलमनोहरछबिकीह्योंइननैननिप्यासा॥ गोपिनकंठसूखअतिकंपितमुखतेबैननभाषा

बिकलभईं सबजानिकिंकरीकरहुश्रोककरनाथा १२७ छन्दहरि गीतिका ॥ लगींकरनपुनि सुन्दरीसबचरितसुभगगोबिन्दके। गो रक्षगोरसचोरआदिकहनदुष्टनिवृन्दके ॥ कछुऔरचलिपदअंक देख्योएकएकनिसौंकहैं। ध्वजकंजअंकुशकुलिशउपटेअवशिहरि पदयेअहैं १२८ यहिपंथह्वैकढ़िगयेआलीचलौआसुहिंपाइहैं। तहँ जाइदेख्योनारिपदयुतचिह्नपंथसुहाइहैं ॥ सबकहैंकेहिधौंल्याइ हमहिंछपाइरहेलुकाइहैं। सुखलूटिसबकोदियोताकोधन्यभाग्य सुहाइहैं १२९ नहिंउचितकियनँदलालयेसबबालकोनबिहालहैं। यहिकालतजिनिजचालदीन्हसुहागएकहिभालहैं ॥ महिचिह्न हारबिहारकेउद्दीपनेसंचारहैं। भयकामिनीतेहियामिनीअभिरा- मिनीदुखसारहैं१३०कबित्तघनाक्षरी॥हरिहरिबालकोजोबालनि केजालतेलैअंतरहिह्वैकैभलेबनमेंबिहारच्योहै। तोरितोरिकुसुम कलीनरच्योभूषणनिप्रीति पगिषोड़शसिंगारनिसिंगारच्योहै॥मान बथाकमिलिकंधचढ़िबेसोकह्योभले चढ़ोचढ़तमैंसोऊनानिहा- रच्योहै। भूमिपरीबिकलबिलापतिपरीसोपरीपायोसबभेदतहां गोपिनलिधारच्योहै १३१ चौपाई ॥ सुनिसबतेहिमुखगोपिन वृन्दा। कियअतिकान्हबानकीनिन्दा १३२ लैपुनितेहिसँग सबमिलिबामा। खोजिअँजोरहेरचौंघनश्यामा १३३ देखिसघन बनमनपछिताहीं। गुणतभईंहोइहैंइतनाहीं १३४ कोटिमयंक बदनउजियारी। बनहैअंधकारयहभारी १३५ हेरिथकीं हेरेनहिं पैहैं। पैहैंजबैतासुमनभैहैं १३६ असगुणिलौटिकलिंदीतीरा। आईं सबब्रजबालअधीरा १३७ त्रिबिधिभांतिरचिपदसमुदाई। हरिगुणआपविनयमयगाई १३८ सुनतअजहुंजेहिगोपिनगीता। होतनरनउरप्रेमपुनीता१३९गोपीवाचछंदमनोहराइषुअनुप्रास॥ जयनन्ददुलारेसबहितकारेब्रजरखवारेप्रणवारे। दानवदारे॥ अँग श्यामसँवारेनैनसुखारेगुणनिअपारेबिस्तारे। रिझवनहारे॥पीतां बरधारेमालसुढारेलखतबिहारेभवभारे। चितआगारे।।अबप्राण हमारेह्वैतुमन्यारेबिकलबिचारेबिकरारे। दरशौप्यारे १४० पुनः बीप्साअनुप्रास ॥ कंटकनिफिराईकुमगपराईसुधिबिसराईपिय

राई। करिनिठुराई ॥ बिनतुमनरहाईकरहुसोहाईकुमतिबि-
हाईजेहिहाई। असबिरहाई ॥ बहुसदननिकाईकरतबकाईह
महिंबिकाईअधिकाई। यहनलुकाई ॥ असकीन्हअभाईसोउ
भलभाईअबहुँसुभाईचितभाई। बनबनभाई १४१ पुनरमालानु
प्रास॥कालीविषजलसोअरुबकछलसोअघासुरलसोंअहिकलसो
दावानलसो॥ बासवकेकोपितब्रजभोलोपिततबतुमचोपितनिज
बलसो। रक्ष्योभलसो ॥ इमिबहुभयभंजनहौमनरंजनजेदृग
कंजनयहररसो। करुणादरसो॥ बिरहानलझरसोजरतबगरसो
गोपिनहरसोकरपरसो। आनँदबरसो १४२ (पुनरसुवर्तुलानु
प्रास) बसतेसबकेहियरतिगतिकेप्रियदुखहरकेलियअवतारे।
लखिभवभारे॥ हौधरनसीमकेसिन्धुथोलकेअविदसीखकेकरतारे
डरथिरसारे॥ सेवकनिनिशोकोकीर्तिबिलोकीहरहुब्रिमोकीजोडर
है। जोजगगुरहै॥ हेसाहबगोपुरपालकगोधुरयौंहमगोकुरगोथुरहैं
नहिंगोसुरहैं १४३ पुनरवृत्यानुप्रास ॥ जयजयतिकमलकरजयक
मलाकरकमलाउरकरछबिसरसै।अँगअंगबसै॥ जयआपकथाननि
जयगतिध्याननिकामप्रदाननिपददरसै। पदप्रेमतसै ॥ जेहिअमी
पियायोबिषचिखवायोतेहिकहँभायोनाथकहो। यदुनाथअहो॥
हौगर्बप्रहारकगर्बसुभारकबिरहबिदारकहोहुयहो। चितपाहि
चहो १४४ दोहा ॥ इमितरसेदरशनहरिजलबरसेतियनैन। भ-
जिधीरजगोलाजसँगबिकलभइँगतबैन १४५ प्रकटभयेनँदलाल
तबमृतकनिअमीसमान। देखतहोंसबडहडहींसुजलसुखत
जिमिधान १४६ हरनहेतबिरहाबिथाल्यायमुनढिगलाल।नीके
चषईहाबचनकियनिहालसबबाल १४७ बिरहतापश्रमतेबिगत
भईंसबैब्रजबाल। दृगनचाइमुखविहँसितबबोलींबचनरसाल
१४८ गोपीवाचसवैया ॥ हैंजगमेंजनऐसोकोईजोभजैतेहिआपु
भजैंमनलाई। कोईदयालुयोंहोतकृपालुबिनाभजेआपुभजैहैंस-
दाई ॥ होतकोईनिरदैयौभजेहू बिनाभजेआपुभजैंनाकन्हाई।हैं
इनमेंकिननीकेकहौलषनेअजठाकोकरैसोबनाई १४९ श्रीकृष्ण
वाच दोह ॥ भजतपरस्परजेप्रियातिनमेंनहिंकछुप्रीति। निज

स्वारथकोहेतहैबांधवतिनकीरीति १५० बिनहुभजेजेभजतहैंति नकोप्रेमप्रमान। करुणाकरपितु तुसमहैनहिंदोषमलान १५१ भजेहुभजैंनहिंजेपुरुषते जगचारिप्रकार। द्वैविधिसंतग्रारु तहैकरत निगमनिरधार १५२संतसोप्रथमसमाधिरततनसुखमतिनहिंठाम दूजेपूरणकामहैंजिनकाहूसोंकाम १५३ ग्रहैंग्रसन्तकृतघ्नएकजो नमानउपकार। तेहिताजोगुणिलोजियेनिन्दितजगतमँझार१५४ चौथोगुणद्रोहीग्रसतभजैनभजनेहार। सबपैग्रतिकोहारहैतेहि लक्षणसंसार १५५ छन्दचतुरानन॥ सुनिइमिबैननन्दनंदनके मुसक्यानीतबबामा। हियकोहेतुहेरिहँसिबोलेबहुरिबचनघन श्यामा॥ मोहिंजौथाजनिजानेउप्यारीभजेभजौंजोनाहीं॥ सोजेहि धरौंध्यानउरग्रंतरप्रेमबढ़ैमोहिंपाहीं १५६ ज्योंग्रधनीबहुसंपति पावैतासुनाशपुनिहोई। तौताकीसुधिभूलतिनाहींक्षुधापियासहि खोई। तुमसबमोहितलोकवेदगतिजातिसबैबिसराई॥ हौंग्रन्त रहितभयोहेतुयहिप्रीतिग्रछेहसुहाई १५७ तातेकरौंनकोपग्रापु पैग्रतिगुणिप्रीतहमारी। रहौंजोकोटिबर्षजगतबहूं तुमहिंउऋण नहिंप्यारी॥तुम्हरीप्रीतिएकहमपैहैसबपैप्रीतिहमारी॥प्रतिउपकार तूलनहिंहैहैकबहुंगुणतयहहारी।१५८ दोहा॥ करहुरासममसंग ग्रबदरहुबिथाकरभौन।योंकहिग्रलिनबढ़ाइसुखरहेकृष्णगहिमौ न १५९लसततारिकातियनमेंइंदुबढ़ायहुलास। वन्दिचरणनंदन न्दकेवरणौंरासबिलास१६०छन्दगीतका॥सविलासमाधववचनमा धुरसुनतसिगरीगोपिका।ह्वैपूर्णसबमनकामजोत्योकामसमह्वैचोपि का॥ ग्रतिबारबारसराहिबिरहात्यागिलसैंविनोदिनी। जिमित पततरणिप्रतापखिशुरागिकरपरतिकौमोदिनी१६१तबउठ्योवृंदा वनविलासबिनबालनसोंकह्यो। सबचलहुकरियेरासखेहुहुलास लीवेजोचह्यो॥सुनिरासहितचितचायउठिसंगचलीनन्दकुमारहैं। जिमिजातयामिनिनाथकेसँगसकलतारकतारहैं १६२ यमुनापुलि नछबिछावनोबृजतियनिहियहुलसावनो। तहँ ग्रावनोकरिलैन लाग्योरासरसमनभावनो॥ यकएककरगहेगोपिकामधिमण्डली नंदलालहैं।मणिग्रालग्रालविशालज्यों देवद्रुमकीमालहैं १६३

बहुभांतिराजैंमएडलीमनअलिनमोहनपासहै। हमहींमिलैंनंद-
लालसोंयकयहैतिनकीत्र्यासहैं॥ यहजानिरूपअनेककैएकएकढिग
हरिसोहहीं। बिचबीचकंचनवेलिवृक्षत मालज्योंमनमोहहीं
दोहा॥ तहँमान्योप्यारीसबैश्यामहमैंढिगमाहिं। मिलिसबमोह-
नमोहनीकरिलीन्हींगलबाहिं १६४ अथसांगीतछन्दमहाबन्धा॥
लहलरुककरितत्रिकटिकथेईतत्त्रिकत्रिकत्रिकथेईथेई। धुमकि
टधिलांगधिलांगग्गतिहिधिधिकिटिथत्ताक्रांतस्थेई॥ क्रांधाक्रांगुनु
नुनुइमिसदद्दरथतरग्गउमग्गज्जेई। रासरससमयविलाससरसब
विधिआसरस्यरतिअकाशरुगेई १६५ तहांमृदंगग्मुरचंगग्गहिबी-
नउपंगग्सुजलतरंगै। डफकरनाललऔकरताललटोलतवल्लरसा-
रिकसंगै॥ पंटहसरोदद्दाराडिंडिमतासूरत्तुरहीतिमिश्रगैं।बज्ज
ज्जतिकियसज्जज्युवतिनसप्तस्वरवनवननिप्रसंगै १६६ कवित्व-
घनाक्षरी॥ रासकेविलासकोविलोकनहुलासभरे बाजेसुनिविविध
बिमानव्योमआयेहैं। देविनसमेतदेवबाजनेबजावैंत्यांहोंलखि
ब्रजबामैंघनश्यामैंमोदपायेहैं॥ पतिकीनमतिकोनगतिकोसम्हार
सोहीमोहीसुरदारजोहीमनकोलोभायेहैं। हरिकोसुयशगावैंवरषि
प्रसूनछावैंभावैंरासआवैंलषनेशवेशगायेहैं १६७ पायलबजाय
चायलैलैगतिनाचैंकोईकंकणहूकिंकिणिकीत्योंहींझनकारीहै।
गायशुभरागसानुरागदरशावैंभायछायकैमधुरसुरमुनिमनहारीहै।
प्यारीवीचप्यारोअरुप्यारेबीचप्यारीलसैंलषनेशताकी यहउपमा
विचारीहै॥ पुष्परागमालमानोंबीचबीचनीलमणिरचिकैसुभग
वृन्दाविपिनिसिंगारीहै १६८ घूंघुरकोघोरकोऊभेदबहुतेरालेहिं
फेरीदैउडावैंपटभावनमैंभामिनी। मंजुमुसक्यायकैलजायकोऊ
नावैंनैनभृकुटीनचावैंकोऊतानअभिरामिनी॥ लौटतअलखकटि
अंचलवोढ़ावैंकान्हैंकुंडलकपोललोलअलकालिगामिनी।चंचलअ-
मितलसैश्यामअरुश्यामापासमानोंवनेघन औदमकैंघनीदामिनी
१६९ छन्दचतुराननन॥ कोईतालदैकहततत्थैयातेहीतालहरिनाचैं।
अतिऊंचेस्वरगावहिंप्यारीमनभावनमनराचैं॥ विश्वसबैतबस्वरमैं
ह्वैगोगोपिनगावतमाहीं। क्षणक्षणमिलहिंश्यामकोतिनगतिवरणि

धारकोउनाहीं १७० तानलेतकहुंकान्हहरषिकरिपंचमत्रिविधि सोहावैं। तहँलैतानहरषिकोउप्यारीटीपहिवेगिलगावैं॥ ताहिसराहतसुनिकोउप्यारीलेतिटीपहूंटीपैं। तमसमकोउनगाइहैकहि तेहिलेतलाइहरिहीपैं १७१ कोऊश्रमितधरिहैंश्यामकरकोउ हियरेलगिजाहीं। कोऊधरेहरिकंधकंधनिजधातहरिहिंकोउबाहीं॥ युतउछाहकोउहरिभुजचमैंकोउनाचतगतिलेहीं। सखीकोऊगति लतिचरणनजोनिरतैंकुंडलतेहीं १७२ कोउकरिभावकपोललाल केदेतिकपोलमिलाई। निजमुखकीबीरीब्रजभूषणतेहिंजनुअमिय खवाई॥ कोउकरपकरिप्राणप्रीतमकोनिजउरमाहँलगावैं। सम रसमगहितविजयथंभधिरमनहुंसरोजचढ़ावैं १७३ भावअनेक करैंप्रतिकुंजनिकौनकहैसुखतिनको। करिगलबाहींनाचतगावत तजततनक्षणहरिजिनको॥ बजैंकिंकिणीकंकणनपुरछायरहीझन- कारी। नीवीशिथिलस्वेदसीकरतनलसैंधिंगारधिंगारी १७४ कुंडलिया॥ मुकुतावलिबकमेघकचताटंकैंतड़िताति। श्रमसी- करवरषैंसलिलब्रजतियवर्षाभांति॥ ब्रजतियवर्षाभांति शोभ कबहूंनहिंपावैं। राजहंसकरिहीन शोरकोकिलनाहिँभावैं॥ राजहंसहरिसंगमंजुगंजरंजनजुकता। वन्दनइंदुबधूनिझनक झिल्लीगणमुक्ता १७५ दृगखंजनमुखअमलशशिहीरहारउड़वाल। चितचातकहरिस्वातिछहिलसैंशरदऋतुबाल॥ लसैंशरदऋतु बालविपिनिनिशिस्वच्छबिमोहैं। सुथलबेलितरु फूलकंजकैरव थलजोहैं॥ सुथलवेलिवरप्रीतिवोइकरिश्रमि मनरंजन। हरि लेतीहरिहीयनेकुहेरतदृगखंजन १७६ माखीपकिपीरेबसनहरित हरितदरसन्त। विरहतपनिगतमोरसुखब्रजतियसमहेमन्त॥ ब्रजतियसमहेमंतदाहअतिरैनिबनावैं। पाननियुतरुचितूलफूल सरउरउपजावैं॥ पाननिअतिसुखतूलदेवनमेंवनमाली। सी- कररुवेदतुषारविन्दुविलसैंसुखमाली १७७ गानैंनृत्युहुंरंगयुत मनकरिसरसकाम। करहिंकन्तआँकम्पसचिशिशिरसरिस ब्रजवाम॥ शिशिरसरिसब्रजवामनिरखिघनश्यामनलाजैं। गहिलेतीपटपीतप्रीतिपगिचूनरिसाजैं॥ गहिलेतीवनमालबाल

निजभूषणठानैं । निरखिसुरतिविपरीतिसाजकविकुलमतिगानै
१७८ अलिगणकुसुमसमूहयुतपिकरववचनलसन्त । करपल्लव
निरसालफविब्रजतियवनोबसन्त ॥ ब्रजतियवनोबसन्तसरस
सौरभसंगसोहैं । तरुणअरुणवरवेलिकेलिथलसुरमनमो हैं ॥
तरुणअसणपतितापनेकुतापितनहिंढिगतन । पियतपुंजमकरंद
कुंजगुंजतशुभअलिगन १७९ ॥ फूलेवरपंकजअरुनन्नृत्यतपौन
झकोर । रविटीकोहरविरहजलतियग्रीषमतेहिंठौर ॥ तिय
ग्रीषमतेहिंठौरदूरिकरिहरिहिंझावैं । सुखअमितपनिबृताइ
नृत्यपटपौनडोलावैं॥सुखअमिरविगुनिठानिकुंजखसखाननितूले।
लैंचलिवेकीचाहवासअँगआनँदफूले १८० छन्दरूपमाला ॥ प्राय
पीतमलखिवतावैंप्रियाभावअनेक । गाइकीरतिविषदकरतीश्वेत
रँगजगएक ॥ छुटोबेणीफूलफैलतदेहकोनहिंभान । लेततिनफे
तानगतिकोनचतकान्हसुजान १८१ होलगावैंलालआलीलालहूं
तिनकाहिं । कैकटाक्षनिमधविहँसनिपरसपरजितिजाहिं ॥बाल
लालनिमध्यसोहैलालबालनिजाल । प्रीतिऔशृंगारबहुतनधरि
मिलैंजनुहाल १८२ छुटोबेणीशिथिलनीबीअंचलौफहरात ।
गिरैंभूषणफूलमालहुभूलहैनिजगात ॥ चाहिकविब्रजचन्द्रपक-
टकचहैंसरिसचकोर । पानकैमदप्रेममतितियविचरतीजिमिमोर
१८३ भूलिगैमतिसुरनिकी सुरतियनिकोपतिधर्म । सहित
ताराचन्दहूंशिशुमारचक्रहुकर्म ॥ भईपूणीरातितेहितेदीर्घअति
अयरूप । कृष्णप्रभुप्रतिगोपिकासुखदेनलागअनूप १८४ कवित्त
घनाक्षरी ॥ जेनोब्रजबामतेतीकुंजनिललामश्यामजाइकैसकाम
तिनकामपरिवानेहैं । अमितनिहारिचारुपीतपटकरधारिपोंछिकै
प्रस्वेदवारिऔबयारिकीनेहैं ॥ कौनकविएतोलखनैब्रजनारिन
कीकहिकैकलानि कीर्तिपारकहँलीनेहैं । करिअनुरागबड़भाग
जिनरमाकन्तकन्तकरिलीने गुणगन्तनन्तभीनेहैं १८५ कुण्डल
प्रभासीगण्डमण्डलविलासी लोलपाटीहैंघटासीदृगमैनअरगाँसी
हैं। चन्द्रकीकलासीकमलासीचपलासी लसैंहासीमोहपासीमनौ
पियमनफाँसोहै॥कीरतिसुधासीगाइनासोदुखरासीसबैकलपल-

तासीमोदमहिमाप्रकासीहैं । लषनेभष्यासीप्रेमखाँसीभांतिपीकै दियोबन्दाबनबासीसुखरासीसबैदासीहैं १८६ दोहा ॥ जोकबि सुखद त्रिलोकमें हावभावरससार ॥ सोसबपायोगोपिका लहि बृजराजकुमार १८७ नृत्यगानरसकलनिमें सबघनश्यामपि-यारि ॥ मनमोहनमनमोहनो तहँबृषभानकुमारि १८८ बासुदेव जेहिबशबसे गोपिनसँगरतिरंग ॥ तेहिकलानिकोबिदकछुवरणौ पायप्रसंग १८६ रतिबिपरीतिरुअन्तरति बहिरतिसकलश्रृँगारि। कोककलासोशोभिजै श्रीवृषभानकुमारि १६० बढ़ैतरंगसमुद्रउर चषचकोरमुदकारि ॥चन्द्रोदयसोशोभिजै श्रीवृषभानकुमारि१६१ भूषणधुनिसुनिशकुनिधुनि रँगअनुरागपसारि ॥ सूर्योदयश्रीशोभि जै श्रीबृषभानकुमारि १६२ प्रेमतरंगगँभीरगुणरत्नाकरबिस्तारि। क्षीरसिन्धुसीशोभिजै श्रीवृषभानकुमारि १६३ अरुणपीतरँगसित असितधूम्रनीलमणिधारि ॥ इन्द्रधनुषसोशोभिजै श्रीबृषभानकु-मारि १६४ कबित्वसवैया ॥ सुन्दरताशुचिताहैकहा अरुकोवि-दतामनहाथबिहारी ।लाभअरोगहुयोगकहा अभिलाषनलाषन कोधुरधारी॥ जानतामान्यतादानकृपान कहासुतपण्डितहैंसुख-कारी । जोसुखभोलषनेशगोबिन्दको पायतहांबृषभानकुमारी १६५ अथहाववर्णनदोहा ॥ पहिरिपोयभूषणबसन आपनपिय पहिराव ॥ लेहिंसहजबिपरीतिसुख करिकरिलीलाहाव १६६ सुरतिसुरतिकरिकैकहू नैननरहैंनवाइ ॥ बोलिसकैंनहिंलाजवश बिदितहावदरशाइ १६७ चितवनिबोलनिचालमें कररिसप्रीति प्रकाश । मोहिलेहिंक्षणमेंमनहि दरशतहावबिलास१६८बिबिधि भांतिभूषणबसनसकलश्रृँगारश्रृँगारि॥ मोहिलेहिंपियकेमनहिं ललितहाव करिनारि १६६ कोउ भूषणतजिदेइकैवंदनविंदु हिभाल । मोहिलेहिंनँदलालकरि हावबिक्षिप्त रसाल २०० कोउउताल आइपहिरिगरकिंकिणिकटिमाल ॥ बिभ्रमहावर-सालमैंहँसतविविधिविधिलाल २०१ ईहासुखदुखक्रोधभैकरैगहत करबाल । लखिकिलकिंचितहावयहचकितहोतचितलाल २०२ सुखसमयेदुखकोदशाहरैहियोदरशाय ॥ हावकुट्टमितजानिकरि

लालरहैंमुसुक्याय२०३ चहैंमिलननैननमिलैंबैननि मैंनपत्याव। मोहिलेहिंमनमोहनैमोहाइतकरिहाव २०४ करिखंडनहरिको करैंबातैंविविधिविधान ॥ प्रकटहावविब्वोकतनछायरह्योअभि- मान २०५ अथरसभावादिवर्णनं ॥ कामकलारतिचातुरीलहिवि भावअनुभाव। वृन्दावनमैसिंधुसोप्रकटभयोरसराव२०६ यहिथल मैंलषनेशकहिदरशाऊतेहिअंग ॥ रसतरंगयहिग्रंथमैंवरणौंजासु तरंग २०७ यथाकवित्तघनाक्षरी ॥ शुचिअवलंबहरि राधिकासुगो पिनकेउरआलबालरतिबीचवरबोयोहै । बाव्योलहिदीपनसुगंध अभिबागवनषटरितुभौनपौनउपचारजोयोहै ॥ फूल्योअनुभाव वैनवैनमेलसात्विकादिसौरभसकलविभिचारिनसोंमोयोहै। भो फलश्रृंगारतामैंकामकेलिरसयततासो लहिसाधनासमूहश्रमखो योहै २०८ दोहा ॥ सोफलशुकमुखतेंगिर्योप्रकटभयोसंसार । ताकेद्रवरसतेंभरितकवितासरिसअपार २०९ अथश्रृंगारकेआलंव ननायिकानायकवर्णनंसवैया ॥ बारनेहैमुखचंदपैचंददृगानिमृगी वचनैपिकबानी। कंठकपोतमृणालभुजानिप्रबालनखैकिशलैमृ दुपानी ॥ पूरनमूरतिपैचपलाचमकैचहुंवोरप्रभासुखदानी। सो हिरहीघनश्यामसमीपश्रिंगारकीसी मह्वैराधिकारानी २१० अंग प्रभालसैकेकीकेकंठसीवारिजनैनचितैदुखचूरत ॥ पीतपटैबन- मालविभूषितमोरपखैमुरलीसुरपूरत । रासविलासबढ़ोलषने शद्विरेफसोगुंजिक्षणौनविछूरत राजिरह्योनखतालिमयेकसोना यकगोपतिगोपवधूरत२११दोहा॥लखैनचित्रविचित्रऊनिजलज्या हिसुभाइ।पियमनलेतिलोभायबहुकरिसुक्रियाकेभाइ२१२ सवैया ह्वैवृषभानसुतागुनगौरिभिरवारिभईसुखदासखिकाहीं ॥ प्रीतिभ ईपरतीतिभईशुभरीतिभईगुरलोगनिभाहीं। छाइक्षमाक्षितिशी लमयीलषनेशकेंसूधोसुभावसदाहीं ॥ होतयोंराधिकाराधिकाआ जुभेतूंवनिमोहनकीपरछाहीं२१३दोहा॥केलिकलानिप्रवीणतासु रतिप्रेमपियप्रेम। करतहाथव्रजनाथमनप्रौढ़ातियकोनेम २१४ सवैया ॥ गौरिसोंसीखिसबैविधिसोंपतिदेवताकेव्रतनेमसुहेलो चातुरीचारुगिराकीगहेलषनेशसदाक्षविद्याविसकेली ॥ चंचलता

तजिइन्दिराकेगुणछीन्हेभलेजितिराधेनवेली। मोहिबेकोपतिकी मतिकोरतिमेंगुनौंतूरतिकोकियेचेली २१५ दोहा॥ हेरिनकेहग जोरिनहिंचहैखोटटफहरि। प्रकटनेसमनप्रेमगतिश्यापरैंनिवेरि २१६सवैया॥बोलाचहैतौ। ोभरि आवतदेखोचहैनाजुरहगजोरी भेंटाचहैतौभजैनउठैतनहूमनहूं कीभईगतिभोरी॥ चुंबनलालक चाहिचलैपगकैनचलतूरमानाकयोरी। योंलखनेगविचारकरैंपरी कादरसूरमतोमतिमोरी २१७ दोहा॥ दरगतिकेंमतिचातुरीक्षण क्षणनैंनवरूप।नोहतिमोहनमोहनामुगुधाश्याअनूप२१८ सवैया॥ नैनबढ़ेलखेबैनसुभामनेकेअबढ़ेलषेवेशविलासहैं। बाढ़तदेखि कुचौनकुचौबढ़ेपाखिपत्योंअधरानिमिठासुहै। नाहकोनेहबढ़ेलष नेअभईमनदेहतोदूनप्रकासुहै॥ देखिनितबबढ़ेमदाछीजिअजौन तजीकटिमोंकुटिलासुहै २१९ दोहा॥ जानतयौवनआगमनइमि पूछतितनबात। हरेहरिणनैनोहियोबनिमुगुधाअज्ञात२२०सवैया॥ सबखेलवेइसंगखेलतापैगहेशवरेकेसुखऔरलहैं। नहिंनेकुवि- चारिपरैहमकोउकमोहोंहियोचलोमन्दचहैं॥ कटिछीजिविथा बिनछीनभईतुमसोनाहितूकहोकापैकहैं। दिनद्वैकतेलालतम्हैं लखिकैकेहिकारणमोंपगकम्पगहैं २२१ दोहा॥ हिलतमिलतसकु चनलगीजनुयोवनजियजानि। प्रकटिज्ञातमुगुधाश्याममनमोहति मृदुवानि २२२सवैया॥ बानिबहीबतरानिवहीपहिचानिवहीनिज देखताआजमैं। पैदिनद्वैकतेऔरभईलखेघारसीआननऔरईछाज मैं॥त्योंसजनीनउहासकेबोलनिबोलैंलगीलषनेषसुकाजमैं। वेलि येवैसेनअंकलगाइयेलालललगैंलगीलाजसमाजमैं २२३ दोहा॥ अंकभरतघनश्यामकेतड़पितड़ीसीजाति। केलिकुतूहलमेंकरैम- ध्यनवोढ़ाभांति२२४सवैया॥कुंजमैंल्याइमोराइसचाइलियोमसु कयाइकरैगहिबेनी। सोगुनिभाजिचलीझकझोरिबहोरिगह्योगति आनँदलेनो॥ अंकभरेदरपेतपैथिरद्वैनसकैयुतिदामिनिदेनी। बेनुबजायविमोहितकैब्रजराजगहीवनमैंमनयेनी२२५ दोहा॥करै कछुकपरतीतिपियरतिकहँसकुचिडेराइ। हविश्रब्धनवोढ़सीवात नहोंभरमाइ २२६ सवैया॥बैनकहेकछुबोलतिवैननिजोहैंलजोहैं

कैनोठिनिहारती। खेलतिखेलकहूं सँगमैंरहीरासविलासहुलास पसारती ॥कुंजसखीनलखीनललातवसेजनहींहरिसंगपधारती। यंकिगईसुरतैदृगनाइलजाइपराइकोढ्योंतविचारती २२७ दोहा छविसचिह्नपियरिसकरैगुप्तप्रगटदुहुभाइ। धीरअधीराधिराधिरै मध्यप्रौढ़ दरशाइ २२८ छप्पै बचनरचनकरिद्दगनिकोकनदरँगनि मिलावति। इमिकटुवचनसुचिह्नदियोतहंजाहुसुनावति ॥ कहुं पंकतगुणिमानबोलितवआंशुनिवरसै। रहिकहुंहियेउदासप्रेम प्रगटै अतिदरसै ॥ कहुंमारुदेतकुसुमानिकहुंकुवतकुपितझुकिछ- खिपरति। गुणगोरिसरिसमहिअधामउरऔगतियनिकीगतिहरति २२९ दोहा निजभूषणकौतुकतियनिदेनदेतिकरिप्रीति। सोहति दक्षिणपीय ढिगजेठाहीकोरीति सवैया ॥ रासभरेदोऊसंगमें भामरैल्यायेनिकुंजहूं संगसोहाइकै। आगेकियेदोऊभांवतीभांवते राधेकेपांछूगयोहरषाइकै ॥ ताहिरमायगमायकछुछिनआगेगई तेहिसेजसोवाइकै। लायेहियेलताओषधिसीतवैफूलेसरोजनिफे रिविछाइकै २३० ॥ इतिसुकिया ॥अथपरकीयादोहा॥ चंद्रकला सीसोभिजैविप्रदश्यामकीप्रीति। बाढ़तडरतिकलंककोपरतसुनी कीरीति२३१ सवैया भांवतोल्याईहियेमेंभुजाभरेपांकेपियूषछकी अधरानिकी। नेकुनत्रासनिवासकेवासकीआसमवैभईपूरचषा निकी ॥ कोलधनेघनम्हारकरैपटभूषणसेजसजीकुसुमानिकी। बांसुरितानमनोजकेवाणविधेउरवानिगईकुलकानिकी २३२ दोहा खरकतहूंतणकेरहैचाहिचहूंकितधाम। पियसोवाइघरसीतजन- थाईऊढ़ावाम २३३ सवैया ॥ सीतलमंदसुगंधसमीरबहैयमुनातट ह्वैतरुतालै। शारदचंद्रकोचंद्रिकाफैलिअमंदरहीचहुंघासुवि- शालै ॥ कुंजघनीमेंबनीशुभसेजमबैसुखकोसरसैसुरसालै। को नकहैकृतकृत्यभईतियधर्मसमूहकैपायगोपालै २३४ दोहा रति कलंककुटिहैगुनेहोइहैलालविवाह। लसतिअनूढ़ानारिसरिभरी उछाहप्रवाह २३५ सवैया गौरिमनावतिहैमनमेंमतिलाजछईमु- खसोंनहिंभाखै। बाढ़ेजनैक्षणप्रेमहियेतियनेमगहैजिमिआनन्द चाखै ॥ कोळघनेघनिवारोकरैलगरीतिनप्रीतिहियेबढ़िराखै।

केलिकैकान्हरसौंवनमैकरिलीवोबिवाहललीग्रभिलाषै२३६दोहा निदरैमोरचकोरशुकवेनोमुखग्रक्षराहि। लखिग्रलिमधिमृगलोचनीगहेभावगुप्ताहि २३७ सवैया ग्राईसुनेशुभरासकोग्रोरपिग्राचिनिपापिनिजोवनिघाती। मोहिलखैइतकोपिततांकिकढ़ीतरुजालकरालहैराती॥ ग्रौरनठौररह्योतेहिंजोरनवांचतीतौकेहितूंमुसुकयाती। ताहिपुकारिनिकारिकैलाजहिंजोनवकारिहियेलपटाती २३८ दोहा सांझहिँतेसूनेसदनग्रावहिहमहिविहाइ। ग्राजुहिसंगलखिलालकहंबचनविदग्धाभाइ २३९ सवैया॥ कालनिसोंथकोलालतहांकुटिवालनिजालतेग्राईसिधारिकै। बोलिसुवोलसुधासेसनेमनमोहनीमोहनकोमनहारिकै॥ कौतुककीजिवोसीखहिदेतभईलपनेग्रजूबुद्धिविचारिकै। हेरिरीग्रालीदुरेघनश्यामतमालतरेग्रमनेकुनेवारिकै२४० दोहा॥परतिउरवसोउरबसीमोहनमूरतिग्राइ। हरषिततियहेरतिदृगनिक्रियाविदग्धाभाइ २४१सवैया देखिलसेनदनंदकोकुंजमैंगुंजतपुंजद्विरेफसोहाइकै। छांहलखेतरुचौंकिपरीचितचक्रितचंचलतागहिधाइकै। रक्षहुगोपिनकेप्रतिपालयहैकहिबालहियोउरलाइकै॥ वृक्षतमालमैग्रानिमनोरहीकंचनवलिनवैलपटाइकै२४२ दोहा। दुरैंनचिह्नसभोगकेजानिगईसखिप्रीति। तहंसोहैवृषभानजानारिलक्षितारीति२४३ सवैया॥ ग्रलिग्रासमुबासहिवासितकैपददेतहमैजगबंदनको। तेहिंमूंदततूंकेहिंकाजग्रलीउपजोसबदुःखनिकन्दनको॥ नहिंनेकुसयानपनोहममैंतुमकोकरिवेछलछंदनको। कियेफंदनकोनहिंगोयोरहैउरचंदनयानंदनंदनको २४४दोहा। लखेग्रनेकनिरूपहरिरासमध्यसममानि। लाजकियोनहिंसुन्दरीगहिकुलटाकीबानि २४५ सवैया रासलखेहरिरूपग्रनेकसुएकहिएकचहैजितिजूहमैं। बाढ़ोउछाहप्रवाहहियेमहँबैठिलसैयमुनातटधूहमैं॥ क्योंलषनेग्रकहौंसुखजोवहबालनिहालभैलालसमूहमैं। चोपिरहीरतिसंगरकोतजैधीरनवीरजौंसूरनिवूहमैं २४६ दोहा रुचिएकांतगुनिरासतेकुंजहिल्यायेलाल। तियफूलीभूलीदग्रारुचिमुदिताहिंकाल २४७सवैया॥ लैरसरासरसैसोरसीलिहिंसैनकौंनैननिसैनदईहै।

आईतहांमनभाईभईबनबासमैबारबड़ोबितईहै॥ देखिछकेदृग नंदकिशोरतबेलौंसोईपुलकालिछईहै। कुंजमैआवनकोगुनिजो तियफूलिकदंबकोकुंजभईहै २४६ दोहा॥ सोवतपियसँगकुंजमै सुन्योकाहुतियबानि। सोचतअनुसैनाभईपिकबानीजियजानि २४७ सवैया फूलेफबैंकरैफूलफबैफलैतातैंफलैफुलवारोसँवारत। सौरभतासुखमाशुभताशुचिता मैसनेसुनैभौंरगुंजारत॥ कुंजनि कुंजनिमैव्रजराजव्रजराजतिराजिप्रभानिपसारत। मंदनमंदहैहैम-तिमंदजोफूलनिवृंदप्रभंजनझारत २४८ दोहा॥ गुनैगयेघरलाल कोंकहँमिलिहैंयहिरीति। वियअनुसयनाकरतिहैक्षणक्षणमैनव प्रीति २४९ सवैया ग्वारसमीपनबाररहैंकोऊबारनपारसुवृक्षख-गेहैं। कालिँदीधारकगारप्रघोषविहंगकतारउचारजगेहैं॥ आनु विचारगयेचलिदारअहैंघरबारतेकारपगेहैं।हारनतोहिंहैहारअगार चहूंदिशिद्वारकेवारलगेहैं २५० दोहा॥ चलोउतैंकहिजाइहरि ल्यावतचिह्नविहारि। नहिँपहुंचेपछितातिगतित्रितिअनुसयना नारि२५१सवैया॥कहितािहगयेचलिबापिकामैमनऔरतियानिको रंजनकै।नहिँबारबड़ोकलोंआइसकीतबलोंनिकसेमुखमंजनकै॥ लखनेअकहाकहियेतेहिहालविहालभईद्युतिअंजनकै। करकंज गोपालकेकंजलखेदृगकंजभेबालकेकंजनकै २५२ दोहा॥बिबिधि भांतिकरिकैकलनिलेतिमालहठिबाल। दरशावतिनँदलालकोबार बधूकेख्याल २५३ सवैया अठिवपेतजमकसुखकर॥ बालनिबा-लनिजालमैंजालमैद्वैमिलोचाहतिधाममैधाममै॥ बानहुबानहु नाथसमानअनंतअनंतनिदाममैदाममै। भावतभावतनावनमैवन मैवनमैबसोचित्रजोबाममैबाममै॥ केशवकेशवदेखिविलासभो उर्वसीउर्वसीकाममैकाममै २५४ दोहा॥ सखिननिरखिरतिचिह्न पियकहैसयुक्तिउदास। अन्यसुरतिदुखितागतिहिँदरशतबालवि-लास २५५ सवैयापिप्पेतजमकसुखकर॥ बिंदुबनैछईवागिबनै करिमोहितहैयहमोहितहालमै। कासुरभीमदकासुरभीकीसुबास कियेतेहिबासरसालमै॥ क्यौंवरणौंनपक्यौबरनौलखनेअबयोलख नेअउतालमै॥ गोकुलमैंयहगोकुलमैकलिकालभईनहिंतूकलि

कालमैं २५६ दोहा ॥ जाइसकैं नहिं अनत अब मो गुण बँधि नँदलाल। कहत सखिन सों देखिये प्रेमगर्विता बाल २५७ सवैया जमक दुःकर अठिवपेत ॥ सँग कामहि कामहि कामहि कै तजि कामहि कामहि माहिँ सनै। बलकै बलकै बलकै निशिमैं विचरैं बलकै नहिं भीति ठनै॥ करपुष्कर त्यों कर अंक करे कर पुंज निशाकर बागे बनै। भवहास को है भव पै भवना भव को भव भूल कै मोहि गनै २५८ दोहा ॥ केशरि लाई लालको अंग अँगौछि सतराइ। फेरि फेरि हेरति दृग निरूप गर्विता भाइ २५९ सवैया पुनर दुष्कर विपेत जमक ॥ गोत्र गोबर्धन के तट वास ससु गोत्रजनी तुव गोत्र तथा लसै। त्यों तन है तन पै तेहि वास युतै तन को तन देत लवै जसै॥ चाहि मुखै वरणै वरणै वरणै वर जे वरणै विद हैं रसै। बारिजकंठ सोवारि जनैन सों तू छबि आनन वारिज क्यों हँसै २६० दोहा॥ पियमुख सुनि परनारि को नाम मानिनी बाल। रहति दीठि नत पीठि दै छोड़ि सखिन सँग ख्याल २६१ सवैया आदिपद जमक ॥ पटु ह्वै रहु तू पटु तान गहै पटु खोलि लिलखै पटु नंदलला। इन तोहि मनावत भावत हैं मुख गावत औरन हीं न बला॥ कियेकुंजनि कुंजनि मैं सब मैं मोहित तो हित मैं सति दै अचला। लखने अलखे यह औसर रास को क्यों न करै अलि कोक कला २६२ दोहा॥ पिय वियोग सपनो निरखि बाल विकल ह्वै जाइ। निंदति चंद समीर वन प्रोषितपतिका भाइ २६३ सवैया दुपदादि जमक ॥ क्षीण भई सुख की सुप्रभा परभात निशाकर भो मुख प्यारे। राजिव राजिव नैन टरैं उर राजिव राजिव की द्युति टारे क्यौं न लखौ चलि भोरी भई यहि काल सबै तन हाल बिसारे॥ वाहि गई कहि सौति उदास ह्वै नंदलला परदेश पधारे २६४ दोहा ॥ औरत रुणि अँग वास की लहि सुवास पिय अंग। गहि उदास कहि देति तिय नारि खंडिता ढंग २६५ सवैया तृतीयपद जमक ॥ आजु बड़ी सुकृती मैं हमैं गनी साजु बड़ो बिन मोल दै देखी। आइये आइये धीर अहीर तुम्हैं ब्रजमैं ब्रतबंध विशेषी॥ लोक सुजान हु लोक सुजान हु लोक सुजान हु लोकन देखी। भाल महाउर अंजन ओठ बिना गुण मोतिन माल उरेखी २६६ दोहा ॥ मान मनावत नहिं तजै पी यचलै पछिताय। कलहंतरिता की दशा सखिन मध्य दरशाइ २६७ सवैया जमक अंतपद को ॥

मानकियोमनभावनकेतोमनाइथकेममहेतमैराजै। जातभयेकहुं रूसिबनैअबक्यौंकरिमोचषधीरजसाजै॥ काहूकोदोषनहींसपने अपनेअँगयेदरशातसमाजै। कूटभरीकुलकूटमैयोबितकूटभरीकिमि कूटहिलाजै २६८ दोहा॥ मुरलीधुनिसुनिलालपहँचलैतहांतिय जाइ लखैनतबबिहुलगिरैबिप्रलब्धगतिपाइ २६९ सवैयाआदि अंतजमक॥ कहिधात्रिहिनाहिंसकैफलधात्रिहिकोसमधात्रिहि ठामनहीं। मनहींमनव्याकुलबालभईलखिसेजसजीशुभकुंजत हीं॥ चलिरासबिलासतैआयेइतैंकहिमोंहिंचलौरहेआपुकहीं। शिवभूलिगयोतनकोशिवपैशिव देखिबिनाचषच्वैसिबहीं २७० दोहा॥ कहुंचलिशुभगसहेटतहँलखिनलालअकुलाइ। आयो कंतनकतकहतिउतकंठिताशुभाइ २७१ सवैयात्रिपदादिजमक॥ गोघनीकुंजमैगोघनीछावतिगोगणसोप्रियगोगणपालको। बूझति हैअकुलाइसखीसोंलख्योजबआवननाहिंउतालको पुष्करनैनन पूरितपुष्करपुष्करदेखिमयंकरसालको॥ रासतेंआइतहांपरिखे पलबीततकल्पसमयव्रजबालको २७२ दोहा॥ लखिरुखकहुं चलिलालकीबासकशय्यारीति। आइकुंजशय्यासजैपटभूषण करिप्रीति २७३ सवैयाद्विपदादिजक॥ सेजलसैशुभस्यंदनसोंस- रिस्यंदनस्यंदनतुंगलखाउमै। कैनगभूषितकैनगभूषितसोनगको नगसोकरिचाउमै॥ कूड़सोपाटीकिरीटसोदामिनीकैकेबचैकल कंचुकीचाउमै। भ्रूधनुषैबरनैनसजेरति संगरकोसजैशूरसुभाउमै २७४ दोहा॥ कहतवचनगमनतहँसतलखतताकिरुखलाल। हैस्वाधीनप्रियातुहीराधेरूपरसाल २७५ सवैया द्विपदांतजमक॥ गुनडोरीरच्योतेहिचंगभयेलखौं ऐसीखेलारनऔरलली। रचि मायाकरेनहिंमायाधरेअहैमायापरेयेअबैतेबली॥ यमुनातटकुंज मैगोपिनलैनिशिमैनिवसेरचिरासथली। सुमनासुमनासुमनासो तुहैसुमनाभरोमाधवमोहैअली २७६ दोहा॥ वंशीधुनिसुनिजोन्ह मिलिआईज्यौंतसिधारि। त्योंतममैहरिलाइहौंलखुअभिसारिक नारि २७७ सवैया पादानुपादादिजमक॥ जानिगयेमनमोहन कुंजतबैसजिमोहनीछोड़िसखीथर। योंदरशीदरछोड़हँसीदररा-

सथलीतेचलीदरपेदर॥ मांगिमिलोबरसोंबरपैवरकुंजघनीमैंलसै मुखयोंबर।तारणह्यागिबिदारतज्योंतमजाततमीमैंश्रमीमैनिशा कर २७८ दोहा॥ चलतसदनचरचाचलेबालबदनकुम्हिलात। प्रकटप्रवत्स्यतप्रेयसीबिरहगातबढ़िजात २७६ सवैया तृतीयविन त्रिपदजमक॥ गोपतिगोपहिजैहैंलख्योयहश्रानिकह्योकोउगोप कुमारी।बारनक्योंकरिहौगतिबारनबारनलागतजातसिधारी॥ कोलखनेशदशाबरणैवहलालतबैतनहालबिसारी।गेहरिनींदपरी हरिनीश्रीचलैहरिनीसेचपानितैंबारी २८० दोहा॥श्रंतरहिततेप्रक टभेहरिहर्षेतियश्रंग॥सोउछाहक्षणक्षणबढ़ैश्रागतपतिकाढंग२८१ सवैयाचतुःपदबिनजमक॥ श्रंबरकैसजनोबरश्रंबरश्रंबरभूमिहूं श्रासहूंमाखैं। नागहुफूलफलैगुणिनागहिनागहिनागबियोगतैं राखैं।मोरसनारसनासमुझैरसनादिकभूषणकोश्रभिलाखैं।सोप्रकटे दुखदूरिभयोनँदनंदमुखैकोश्रमोहमभाखैं २८२ इतिश्रवस्थाभेद नायकाचरित्र॥ श्रथत्रिविधिनायकादोहा॥ गनतिननाहगुनाह श्रतिपगीरहैपतिप्रेम।लीन्ह्योजगतोसीतुहींनारिउत्तमानेम २८३ सवैयाश्रादिपदबिनजमक॥ तोसीबिरंचिरचीनातियावृषभान सुताशुभरूपसयानको॥ मानसमानश्रमानकोमानश्रमानबिसा- रिभजैभगवानको।भीजीरसैरसैह्वैसरसैछरसैनिरसैसुरसैरसैपान को॥ दानमयीगजगामीकोदानभोदानदिजानज्योंदानदिजान को २८४ दोहा॥ हैमोमतनहिंमध्यमाजानतुहीव्यवहार। हित मैंहितश्रोश्रहितमैंकरैमानभलदार २८५ सवैयाद्वितीयपदबिन जमक॥ मंजुसुभावसुभावरषैंकहैतासुसुभाकोसुभानहिंश्रानै। ताकतचोरतियानकोंकान्हसुयोंसजनीलखियेतबमानै॥ज्यों मुकुरैमुकुरैकमलैमुकुरैश्रोफुलोमुकुरैपहिचानै। जेपटहूंऋतु माहंपलासपलासपलासनातेबरजानै २८६ दोहा॥ राचतपि- यहितकेकरैबचनकरनझकझार।होतिश्रधमनहिंसुन्दरीचितला- ग्योचितचोर २८७ सवैयाजमकचारौपद॥ मित्रश्रमित्रगुणैतेहि मित्रहुमित्रप्रकाशश्रँध्यारनजावै। चेतैनहींविधिकेविधिसौंबिधि प्रेरितजोविधिबामसिखावै॥ कासितकैसितजोनहियोभोसिखा

सितसोसितवैनबतावै । नंदनको अरु नंदनभोगकोनंदनजोनँद नंदनभावै २८८ इतिनायका । अथनायकवर्णनम् ॥ सवैया जमकसमस्तपद । हरिचंदनअंगनिमैहरिनैनोलियेहरिबेलिसी साजिरहे। हरितैहरितैलहेवासजसैहरिसोमखस्योंहरिगाजिरहे । हरिपैहरिकेलिकलालखिकैहरिगौनीजुतैहरिलाजिरहे ॥ हरिसेव-दनैहरिनैन फुलैहरिभाहरिकैहरिराजिरहे २८७। दोहा॥ डरिप-रनारिबिहारकोपतिनायकनँदलाल । रासमध्यभरिभामरैंजनु ब्याह्योव्रजबाल २६० सवैया। युगार्द्धपदजमक। होतनहोंत-नको तनभानबिनातनबानतजेरिपुसंवर ॥ सोतनसोतनझंझा सोचेतनह्वैवरसोतबधारिपितम्बर । ज्योंवररूपसबैवरदानिजसै वरणैविधुवैगनअम्बर ॥ त्योंवररीतिसोगोपिनकेवरहोतभयेरचि रासस्वयम्बर २६१ दोहा ॥ कौनभांतिउपपतिकहैंलखिअसनंद कुमार। परमपुरुषपरनारिपतिकियपरनारिविहार २६२ सवैया जमकचौथीसपद॥क्रमकविस्वकामधेनुदशाक्षरचित्रअनेकछंदचित्र कोउदाहरणयामेंहै।धामहितैधरधामहितैधरधामहितैधरधामहितै धर ॥ कामवितैकरकामवितैकरकामवितैकरकामवितैकर । दाम जितैवरदामजितैवरदामजितैवरदामजितैवर ॥ बामचितैहरबाम चितैहरबामचितैहरबामचितैहर२६३ अर्थ ।धामतनकोहितधरने वालाधामतेजकोहितपूर्वकधारहैं । धामहितैकहेकिरिणितेधरपृ-थ्वीधामसोवृन्दाबनताकोहितैधरहैं अर्थात् प्रकाशितकरतहैं पुनः काममनोरथकेबितकरनेवालाकाम जोकार्यहैताकोबितकहे सामर्थ्यमाफिककरैहैं । अरुकामजोभोगहैताकोवितकहेऐश्वर्य ताकोवितकरनेवालाकामजोकंदर्पताकोवितकरमेहैजिनके॥ पुनः वरजेसुंदरहैंतिनकोदामसमूहजितैकहेजेतनेहैं तिनकादामकहेदा-उँमेजीतैकवरकहेश्रेष्ठहैं ॥ अरुदामजोऐश्वर्यताकोजितैवरकहे वरदानहैका बड़ेऐश्वर्यवालेहैं तिनकोदामजो श्रीकृष्णचन्द्रकी मालावनमालसोवरकहेजबरदस्तीजितैहै॥ अरुबामजेमहादेवहैं तिनकेचित्तकेहरनेवालेहैंबामकहेमनोहरचित्ततेहरकहेहरबेरवाम कहेतिरछोचितैकै हरबामकहेहरयेकस्त्रिनको चितहरैहैंसोउप

पतिनायककेलक्षणईहैं इत्यर्थः ॥ और जेयाकवित्तमे अनेकचित्र अनेकभावरसकेहैंतिनकोलिखेहैं ॥ अथ आद्यक्षरीपंचपदीदशाक्षर कविताएकावृत्ति द्वयावृत्ति त्रैआवृत्ति चारिआवृत्ति यथारुचिपढ़े अथदशवर्ण मतधवचहजकरद इति ॥

चिरजिरविरहिर

म	तै	र
धा	हि	ध०
का	वि	क०
दा	जि	व०
वा	चि	ह०

कामधेनु चित्र

धाम	काम	दाम	बाम
हितै	वितै	जितै	चितै
धर	कर	वर	हर
धाम	काम	दाम	बाम
हितै	वितै	जितै	चितै
धर	कर	वर	हर
धाम	काम	दाम	बाम
हितै	वितै	जितै	चितै
धर	कर	वर	हर
धाम	काम	दाम	बाम
हितै	वितै	जितै	चितै
धर	कर	वर	हर

अथपहिलोजो-कामधेनुकवित्तकरिआये हैं ताकेअन्तर्गत चित्र-लिखेहैं॥तत्रचारोचर्णान्तिर्गतदोहा॥धामहितैधरधामधरकामवितै करकाम॥ दामजितैवरदामवर बामचितैहरबाम २८४यामें अर्थ वर्णन श्रीकृष्ण को है सो प्रकटहै यांतश्रृंगार दोऊरस में लगै है।

चित्रकपाटबद्ध

धा	म		म	दा
हि	तै		तै	जि
ध	र		र	व
धा	म		म	दा
ध	र		र	व
का	म		म	वा
वि	तै		तै	चि
क	र		र	ह
का	म		म	वा

त्रिपदी ॥

धा	हि	ध	धा	ध	का	वि	क	का
म	तै	र	म	र	म	तै	र	म
दा	जि	व	दा	व	वा	चि	ह	वा

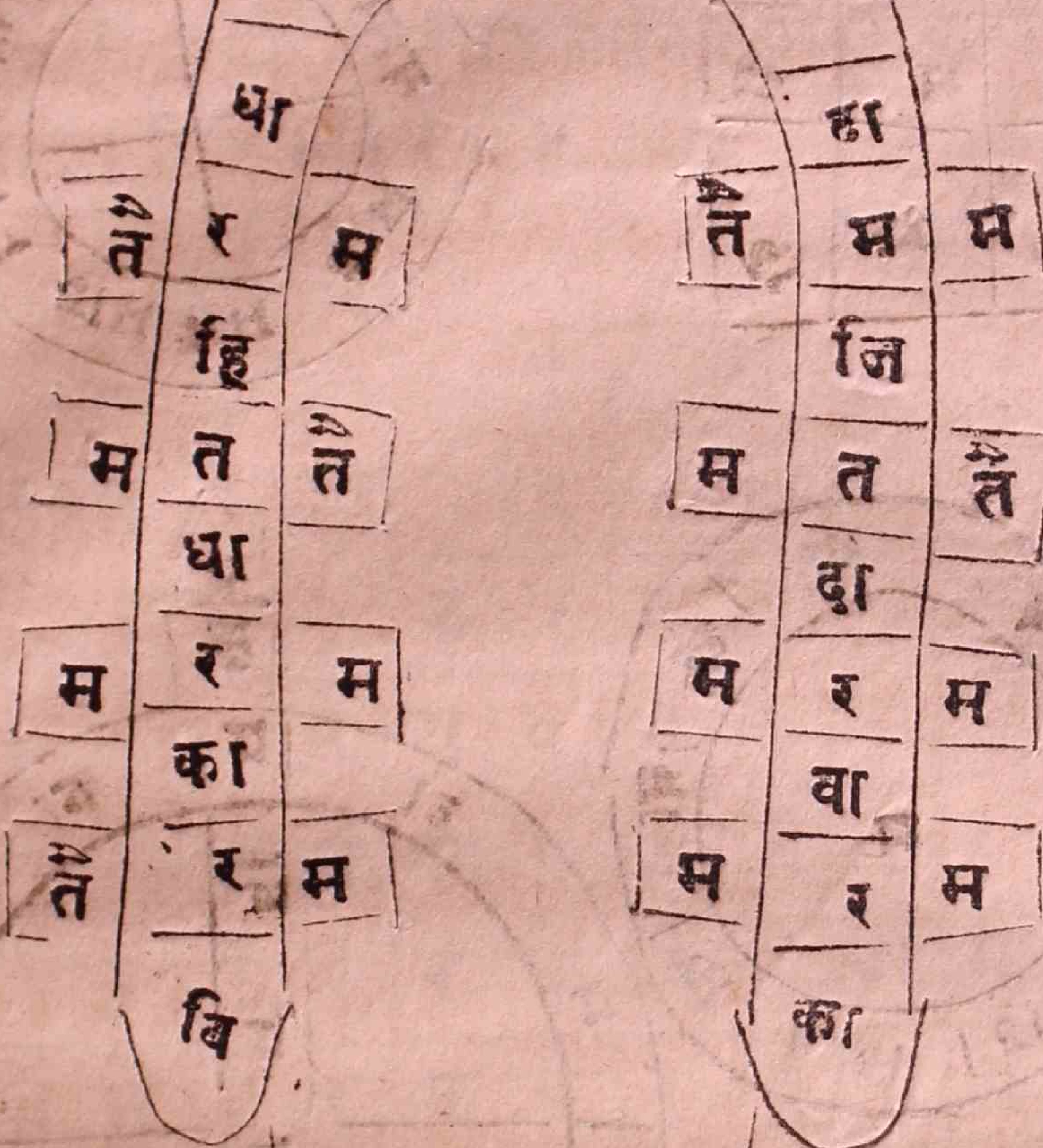
अथगोमूत्रिका

धा	म	हि	तै	ध	र	धा	म	ध	र	का	म	वि	तै	क	र	का	म
दा	म	जि	तै	व	र	दा	म	व	र	बा	म	चि	तै	ह	र	बा	म

अथ अश्वगति ॥								
धा	म	हि	तै	ध	र	धा	म	ध
र	का	म	वि	तै	क	र	का	म
दा	म	जि	तै	व	र	दा	म	व
र	बा	म	चि	तै	ह	र	वा	म

अथ असंलक्षिक्रमछंदकरिहारबंधचित्र ॥ छंद अरिल्ल धामहितैधर हितैधामहितधामकामधरका मवितैकरदामजितैदमजितैदामजित दामबामदरबामकामवर २६५ ॥

अर्थ ॥ श्रीकृष्णचंद्रकोवरणनहै कैसेहैंधामहितैकहेअपनेतेजतैं हितैधरहैं । धामहितजेगृहस्थहैं तिनकोअरुधामजोवैकुंठताके कामधरजेभक्तहैंतिनकोकामजोकार्य्यताकोवितकहेऐश्वर्य्ययुक्तक-रैहैं॥ अरुदामजितै दमजितैकहेजहांदम इन्द्रियदमनकरिकैदाम समूहविकारजीतैहैं दामजितनिरलोभीपुरुषतिनकोदामकहेदाउँ बामटेढ़ोपरिजाइहैताकोदरनेवालेहैंअरुबामकहे महादेवकेतुल्य कममनोरथकेवरदानदेवैयाहैं इत्यर्थः ॥



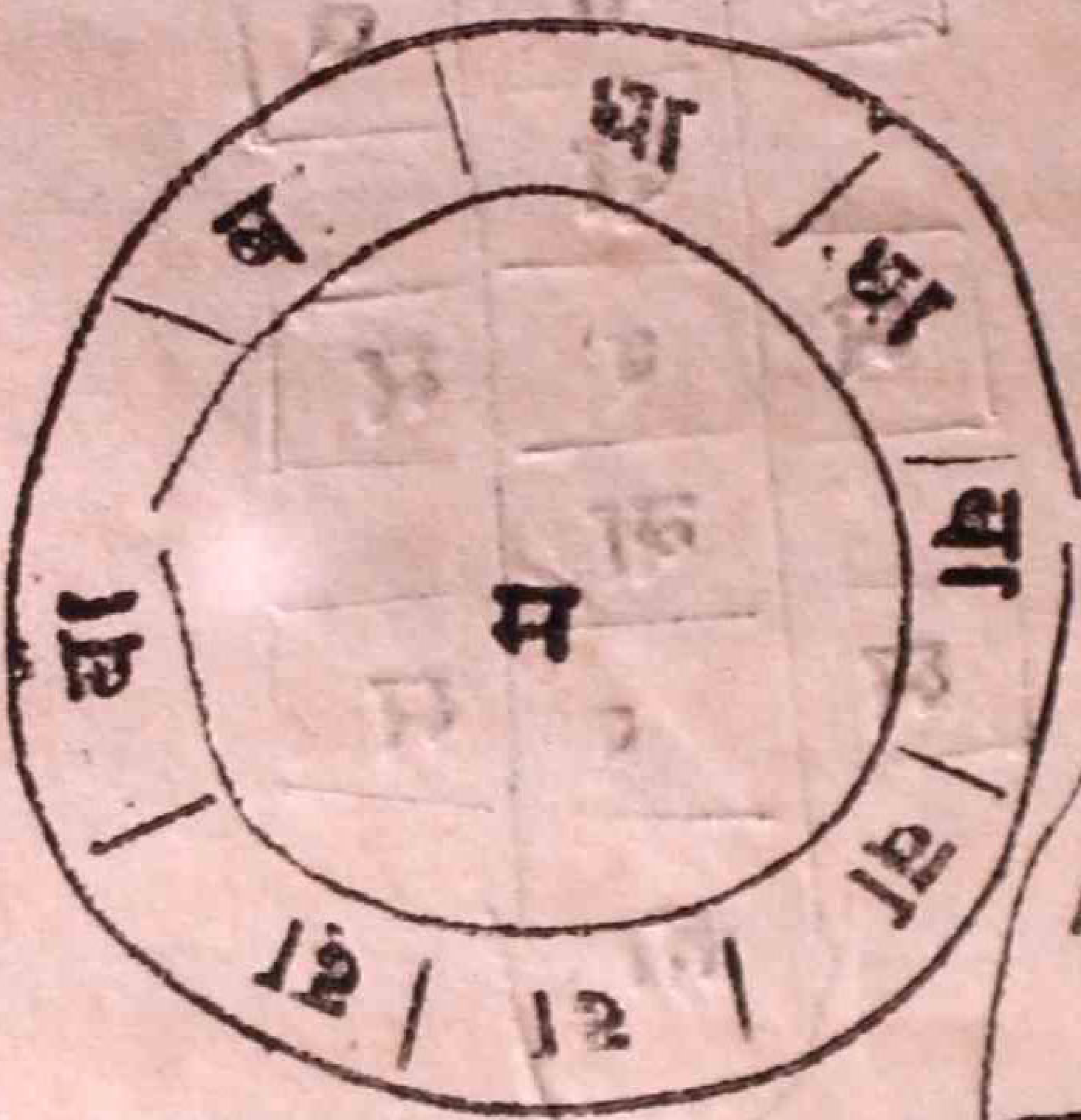
अथआदिअंतपदग्रहितप्रथमकोठाकोचित्र पंचाक्षरसिंहावलो-कनमैछंदइतरनिजा ॥ धामकामकामदामदामबामबामधाम २६६

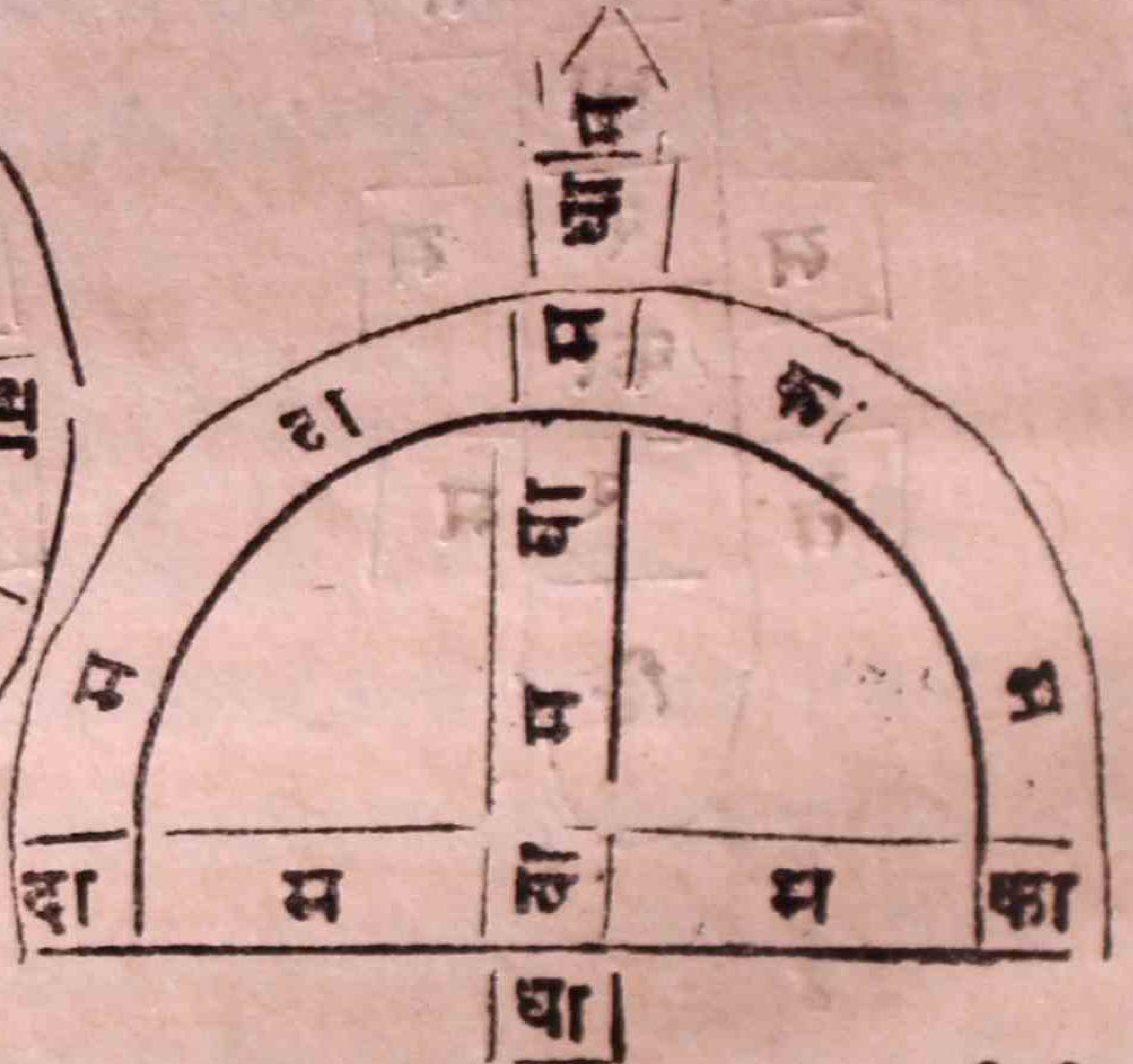
अर्थ ॥ धामजोघरताकोकामकहेकार्य्यजोहै सोकामजोमनोरथ ताकोदामकहेमाला है अरु दामकहे दाउंजाकेबामकहेकुटिलहै तातेबामजोमनोहरधामहैसो [illegible] ताकोलखुयह शांतरस है॥

यामेचित्रलिखेहैं ३॥

सर्वतोमुखचित्र		
धा	का	का
धा	म	का
दा	म	का







इति षष्टदलकमलचक्र   इति धनुषबंधचित्रचारिछंदहै

कामधेनुकवित्त छन्द यथाक्रम		
धाम	हिंत	धर
काम	वित्तै	कर
दाम	जितै	बर
बाम	चितै	हर

अथ पर्वतबन्धचौपाई ॥ रहकरधामरावधरहितै । धारकाम बरकररकचितै ॥ दामजितैबरकरधरहरवर । रहरवरकरधधर करधरहर २६७ ॥

अर्थ उक्ति मन सों अथवा शिष्य सों कहे हैं शांतरसवत् है क्योंकि पूर्ण निर्वेद नहींहै आश्चर्यजितहै अरुचौथेपद अर्द्धगता गतहै तातें अर्द्धगतागत की रीति जानिये योंहीं चारौं चरणहोय तौ अर्द्धगतागत चित्र कहिये ४ ॥

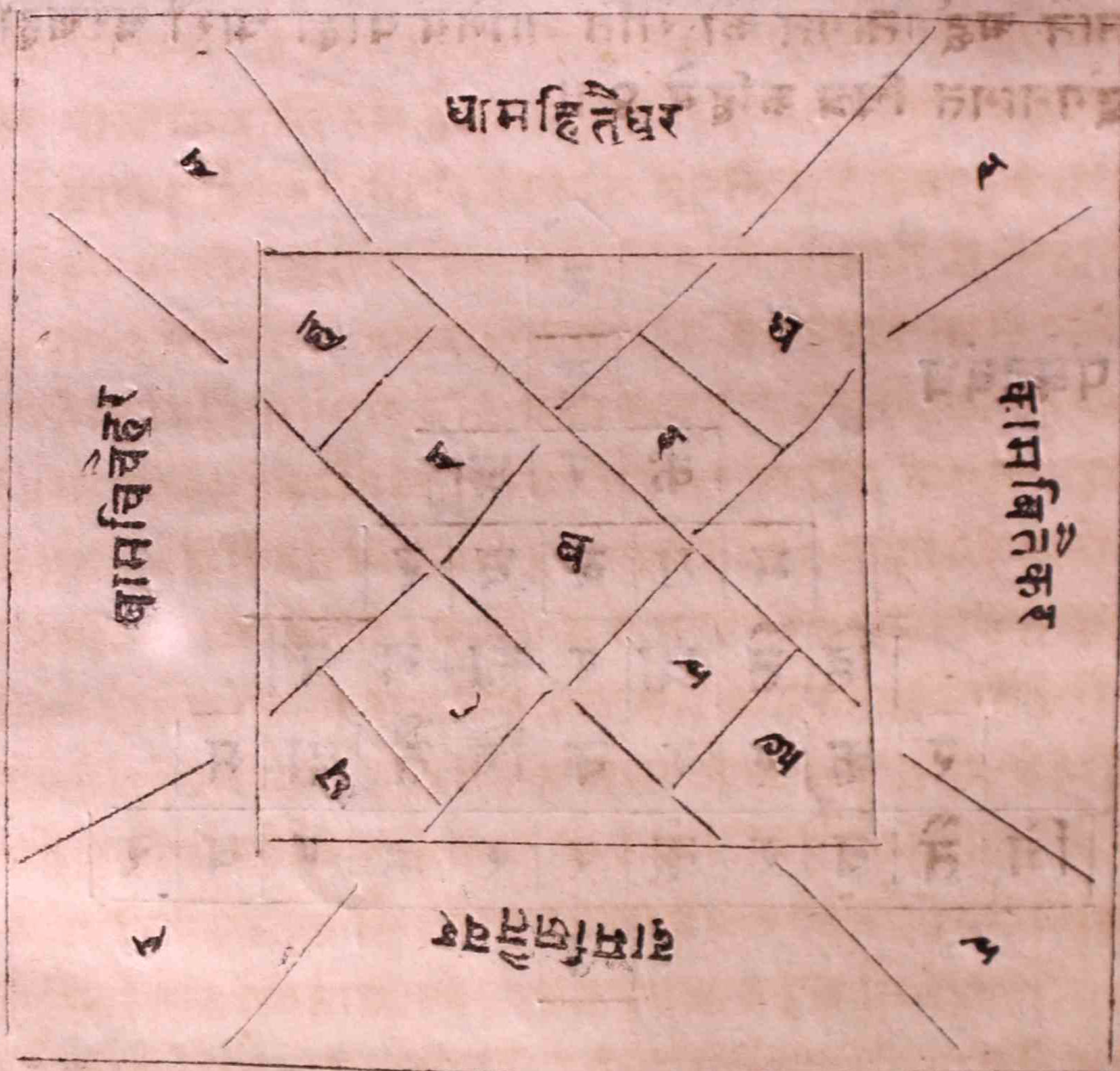
पर्वतबंध

र
ह
क र धा
म रा व ध र
हि तै धा र का म व
र क र र क चि तै दा म
जि तै ब र क र र ह र व र
ध

अथडमरूबंधचित्रछंदसक्करी । बरहरधामहितैधररधरव ॥ बर धरकामवितैकररहरव । बरहरदामजितैवररधरब ॥ बरधरवाम चितैहरहहरव २६८ ॥

अर्थ ॥ बरकहे श्रेष्ठ हर जे महादेवहैं तिनको धाम कहेतेज ताको हृदय तें धार अरु रध कहे आराधना कर रव कहे पुकारकर कि मैं तुम्हारे शरण हौं अरु बर कहे सुन्दर धर कहे शरीर जिनको काम जो मनोरथ ताको वित करने वाला रहत है रव कहे शब्द जामें अर्थात् वेदादिक कहै हैं बर कहे बरदान जिनको हर एक दामते मिलत हैं जी कहे जीवते औ बरर कहे रटअरव तौ बर

कहे सुन्दर धर कहे भूमिहै जाकी ऐसो जो वृन्दाबन है ताकी काम जे गोपी तिनके चितके हरने वाले श्रीकृष्ण तिनको रव कहे रासको शब्द ताहीमें मग्नरहै गो २६८ ॥ इति चित्रप्रकरणे अथछन्दरीति ॥ तत्र घरवैयथा ॥ धामहितैधरधामहितैधरधाम।



इतिडमरुबंध।

कामवितैकरकामवितैकरकाम ॥ येतरे छन्द कामधेनु में हैं औरौ कढ़े हैं तिनको ग्रंथविस्तर भयनहीं लिखेहैं दोहा ॥ दैकरिसुरनर मुनिबरण मनमोहैंतिहुंकाल । क्योंकहियेवैसिकवियेबारबधूधन लाल २६६ सवैयाजमकअर्द्धपदावृत्ति ॥ मण्डितहैंकरराजिवमाल केमण्डितहैंकरराजिवमालके । बारबधूगणसंगगोपालकेबारबधू गणसंगगोपालके ॥ काननबोलैंसुनैंसुरपालकेकाननबोलैं सुनैं सुरपालके ॥ चाहैंमनोहरभूषणलालकेचाहैंमनोहरभूषणलाल के ३०० दोहा॥ अतिअद्भुतअन कूलगतिकियोरासघनश्याम

कामकेलिसुखदियतियनिआपुभज्योनिजबाम ३०१ सवैयाजमक एकपदावृत्ति ॥ धामधरेबरराजतहैंपटुसारगहेलखुनैनिकुरंगकी। धामधरे बरराजतहैं पटुसारगहेलखुनैनिकुरंगकी ॥ बामसबैमुकुरैनभहैंरसभौतुम्हैंचक्रगोपालपतंगकी। बामसबैमुकुरैनभहैंरस भौतुम्हैंचक्रगोपालपतंगकी ३०२ ॥

अर्थ ॥ श्रीराधिका जुसोंसखी श्रीकृष्णचंद्रको वरणन करैहै। धामतेज कों धरेबर कहे सुंदर राजतहैं पटु जो प्रवीणता ताको सारांश लखुकहे लाखनगहैं नैनिकहे नीतिनमैं श्रीकुरंगकहे हरि रंगमैं रँगे हैं तिनकी पुनि धामजे स्थान वृन्दाबन बरकहे श्रेष्ठ ताकोधरे राजतहैं पटुकहे तीक्षणतासारकहे धर्मकैगहेहै सो कुरंग नैनीलखु वामकहे मनोहर सबैकहे सब गोपिनको मुकुरनिश्चय नभकहेसमीपहैं तेहिते रसकहे प्रेमताकी भौकहे भीतितुम्हैहै तेहितेचक्रकहेचक्रितहौसोभयकैसोहैगोपालपतंगकीहै। अर्थात्जैसे गोजोपक्षीकोपालोहै सोपतंगकहेपखियारीताकोभयकरैकिमोंको निकारिपंजरमैंयाकोराखैगोसोभ्रमदूरिकरौ॥ बामजेसंपूर्णस्त्रीहैं तेमुकुरकहे ऐना नभआकाशरसजलादिहैं तिनमेंप्रतिबिंबईपरै हैताहीकोअभिमानहै सोमिथ्याहै। गोपालश्रीकृष्णचंद्रसूर्यवत्हैं तिनकेरमैंकोचक्रकहेएकचक्रस्थवत्तुम्हैंहैभौकहैउपजीहै ॥ अलंकारभ्रांतापन्हुतिहैनायकअनुकूलहै ३०२ दोहा॥ सबहितियनि समसुखदियोकरितिनकीगतिभोर। दक्षिननायकदेखियेएकैनंद किशोर ३०३ सवैयाजमकद्वैपदावृत्ति ॥ कैभवकेतिकभावरसैंकर कंजनिधारिरहीगतितालकी। पूरनकामगुनैएकबारहीह्वैमकुरैव्रजबालगोपालकी ॥ कैभवकेतिकभावरसैंकरकंजनिधारिरहीगति तालकी।पूरनकामगुनैएकबारहीह्वैमुकुरैव्रजबालगोपालकी३०४

अर्थ ॥ भवसंसारतामेंकेतिककहेकेतनो उभाकहेशोभाकरिकैबरषे करकिरिणितातेकंसुखजानिकैतालजीतड़ागताकीगतिधारेपानि-पक्रांतिमुखकंजादिएकैपरनकामनिकेगुनवारनेकरतीहैमुकुरनिश्च यव्रजसमूहबालपुत्रादिगोपअहीरनकेह्वै पुनः रसप्रेम कुरआदर्श है भौरसपक्षार्थजानो ३०४दोहा॥अंतरहितह्वैतियनितैं हरि सब

लखयोविधान । गुन्योवचनमहिंउरकछुकनायकधृष्टसमान ३०५
सवैया जमकत्रैपदावृत्ति ॥ जोतिजगैसुमनासोतुंहीं विधिमाया
कियेबलिकालबितावै । जोतिजगैसुमनासोनहींबिधिमायाकिये
बलिकालबितावै ॥ जोतिजगैसुमनासोनहींविधिमायाकियेबलि
कालवितावै।मानडरौनकरौकछुलाजकहौवृजराजयोंकोनसिखावै
३०६ अर्थ॥नायिकाकहैहैजोतिश्रागीसुमनामालतीतेनहींजगैवि-
धिविधाताकीमायातेकियेते बलिबल्लरीताकोकालवितादेइ है
अर्थात्सूखिजायहै ॥ फिरिसोईजोतितड़िततिनकीसुमनाप्रीति
नहींजगै । अर्थात्जलौवरषाइदेइमेघनकोसोतऊबिधिब्रह्मादया
करै । बलिलहरीतेकालकालिमाजरेकीवितावतऊ ॥योंहींजोति
द्युतिसुमनामृदितातोयनहीं जगैमायानेहकेविधिविधानकियेतेब-
लिसंबोधनहैकालसमौविताइरहेहैंयौतुकप्रकटैहै ३०६ दोहा ॥
रासकरनप्रियबोलिकियअंतरहितहिअनीति । कोकौतुकीगोपाल
समलियसठनायकरीति ३०७ सवैयाचारौंपदावृत्तिदशाक्षरहोत
नहीं तनकोघनहैकहैश्रारंगनेत्रकोजोहमैंश्रारंग । होतनहींतनको
घनहैकहौश्रारंगनेत्रकोजोहमैंश्रारंग ॥ होतनहीं तनकोघनहैकहौ
श्रारंगनेत्रकोजोहमैंश्रारंग। होतनहींतनकोघनहैकहौश्रारंगनेत्रको
जोहमैंश्रारंग ३०७अर्थ ॥ नेत्रज्ञानताकोसारंगकहेदीपअर्थात्दीप
बारेहैंतेघनजोकपूरताकोश्रारंगकहेचंद्रमाकहतहैंपैघनशरीरवंतक
हौनहींहोत ॥पुनःतनसमीरताकेघनसमूहतासों श्रारंगजोपर्वतहै
सोनेत्रमृगमदनहींहोतजोहमैश्रारंगगकहेमृगहैतऊपुनःनेत्रजोपट
तनकहेबिस्तारअर्थात्तनोश्रारंग कहेसोईरंगकोताकोघनकहेमेघ
वत्करैपरंतुश्रारंगचात्रिकअथवादादुरताकोजोहमैंनहींहोत पुनः
योंहींतनकहेथोरोघनकहे दृढ़तानहींहोतजोश्रापश्रारंगश्रापनेनेत्र
कोंकहौहोकमलताकेसुखदीबेकोहमैंजोश्रारंगसूर्य्यवत्कहौहौवात
कहईकीहैकरनोश्रौरहैसोमठकोलक्षणहै३०७दोहा॥राधेनंदकुमार
गुनरनिनकोउजगपार यहिप्रकारज्ञानरसिकजनहैंश्रंगारअधार३०८
इतिआलंबनविभाव॥अथउद्दीपनविभावछंदमालिनीविकसितनव
वल्लीवृक्षवृन्दैप्रसूनै ॥ ज्ञरतमधुपरागैसौरभैपूरिदूनैमधुपमधुरगुंजै

दीपनेयोसुहावैं॥ मनहुं विसिखलीन्हेकामकीकीर्तिगावैं३०८ अथ अनभाव॥मृदुबचनविलासैमंदहासैसुधासे।दृगनिचलनिबांकोरूप केप्रेमप्यासे॥ मिलिमिलिअंगअंगैल्यायकैओठचूमै। अनुभवयह मानौप्रेमहालादुहूमै३०९ अथ आठौंसात्विकभाव सवैया॥ह्विचपलै गतिकंपिउठैस्वरकंठरुढेनदृगैअरुआनहैं। गातकोरंगनदेखोपरै ढरैंस्वेदअमैंउठेरोमनभानहैं॥ गोपिनहूं नँदनंदनकोलखिसात्वि कभावप्रभावमहानहैं। पाहनहूं द्रविकैगहेपांयसुनैनद्रवैंनरतेईप- खानहैं ३१० इतिसात्विक॥ अथसंचारीतेतीसवर्णनम्। छंदचतु रानन॥ रासविलासतैंतीसौंगोपिनसंचारिनसंचारे। कीन्हेहिर निंदनसुखेदकोनिर्वेदहिंउरधारे॥ रतिश्रमतेंबलहानिग्लानिगहि विछुरनसंकसुसंकै। यहै नदिनकरउदै असूयाप्रेमछाकमदवंकै ३११ अतिउतावलीकाज सिथिलश्रमआलसचलीनसकाहीं। मोहविकलचितभयअयानतेंमिलनतर्कचिंताहीं॥ विनदरसदुख बढ़तदीनतास्मृतिअंतरध्यानै। पियविपरीतिसराहतव्रीड़ाजड़ता परसनजानै ३१२ लहिचितचाहप्रसन्नहर्षसोइगर्वसबनिकोनिंदै गतविषादकुलत्यागसुउत्सुकक्षणक्षणरुचिगोविन्दै॥ आवेगहि दुखसुनेज्ञानघरनिद्रावश्नहिंकरणै। कंपमूर्छाबढ़तिविकलता अपस्मारसोइवरणै३१३ अमरखगुनिमेटतोसौतिमदसुत्रसोइज गिबोधै। कहुंडरतोलखिबिपिनत्रासअरुहित्थाचिह्ननिरोधै॥ काटि विरहतरुमूलउग्रतादुखकृतव्याधिवहावे। तबसंतोषज्ञानतेंलहि धृतिमतिसुपंथमनलावै३१४ सुखसमतास्वोजैमनबितरकचंचल- तासुचपलता। पियननिरखिउनमादवृथाबकमरणु प्राणबिकल- ता॥ यहिप्रकाररसरासमध्यलहिमुदितकान्हवनमाहीं लखणदा- सकविबरणेबरणतबरणहिंगेइतिनाहीं३१५ दोहा॥ देखिश्रमित सबसुंदरील्याययमुनबलबीर। जलबिहारलागेकरनहरणकामसर पीर३१६ छंदत्रिभंगी॥ लैकरिखिनवृंदायथाकरिंदाभ्रमतमिलिंदा बारिचरैतिमिलैसबआलाधँसितेहिँकालाजलनंदलालाकेलिकरै॥ कोऊजलसीचैकोउउलीचैंकेशरिकोचैंअंगमलै। कोउछपटतछाती छुटिछुटिजातीकोउमदमातीलपटिचलैं ३१७ कोउअधिपरछ-

होंपंकजकाहोंलखिजलमाहोंदौरिपरैं। मुखजानिगोपालैविह्वल बालैलखितेहिँकालैलाजभरैं॥ कोउलैपिचकारीवरषैवारीयमुन अँध्यारीरैनिकरैं। कोउभजितेहिँकालैगुणिनँदलालैवृक्षतमालै अंकभरैं ३१८॥ बिलसैंमुखबालासरिसमसालाजलचरजाला जोहिरहैं। कहुंगुणिअरबिन्दामुदितमिलिंदावृंदनिवृंदासोहि रहैं॥ तियपाणिमृणालैकहुंगुनिलालैधारिनिहालैहियोकरैं। क- हुंलैकरिप्यारीबूड़तवारीकरिमनहारीपारतरैं ३१६॥ कहुंकरिग लबाहोंतियहरिकाहोंलैजलमाहींडूबिरहैं। खोजैंगतिमीनाकोउ परवीनाप्रेमअधानाऊबिरहैं॥ गतिवारिदेवतालयायसेवताकहैभे- वताजौतकियो। सुनिहरिसकुचाहोंहियलगिजाहोंतनमनमाहीं मोदभियो ३२०॥ कहुंमत्तनदामैटटतवामैलेतीठामैगतिहंसैं। भूषणगिरिजाहोंपहिरैंताहींहरितिनकाहींपरसैं॥ करिबारिवि- हारानवपटधारानिभिगुणिसाराघरआये। कोउमरमनजान्योसो मुनिगान्योतेहिँधनिमान्योहरिध्याये ३२१॥ दोहा॥ कामविजय यहकृष्णकीगावतकामहिदानि। इमिक्रीड़नकरकामतौतासुकाम प्रदहानि ३२२॥ धर्मवान्‌भगवानहैंधर्मठानजगजान। धर्मनया- वनईशहूश्रवनकरियनहिँकान ३२३॥ सवैयाअर्थकश्लेष॥ नृ- त्यऔगानसुबाजेसजेवरबर्णअनैबलशत्रुनिकन्दन। रंगअबीरसु भागयुतैतियभूषणबासनभोगनबन्दन॥ लोकसुनंददियोपदगोन सुकालहिगोत्रगहेनगमंदन। पूजनअंबिकाफागुतथाशँखचूड़ैवि नाशकियोनँदनंदन ३२४॥ अर्थ॥ अम्बिकापूजनऔबीरीरंगपट पुष्पादिभागतियभूषणवरश्रेष्ठअक्षरतेंवर्णस्तुतिलोकदेहनंदकीका लसर्पनगमंदनवृक्षादिजारनेवाला फागुबर्णस्वरूप बलराम शत्रु- निकन्दनकृष्ण नगगिरिमंदनउत्कर्ष शंखचूड़यरदूलहबनेकाबल करिकै शत्रुकेबलकोनिकन्दनसोकछुबन्दनहोहै ताकोलोककाल भयेतेंगोत्रगिरिपैअमंदनग ३२४॥ दोहा॥ चढ़ुंपगतोरतमोरिम दपुच्छतुंडकरिभंग। वृषभासुरकेशीहन्योकेशवएकप्रसंग ३२५॥ व्योमासुरव्योमहिपठैआयेसखनिलेवाइ। मिलेककाअक्रूरतब हरिकोप्रेमबढ़ाइ ३२६॥ सवैया॥ स्यन्दनस्वर्णचक्योरसलोटत

बाजिभलेदिनकोसहू आयो। पायपर्योयुगबंधुकेपूतकेपूतभयोदृर
श्योमनभायो ॥ नैनरहेथकिबैनउठैनखड़ेतनरोमसुआंशुचलायो
देखिककैइमिरामहुश्यामढिकैमतिपूजितधामबसायो ३२७ ॥
छन्दमोतीदाम ॥ कियेहरिरामसबैसतकार। लह्योअभिरामसु-
फल्ककुमार ॥ मिलेपुनिनंदअनंदबढ़ाय । दशाकहिकंसप्रसंगवि-
हाय ३२८ ॥ जहांनिरदैप्रभुतासुसमीप । प्रजाअजज्यौंचिककेे
कुलदीप॥ बध्योभगिनीसुतजोबहुबार।कहाकुशलैढिगतासुतुहार
३२६॥तहांहरिरामएकंतहिधाम । पिताकुलकोकुशलातललाम॥
सुबूझिसबैकहआगमकाम। कह्योतबगांदिनिनंदनमाम ३३० ॥
हन्योवृषभासुरकोजबलाल । तबैमुनिनारदकंसनृपाल ॥ ढिगैं
चलिदीनसबैकहिहाल । भयोतुम्हरोअबकालकराल ३३१ ।
नजानततूयहहालअजान । जन्योसुतदेवकिकोब्रजथान ॥ दि-
योबसुदेवनिसिपहुंचाइ । सुतानँदल्याइदयीतोहिँआइ ३३२
सोईसुतकृष्णनन्दकुमार। बकोबकआदिबध्योबलवार ॥ तथा
तिनकोसुतरोहिनिजात । बलीबलकीनप्रलंबनिपात ३३३ सु-
नेकरकंसपितातवध्वंस । तबैलिखयोमुनिशोषप्रसंस ॥ बधेइन-
कोउनकोलहिहौन। करैतिननेतबधैंबलभौन ३३४॥तबैतुवमा-
तुपिताकहधाधि। पठैइतकेथिहिओछलनाधि ॥ करैधनुयज्ञसुदे-
खनकाज । बोलावतुहैमिसिकैब्रजराज ३३५ ॥ पठैहमकोठट
मल्लप्रबल्ल । तथामदमत्तमतंगविमल्ल ॥ तिन्हैकरिकैतिहरोच
हघात । भयेतेहिकेयदुवंशनिपात ३३६ ॥ सुनेइमिकेवलभद्रमु-
रारि। दुखौसुखहासप्रकोपनेवारि ॥अनंदितनंदहिदीनसुनाइ।
अहैतुमकोपितुकंसरजाइ ३३७ ॥ तहांहमहूं चलिहैंतुवसंग । ल
हैंधनुकेमखकोसबढंग ॥ भलोकहनंदसुग्वालबोलाइ।दियोब्रज
मैंसबकोगोहराइ ३३८ ॥ अहैनृपशासननाजहुसाज। प्रभात
चलैंमथुरैब्रजराज ॥ सुनेहरिहूंयुतमैनतनंद । भयोमुखगोपिन
चंदसुमन्द ३३६ ॥ दोहा ॥ ब्रजनारिनकेप्राणप्रियश्रीबलभद्र
गोविन्द।तिनबिछुरनसुदशागई छईदशानवनिन्द३४० ॥ तत्रदशा
वर्णनम्। छन्दगीतिका।अभिलापदशा ॥ ललेलाहैंभापैंसुरुचि

अभिलाषैंखिलनको । सबैगोरीभोरीझपकिकरिचोरीझिलनको॥ मिलेनेनै वैनै मिलतदिनरैनैहिलनको ॥मिलौंश्यामैवाभितवपि मनकामैमिलनको ३४१ ॥ चिंतादशा । दशाचिंतै चिंतै निरखि चितचिंतेकविनको ॥ अँगै अंगैसंगैतियनमनरंगैदविनको । जो पैप्रातैजातेहमैअवन्रातैतविनको ॥ गुणैजेहौंपैहौंवरमल्लवैहौं छबिनको ३४२ स्मृतिदशा । सुखैसौरैदौरैमनसमृतिभौरैनिवस अभो। मुखैचंदैंबंदै अँगनिहरिफंदैबिवअभो॥दृगैओभैलोभै अधररस क्षोभैजिवअभो । हियेलागैरागैगुणतिंहतिभागैदिवसभो ३४३ ॥ गुणकथनदशा ॥ गुणैगानैगानैगुण कथनजानैतरुणिको ॥ कहूं चालैचालैकहूं बनमालैथरुणिको । कहैअंगैअंगैछबि अनअंगै दरुणिको ॥ सुनोगावैगावैतकनितिरछावैबरुणिको ३४४ । प्रलापदशा ॥ बकैध्यापैतापैदरअतप्रलापैजनमको । प्रजानाथै गाथैकहतिकरहाथैकलमको ॥ बनैतोपैजोपैलिखतचितचोपै नलमको । हमैंजोवैगोवैविरहनहिंहोवैबलमको ३४५ । उद्वेगदशा ॥ विथावेगैतेगैउदसिउदवेगैअकलहै ॥ हरीकेहैनेहैलगत सुखगेहैनकलहै । सखीसीखैतीखैश्रवणनहिंचीखैजकलहै ॥ दृगै देखैलेखैदरअहतवेषैसकलहै ३४६ ॥ उन्मादशा । बिनास्वादै जादैकरनिउनमादकरतिहै । नदैधामै आमैचलति पुनि ठामै अरतिहै॥ चलेग्वालैबालैसमुझिउरलालैधरतिहै । सखीथंकैझंकै तरुणितरुअंकैभरतिहै ३४७ । व्याधिदशा॥विथाकामैवामैसुअंग दुवरेव्याधिपियरे । तपीब्यापैतापैकछुनउबरेगातसियरे ॥ करैं पौरैसौरैजिनतिनखरेज्वालहियरे । कहैचंदैमंदैकरझरजरेवाल जियरे ३४८।जड़तादशा॥ मनौंमाहींताहींसुअंगजड़ताहींथकित हैं। कहैंबामैश्यामैचलतमथुरामैंछकितहैं ॥ नहींएहैंजेहैंअमित सुखपैहैंजकितहैं । लहैनारीप्यारीनिपुणपुरवारीतपितहैं ३४९ दोहा ॥ विरहविथाइमिब्रजतियनिबीतीरैनिसमाज । गोपसकल साजनलगेसकटसकलभरिसाज ३५० करिमज्जनअक्रूरतबकालिंदीकेनीर॥ अर्घ्यपात्रकरिसाजिरथनंदनिकटगोधीर ३५१ छंद इन्द्रवज्रा ॥ नंदौप्रसंदैसकटैसजायो।दूधौदहीमाखनसोंभरायो॥

अक्रूरसौंयोंकहप्रीतिराखे। बोलौदोऊबालकजानभाखे ॥ अक्रूर तौआशुबोलाइल्यायो। रामैंसश्यामैंरथपैचढ़ायो ॥ बोल्योपुरी पासरहैपहूंचो॥ कीन्ह्योतुरंगैतुरबागऊंचो ३५३ चक्रैरथैघरघर घोसमचयो। गोपीसुनेसर्वसकानिछ्यो। हाहापुकारैंकहि श्यामरामा॥ नातेकहांत्यागिसुकेलिधामा। ३५४ क्रूरसंगैजा तविहातप्यारो॥ वाळापनैप्रीतिसवैंविसारी। भूलीसबैबात बतातजेहो॥ प्यारीकरीप्रीतिसुतोरतेहौ ३५५ दौरैं गिरैंफेरि सम्भारिधावैं। बेनीछुटैटूटतमुक्तदामै॥ अंगैरजैसंगरुदैउचारे। दीन्हेकहाजातआधारप्यारे ३५६ लागीरथैजाहिंपथैसिधारी। आगीहियेसींचतनैनवारी॥ हाहास्वरैपूरनिहारिनारी। थाके जड़ौअंबरऔनिचारी ३५७ बालाबिहालालखिनंदलाला। लोलै चितैवैनकहैरसाला॥ ऐहैंबूजैहौंनचलेविहाई। बानीजियै मरिहिऐसाई ३५८ भाषेसखात्योंसुबलादिकाहीं। गोपीसबै सोक्षतभेतहाहीं॥ तौलौचल्योस्यंदनचंचलाई। छाईरजैनैननि नालखाई ३५९ चक्रैरथैंत्योंनलख्योपताकै। धूरौघसीत्यों गिरिहायहांके॥ गोपीइआभाखिनजातिभाखे। प्रानैप्रियाआवन आशराखे ३६० वेगैरथैपंथसुश्यामरामा। आयेकलिन्दीतटयौस जामा॥ अक्रूरअन्नानसुधानगाने। सूखेमुखैकोमलगातजाने ३६१ दोहा॥ न्हाययमुनजलपानकिय बलरामहुघनश्याम गयेन्हानअक्रूरलहिसीखसौखदैठाम ३६२ गायत्रीजलबूड़िजपि तहंदेखेदोउभाइ। पुनिबाहरभीतरलखे चकितचित्तभ्रमछाइ ३६३छंदभुजंगप्रयात॥ तहांवारिबूडेलख्योशेषबेषै। सहश्शीश आभाअखंडेअशेषै॥लसत्कुंडलाकारलंकारभासै। तथानीलबासै विलासैप्रवासै३६४॥लसैभागनैमध्यतापूर्वश्याम॥ धरेपीतबासै प्रकाशैललामा॥ नखैचर्णकेहर्षसंतापवारे। रजैराजसैज्योंसु- सत्वैकतारे ३६५॥ लसैगुल्फएड़ीगुलाबैजपासी। तलैचर्णकेरेख छवैरेनुभासी॥ युतेनूपुरैमंजुलैपायलाली। जुरीकोकनदैमनो आलिआली ३६६॥ सजैजंघजानूरुशोभहीको। नितम्बैबढ़ेहैं कटोकेपटीको॥ लसैकिंकिनीत्यौंबजैमंजुसोहै।पटैपीतफेटोलपे

टोविमोहै ३६७ ॥ सरैनाभिसोपानसीत्रिबलीहै। उरैशोभसो चलदलैहरलदलीहै॥कपाटैनटैबक्षलक्ष्म्याद्विधामै।तृषैकंधस्वनजनेऊ सुबामै ३६८ छटाचारुछाजैचतुर्बाहुमाहीं । लियेशंखचक्रैगदा पद्मकाहीं ॥ भजैअंगदैपानिपहुंचीकड़ेहैं ॥ तथाअंगुलीमूंदरीसो मढ़ेहैं ३६६ दरैनीररैकंठकंठादिछाजैं। लरैमालरत्नै प्रसूनैस-माज ॥ बनीपोठिपाटीसिरै सोध्यसोलै । पढ़ैसर्बविद्यास्वरैसर्ब बोलै ३७० महामंजुठोढ़ीरसालैरसाली । लसैओठलालीप्रबालै बिहाली ॥ प्रभादंतमुक्तामनीहीरमैहै । दिपैहासजोन्हैमुखेसौर भैहै ३७१ रसैदेविजीहाकहैमेघबानी । लसैरागतांबूलयेलादि सानी॥कपोलानिगोलेलसैंआरसीसे।सुकैतुंडसोतुंगनासाहुदी से ३७२ हगोकंजसोहैलखेमोदकारी । समैबानभ्रू चापका-नानिचारी॥ लसैंऔनशोभाभरैकांतिपूरे । मकर्कुंडलैकेथलैनेह रूरे ३७३ सजैअर्द्धचंद्रै ललाटैसुठाटै । दियेऊर्द्ध पुंड्रै रमाकेक पाटै॥ लसैशोभअलकावलीभौंरभोरै। किरीटैदिपैकोटिमार्तंड हौरै ३७४ तथापार्षदसेवैं सबैआत्मबादी । ऋषैदेवगंधर्वकिंपूर्षआ दी ॥ सबैदासनंदै सुनंदादिनामैं । सुरुद्रादिब्रह्मादिइन्द्रादिभामैं ३७५ श्रियोकांतिसत्यादिसक्तीसमेतै । लसैआदिमध्यांतहीनो सुसेतै ॥ सुविद्याअविद्योदुधामंजमायो । खड़ीमूर्तिमानैलखेचि त्तचायो ३७६ तथासर्ववैकुण्ठधामैललामैं । लख्योथावरैजंगमै-युक्तभामैं ॥ पग्योप्रेमअक्रूरदण्डप्रणामैं । कियोह्वैविहियोशुद्धभो कांतिगामैं ३७७ दोहा पुलकप्रफुल्लितअंगरुचि रोमखरैजल नैन । कियअस्तुतिअक्रूरअति आनँदगदगदबैन३७८अक्रूरउबा-च ॥ छन्दअमृतध्वनि ॥ विधिहरआदिअनादिप्रभु नारायनप्रदसु क्खा।नामरूपलीलाविपुलदुक्खक्खटनपुरुक्खदुक्खक्खटनपुरु-क्खक्खुलतसुरुक्खखुधिवर । छज्जज्जनतनबज्जज्जसतबभज्ज ज्जुधिवर ॥लहमस्सनकजुरस्सस्सतजनवस्सस्सिधिहर। सव्वव्व सतप्रभव्वव्वपुषअभव्वविविधिहर३७९दर्पनएकुमैं बिम्बएकज्यों प्रतिबिम्बझलक्क । त्यों सबहियदरशौजयतितक्ककरिहमजक्क ॥ तक्ककरिहमजक्कदनअसक्कक्करमनि ॥ सुद्धद्दरिप्रभुरुद्धद्धरक

समुद्दद्दरमनि। रगगगहितनमगगगतिजपभगगगरपन ॥ सद दरसगरद्ददब्रजभयरददरपन ३८० ॥ दो० ॥ मुनि अस्तुति अक्रूरकी प्रभुभे अन्तर्द्धान ॥ तबजलतेकढ़ि कर्मनित करिआयो हरिथान ३८१ लखि हरिकहंकहतुमककाा कौतुकलखेनहात ॥ केजलअवनिअकाशकी कहहुनतयसबबात ३८२ जलथलअंबर कौतुकनि हैं सबतुममेंनाथ ॥ सो देखेदेखिहैं सदा चलिअब करहुसनाथ ३८३ ॥ छन्दशार्दूलविक्रीड़ित ॥ वासीपंथसमीप वृन्दपथिकैआनंददैस्यंदनै। आगेदेखिपुरीसुपासपरिखेप्रीतेमि लेनंदनै ॥ अक्रूरैगृह भेजिताहिथलमैंडेरोकियोबंदनै । वाकी यामदिनैलखैसुनगरैगंवृन्दलैनंदनै ॥ ३८४ तीनोंलोकपुराणगान मथुरान्यारीप्रभारंजनी। देखेधामअरामठामनरत्योंनारीदृगैखंज नी ॥ पायेप्रेमप्रमोदपुंजयहूबोले मिलेकंजनी। ऐसो कौन सुजोहिजौनहरिको हावैनहींसंजनी ३८५ देख्योजातपोसाक पुंजरजकैलीन्हेंरंगेपासहैं । मांग्योबुद्धिबुझाइतौनगरवैवै नैं क- ह्योनासहैं ॥ ह्वैकैकालकरालकृष्णकरसोंकाट्योशिरै तासुहै। भागेसहविहायगट्टुसबतौलूटठटबासहै ३८६ वासैसाधितघ्योस- साधुदरजीवासैदुहू लोकहै । मालाकारसुदामदामरचिदैभोराम हींवोकहै ॥ अंगैरागप्रसंगभागकुबिजाभोजागतैथोकहै। की न्हेंप्रेमप्रपंचक्योंनकरिहैश्रीकृष्णतूजोचहै ३८७ बागेहाटकहाट ठाटठटिकैभेटे सबैप्यारते । बानीवृन्दबजाजपुंजबरईस्यौं जौ हरीचारते ॥ पूछेफेरिसुरंगभूमिचरचा चाहेंचलेद्वारते ॥ रोकेहू रिसिरोकिजाइनिरखेशोभासभाकारतें ३८८॥ छंदझूलना ॥ खंडि कोदंडको चंडआखंडरवारचतुर्दशभुवनब्रह्मांडमंडयो। जोतिरख- वारबिकरारबलवारसबभूपसरदारजिनदेवदंड्यो ॥ ठट्टकेठट्ट तिमिभट्टनृपकंससबध्वंसकियधारिधनुखंडखंड्यो। रक्तभरिकुण्ड बिनशुण्डवितुण्डदोउरुण्डमुण्डानिझुण्डनिछंड्यो३८९दो०॥ जो- ह्रिमोहिनरनारिसब रणजैलहिसुखकन्द । बासुदेवनिवसेशिविर पूजितनन्दप्रसंद३९० ॥ छन्दनाराच। बिध्वंसयज्ञकंसदेखिलेखि भूरिभीतिहै। सशोककूरस्वप्नपेखिजागिरैनिबीतिहै ॥ उठेप्रभात

होतभेअमंगलैभयावने। तऊअचेतरंगभूमिसासियोसजावने॥ ३६१ पुजायरंगभूमिठट्टिउच्चउच्चमंचकों। पताकपुंजतोरनौप्रसूनमालसंचकों॥ स्वनायकैअखारदीनदुन्दुभीधुकारहै। प्रचंडअडंबडंछायचारिवोरपारहै ३६२ सुनेसुबन्दरंगभूमिमालकेतमासनै। प्राजानिपुंजआइबैठजोहियोनआसनै॥ नरेशहूंअशेषवेशठाटठाटिआइयो। मफौजतत्तिफौजपत्तिभोजपत्तिआइयो ३६३ बिराजतोसुराजमंचमंत्रिनादिकंसहै। तथानृपालयोगमंचबंधुभृत्यवंशहै॥ तुरंगरत्थभीतरेबितुण्डझुण्डद्वारहै। करालरात्रिचन्द्रपर्वतारज्योंकतारहै ३६४ ॥ विशालमालतालठोकिकालसन्दगज्जहीं। सुरंगअंगधूरिपूरिकैलँगोटसज्जहीं॥ सगिर्दगिर्दचारिहूंचमंकतेसुजेवरै। पहारकोउग्वारतेजोहारतेननेवरै ३६५ ॥ बिलोकिभोजराजसाजनन्दकाइँबोलियो। गयेतेऊदियोसुभेंटमंचबैठकेलियो॥ बिहाइरामकृष्णकौंसिसाइठामकैगये। नहानखानकेतेऊसवाउआवतैभये ३६६ छन्दझूलना। कृष्णबलभद्रलहिभद्रचलिदृष्टिदियकुवलयापीड़आक्रीड़ठाटे॥ धारदिक्कारचिक्कारपविपाततड़अंगपाहारभिरिभृगचाटे। बैठठटिदुष्टअंबष्टगजपालशिरसुष्टकसकर्त्तमदझर्त्तगाढ़े॥ दीहदन्तारकरिरंगमहिद्वारनहिँटरगंतारहन्तारबाढ़े ३६७ बारसंभारकरिकृष्णबलबारभटपीतपटठाटिकटिडांटिटेरे। खर्वगहिगर्वगनुसर्वसरहमहितोहोअनहिँजातढिगकालरेरे॥ शंकबिनतौनअतिवंकहनि अंकुशहिशीघ्रशुंडालबिकरालफेरे। रटतनहिँछटतअवफटतबहुभीरबढ़िकटनतटकीनदुहुंभटननेरे ३६८ ब्यालबिकरालतहँकालस्वरगर्जिकरितर्जिगहिलीनकेशीनिहन्ते। झपटिचटछूटिभटकृष्णकरिशीघ्रठटनिकटचलिघाततलकीन्हुन्ते॥ घर्णचहुंखोटतेहिवोटकरिकोटसमठाढ़भेगाढ़भोभूमत्ततंते। हस्तगहहस्तसोमस्तकैगंधतअमस्तताअस्तहनिकियतुरंतै ३६६ जाइपुनिपुच्छगहिरुच्छहरितुच्छसमजंगथतहस्तमातंगहीटो। जोरकरिठोरनहिंठाटरहवीरदुहुताकिटरिजातनटिकैझझीटो॥ भ्रमतभोभ्रमतजलवभतचिक्कारिकरिदुष्टअंवष्टहूंमानमीटो। सिंहसमगहनिनरसिं-

हचलहट्टसमठट्टवनघट्टमारुतखखीटो ४०० रुद्दपुनिपृष्टमृवमुष्ट हतिभाग हरिलागसंगरपटितवद्पटिठीके॥ धोखदैदौरितहं वैठगो-विंदतबदंतहतिदंतिगिरिगोमहीके। पैठक्षितिदंतभगवंतगेतड़कि तबउपिक्षिक्षितिउछ्योग्चंवष्टप्रीके॥ देखिइमिजंगभुवभंगबलभद्र कहँहनहुमातंगयहिढंगनीके ४०१ शुंडवितुंडभजदंडगहिचंडहरि पटकिगिरिखंडसमचर्णदैकै। दंतगुवँतउकखारितेहिधारिकरिश्रंत च्चंवष्टकियनेकुहैकै॥दंतवियलीनबलवंतबलभद्रतबपीलभोमर-तचिक्कारकैकै। चौरकरिपालबलकालविकरालदियदंतिहनवाय तिनबंतभैकै ४०२ छन्दपद्धरी॥ मातंगबंतदोउधारिकंध। गेरंग भूमिदेखनप्रबंध॥ जोहेतहँ जीवनित्रिगुनयूप। ग्रानंदन्यायकाल स्वरूप ४०३ चाणूरशूरतहँगर्वधारि॥ बलकृष्णवोलिबोल्योउचा रि। हौमल्लयुद्धतुमदोउप्रसंस॥ सोदेखनबोल्योभूपकंस ४०४ ह्वैयासनसाधवतमहिंधर्म। परलोकलोकनिस्सोकसर्म॥ जो कहोलड़ैं नहिंतौउदार। सबजानतगानतग्रंगतुम्हार ४०५ कह कृष्णकीनकसणानृपाल॥ वनबालकहांकहंजुद्धमाल। पैपैज पूरकरिहैंपरन्तु॥नहिंहोइबलाबलधर्महंतु ४०६ चाणूरक-ह्योतुनप्रबलदोउ। लरिहैनहिंतुमसौंग्रवलकोउ॥ यहधर्म सभानहिंहैग्रधर्म। लरियेहममुष्टिसंगसर्म ४०७ चाणूरबैनसुनि यगुललाल॥ दैताळतड़ातड़ग्रतिकराल। गेपैठिग्रखारभूमि रंग॥ संगमल्लमल्लयुद्धैउमंग ४०८ चाणूरभिर्योतहंकृष्ण संग। मुष्टिकबलसंगैकैउमंग॥ ज्योंवृषभवृषभगजगजभिरंत। ग्ररुसिंहसिंहस्यौंभेलसंत ४०९ छंदरूपमाला॥ भेभिरावतकर्म कर्मनिचर्णचर्णनिफेरि। लपटिलागेलरनचारिउदावँपेचनिवेरि॥ खैंचिझेलतमुष्टिमारतजानुठोकरठट्ट। हस्तकैग्ररुमस्तकैभिरिभि रतभेकहुंपट्ट ४१० चिट्टताकोकरतहिट्टतहोतग्रतिघमसान॥ दावँपावतउपरग्रावतकूदिसिंहसमान। उठतदोउप्रतिपेंचसाधत हाड़हाड़कड़क्क॥ पटकिदेतधड़क्कदैतबउठतऊबिपड़क्क ४११ कर तपेंचसुकमरपेटाकड़ककालौफांस। कलाजंगौकसोतरकसतौर कसकरिभास॥ काळचोळीकड़ाकोल्हूलाटबैठकफाव। ठानकैलो

हकानचीतेलपकबकरकसाव ४१२ ॥ बालमांकड़गिर्दबाहुँनेबा जबंधप्रकार। बांहबलीबिचारिमोतीचरहस्तिचिघार ॥ आरसी असवारिझोरोडेवटौमर्रीहि। पटामोजासामनीझपकीउचाटाचा- हि ४१३एकदस्तिदुदस्तिहूं रूंदस्तिधोबिपछार। इन्हैआदिकआड़ टोरहुपेचंनामअपार॥ देतदाहिनबामआगेपाछूहूं परबीण। कृष्ण अरुचाणरतिमिबलभद्रमुष्टिककीन्ह ४१४ जोरकरतसुवक्षवक्षहि हाथहाथनमोंड ।हाड़चूरणहोइजातेहोइअंगकोंपीड़ ॥ रेलिदेत पछेलिकहुं कोउमेलिदेतउठाइ। दपछाड़अखाड़गाड़तवेगवर्णि नजाइ ४१५ छूटिठाढ़ेहोतकहुं हठिकछुरुपनिलपटात ।भ्रमत गँवताकतफिरतकहुं बारबारलखात॥ भिरतफिरतहु गिरतथिर तहुंगनतभूमकछुनाहिँ। द्वैअधीरनधीरह्यागहुपरसपरवतगाहिं॥ ४१६ छन्दपद्धरी॥ तहँजानिसबल्लअबल्लजंग।अंगमल्लप्रबल्ल किशोरसँग॥ भेदुखितसंतहरषेअसंत। कहंनारिगारिदेतिनहिं तंत ४१७॥ यहराजसभाहोतोअधर्म। बैठेकतसज्जनज्ञानकर्म॥ नहिंबर्जतभूपनजातगेह। सखिचलहुधामलखियेनयेह ४१८॥ कहँमल्लप्रबल्लबिसल्लअंग। कहँछोरेथोरेबितनिजंग॥ पापिष्ट भूपदियइनभिड़ाय। सोलखबपापपूरोलखाय ४१९॥ गुणिस- भासदनदूषणमहान। नहिंज्ञानवानगवनैदिवान॥ जोउचितकह- ततौभूपकोप। अनउचितकहेहैधर्मलोप ४२०॥ सुनिबालअपर बोलीसचैन।लखुलालछलीलोलैतुंभैन॥ दोउभ्रात्रवीरनिरशंक जात ।नहिंशिथिलआपदिकरिहैंनिपात ४२१॥ बलकृष्णसुयश कहिसकलभाति। कियग्रोतछनारिनजग्तछाति॥ बसुदेवसदेव किमंचबैठ। देखेसुतसंगरभीतिपैठ ४२२ ॥ तहंकुलिशकठिनह- रिअंगघात। भोचरपूरचाणरगात॥ द्वैसिथिलथकितकरिवेगरुष्टि। तहंहन्योहरिहिंउरदोउमुष्टि ४२३॥ तेहिगनिनकृष्णभुजगहिभ्र- माय। दियपटकिभूनिजनुबजकाय॥ गेनिकसिप्राणभेबिलगवार कटिजोहरुश्रोणिनअंगद्वार ४२४ ॥ प्रथमैयहिमुष्टिकमुष्टघात। बलभद्रकीनकरतलनिपात ॥ सोलगतमरयोमुष्टिकप्रबल्ल। भे ठाढ़गाढ़तहंबिबिधिमल्ल ४२५ ॥ कवित्त घनाक्षरीकिरवान॥

भयेमुष्टिकचाणूरनाशकूटमल्लबिनत्रासजाइ रामपासहन्योमुष्टि-
कमहान।कियोकछुनहिँख्यालराममारच्योतेंहिँमुष्टिबामममुष्टिकेके
ठामगयोसोऊबलवान ॥ चह्योमल्लतहंतेगघातमारच्योयदुनाथ
लाततासुकोनिपातभयोशोशबिथरान । तहांअतिवेगवानतोसल
महानमल्लदोरिश्योभगवानझुकिझारीकिरवान ४२६ ॥ दोहा ॥
छवेनगईकिरवानकहुं केशवअंगप्रबल्ल । तेपदहतितोसलहत्यो
लखिभागेसबमल्ल ४२७ छन्दपद्धरी ॥ भजिमल्लगयेतबराम
श्याम । लेसखनिकियोबहुपेचदाम ॥ भेमुदितसकलपुरजनप्रवी
न। बाजेबहुबाजेगतिनवीन ४२८ सुनिभोजराजदुन्दुभिधुकार ।
करिअरुणआंखिकोन्ह्योउचार ॥ मतिमंदबंदकरुदुन्दुभीन ।पुनि
भासनटेरतभटनदीन ४२६॥ वसुदेवसुतनिखेदहुतुरन्त । ममदे-
यरहैंतौकरहुहन्त ॥ सबग्वाललूटिबांधहुजुनन्द । बसुदेवहिमार
हुजानिवृन्द ४३० पितुमोरलालचीराजिजौन । हैशत्रुमित्रब-
धिजायतौन॥तेहिंरक्षपक्षकरतारसर्व । बधिजाइँबचैंनहिँनेकुखर्ब
४३१ सुनिभूपवैनधायेसुभट्ट । धरिअस्त्रशस्त्रबहुठट्टठट्ट ॥ धरि
मारुनिकारहुशब्दसंच । सुनिकृष्णकूदिगेकंसमंच ४३२ लखि
कंसलालकालौकराल । अरिभालगह्योकरबालढाल ॥ बिनत्रास
अकाशबिलाशबाग । गौंलागजागरिसिमनहुनाग ४३३ ॥त्योंदा-
वँकृष्णताकततुरन्त । संगमातुलचंबरभेभ्रमंत॥ दैलनमुखदाहिन
वामअंग । बचिजातघातआतुरप्रसंग ४३४ करिवेगकान्हचलि
पृष्ठिदेश । गहिलीनक्रोटयुतकंसकेश ॥ चलिसकीनाहिंताक्षणकृ-
पान । झझकोरजोरतेभोमलान ४३५ नहिँसकेमित्रमंत्रीबचाय।
यदुरायमंचतेदियगिराय ॥ ज्यौंकरीलहेकेहरिप्रहार । गिरितेगि-
रततिमिभोपछार ४३६ ॥ जबकंसभूमिमधिपरयोदृष्टि । तबकू-
दिपरेयदुराजपृष्टि ॥ चहुंकितकठोरिपनिपकरिकेश । दियमुक्ति
पतितपावनहमेश ४३७ ॥ तेहिसमयकंकनिग्रोधआदि । बसुबंधु
कंसकेअतिप्रमादि ॥ धायेप्रचारिबहुशस्त्रझारि । बलभद्रभिरेतिन
परिघधारि ४३८ कवित्तरूपघनाक्षरी ॥ उठ्योकंसभ्रातजहां
वंकअरीरौभटमहाबंकनेकुनहीशंकहियेशूरताभुलान । तिन्हैंनहिं

कृष्णहेरेकर्षतहोंकंसकेरेवेतौमारुधरटेरेनेरेजाइदरम्यान ॥ तहां नैनकरिलालमनोकालहूकोकाल चहूंवोरकरिख्यालछलियोद्वारते ससान। सबैशत्रुनिश्रमद्रधार्योमित्रनिकोभद्रसार्योझुकिबलभद्रझार्योपरिघमहान ४३८ लगेकेतेमाथफूटेश्ररुकेतेनकेटूटेहाथ केतेजूटेंएकैसाथकूटेमनोपान ॥ बढ़ेकेतेअस्त्रशस्त्रझारैंकेतेहायहा पुकारैंकेतेकहैंदौरिमारैंकरिघमसान । बहैश्रोणितकीधारबड़ीयोगिनीजमातिखड़ीमानोपर्वपायमड़ीभीरसरितान ॥ जबआयेकंसभ्रातथानकरिकैकुवैनकानझुकिबलभद्रझार्योपरिघमहान४४० कियोलुथ्थनकोयुथ्थतहांभूकोदीपभारीमहा श्रोणितभर्योहैपूरसागरसमान। फेरिआगेजाइमार्योदीपदूसरोसम्हार्योकियोत्योहीवेगधार्योकैकतार्योनिरवान ॥ सबैआईअरिथोकघेरिमानोलोकालोकरोंकिसोअथोकरह्योक्षीरधिप्रधान। मध्यकेशवसुमेरुअद्रसातौदीपपैसभद्रझार्योझुकिवलभद्रपरिघमहान ४४१ जहांसबपैसिधारैंअस्त्रसबकोसम्हारैंअस्त्रसबहींप्रहारैं रुक्षरुक्षसमथान ॥ तहांदेखैंवलवंतपैनहोंतलतेगंतकछुएकैहैंलसंतधौंअनंतभगवान। गिरैवीरजोविलासकोपिताकोभिरैपासवाण लेखेनहीं नाशमहाआशवलवान ॥ रहेसवैकृष्णश्रोररुकिजावैनहीनेकुहुकिझार्योबलभद्रझुकिपरिघमहान ४४२ जहांछायेवेप्रमाणवाणसूझैंनहोंआसमानघोरघनकेसमानघहरेनिसान। ठठोंकेतीतड़ितानमनोचमकैंकृपानशब्दघायलकोजलपानचातकरटान ॥ सबैकंसभ्रातप्रानभयोहंसकोपयानयदुवंशहरषानलसैं पावसकिसान । तहांपविकेसमानधारिपैठिमानौमघवानझुकि बलभद्रझार्योपरिघमहान ४४३ सवैया ॥ वंदिविहीनकैमातुपितैउग्रसेनैनरेशसुदेशशृंगार्यो । बाढ़िबढ़्योयदुवंशसुखीमतिमंदमहीपनकोमदटार्यो ॥ नंदविदाकैकियोजगवंद्यककाकुबरीकोकर्योसतकार्यो । मारतकंसकेगोकुलनाथसंगैएकलातहुकाजसम्हार्यो४४४दोहा॥ जबतेगवनेमधुपुरीगांदिनिसुतसंगलाल । तबतेंचित्तविहालश्रतिग्वालबालब्रजबाल ४४५ विरहिनितियवेधतविशिषचितकठोररतिकंत ॥ तापैअतिशंकितभईआगमदेखिवसंत ४४६ रसअं-

गारसंयोगश्रौवरषयोरासविलास। तथावियोगप्रवासकछुमतिशु
षकरौंप्रकास ४४७ श्रीराधावाक्य ॥ कवित्तघनाक्षरी। प्रवासवि
रहायथा ॥ ऋतुराजसाजिदलश्राजुचढ़िश्रायोश्रलीभाजिचलिबे
कोकहूं ठाउँनादेखातहै। ठौरठौरनौतमरसालफूलमालनिपला
शनिकदंबनिपैश्रधिकसुहातहै॥तिमिलखनेशजूयेकोकिलानशो-
रकरिहियमेंबढावैंमैननैनवरसातहै। जोवविरहीकोधरयोपात
सुनैयाकोकरैविशिष सुवातपातपातपातपातहै४४८पुनर ॥ श्रायो
ऋतुराजतजैशीतलसमोरतीरपीरएहियेकोकहौकैसेकैपटाइये।
ऋतुदरशानलागोफूललागेफूलनहैं धूरिलागीउड़ैंचैननेसुकनपाइ
ये ॥ भौंरफूलरसलेनलागेजागेहैंश्रनंगरंगरंगकीतरंगश्राइहियमें
समाइये। धाइयेकहूं कोजाइधाइयेकहूं कोजाइधाइयेकहूं कोजा
सोंविरहसिराइये४४९ श्रायोऋतुराजडोलैंसुमनपलाशलगीप्रीत
मकीश्राशजकीश्रासपासहेरौंरी॥ कूहकूहकोकिलाकीहूकहियहूकै
श्रलीभाषतबनैनहालमुखवैनफेरौंरी।कहिलषनेशफलेकचनारसे
मरसोवारिश्रागिदेतप्राणप्रीतमकोटेरौंरी॥श्रावतोनयेतोदुखभाव
तोविदेशछायेलयावतोनकोऊहितूकौनकोनिवेरौंरी ४५० पुनर॥
सीतभानवानहनैचंडयेमरीचिनकेश्रंगश्रंगमेरेपीरकरतदराजरी।
रुजसजीसुमनसमूहश्रतिसौरभसौं देखतहोनैननसोंलागैदुख
साजरी॥भूषणश्रृंगारमोजियेकोशाजुशूलसमदूषणसमानसबया-
मिनीसमाजरी। विनमनमोहनवियोगकोलपटधारितरनितरैया
भयेमोकोंश्रलीश्राजरी ४५१ पुनर। सिंहावलोकनघनाक्षरी॥
धरकीनचित्तकहूं रसमैंपियाकेभरीवसकैकियोतैंनेहछोड़िलाजक
रकी। करकोहियेसों श्रागिवरकोनमोकोंश्रलीछिनछिनकीने
सुधिछातीजातिदरकी॥दरकीसुचालछोड़िबावरीवसंतभईलषने-
शमुसुकयानिभूलैनासुघरकी।घरकीनपरकीनपरकीनजरकीनश्रावैं
बुद्धितरकीप्रवीनगिरिधरकी ४५२ पुनरराधावाक्यकवित्तसवैया।
जंजीराजोर ॥ बौरहैंमंजुरसालनिमेंलषिहोतहियेश्रतिकामको
जोरहै। जोरहैधीरकछूसोभग्योचहुं श्रोरतेंकोकिलकोसुनिशोर
है॥ शोरहैतौकछुनीकेरहौलषनेशकहौंतुमसोंश्रबभोरहै। भोर

हैऐसोनहींकबहू पहिलोविरहायहनीचकोबोरहै ४५३ बोरहै तोभलोईबनिहैपरदेशबस्योहितूप्रीतमजोरहै ॥ जोरहैमोपैवसं तकोआजुनवांचनपैहौकहौंकरिधोरहै । धोरहैधौंकबलौंमिटी औधिलखैलखनेशजुताकोनबोरहै ॥ बोरहै यातियसाढ्दिनको यहजानिभयोअतिहीमनबोरहै ४५४ बोरहै कोकिलकूकै लखेअरुफूलनिपैकियोभौंरनिधोरहै । धोरहैमंडिबसंतचहू दिशिमोकोनभावैनसांझनभोरहै ॥ भोरहैमोहियकामकोजोरया प्रीतमसोंलखनेशनिहोरहै । होरहैजाइकैऔरसोंनेहकैमोविर हानिधिबीचमेंबोरहै ४५५ बोरहै तो यहहालसुनो कछुप्रीतम सों अबमेरोनजोरहै। जोरहैक्योंअबमोसोंहियोवहमेरेलियेमन वाकोकठोरहै॥ ठोरहैमोकोनहींलखनेशलखेविरहानलकोकरौं शोरहै। शोरहैआजुचहू दिशितेयाबसंतसुनेदुखनाहिंदबोरहै ॥ ४५६ ॥ पुनरसिंहावलोकन ॥ भयोहैहँसीसुनिबो निशिवासरमो कुलकानिकोखोइदयोहै । दयोहैनपातीलिखीकरकीकरकीतेहि छातीजोकोऊगयोहै ॥ गयोहैनकान्हकहू लखनेशनआवनकोइ तनामलयोहै । लयोहैसो दुःखबसंतहियोविकसंतगुलाबतेअंत भयोहै ४५७ ॥ पुनरसिंहावलोकन ॥ जरोहै निसाकरतेतपि अंगवृथाबिरहानलमोपैपरोहै । परोहैजोप्रीतमदेशपरैलखने शगुनेयह चित्तहरोहै ॥ हरोहैससाखसोदुःखसखीरजनीमेंब- संतकेवैरकरोहै । करोहै सो चाहत भोगभयोयाकलंकजोनैन- निकोकजरोहै ४५८ ॥ पनरकवित्तसवैया ॥ झोंकीबयारिवसंत केआगमभोगीसुक्योंनहिंधीररहैधरो । रोगीभईहौंबिनाघनश्या मनभूषणनोंदउसासहियेभरो ॥ त्यों लखनेशजू किंशुकआदि गुलाबअनारअँगारमनोफरो। अंगअनंगबिथाहैबढ़ीकछुभावतना हियओचगरेपरो ४५९ ॥ पुनर ॥ आयोबसंतदहंतसखीचहुं ओरतेकोकिलकूकसुनावत । अंगनअंगनकामजगावतनेकुहिये नहिंधीरजआवत ॥ डोलतमंदसुगंधसमीरलताद्रुमहू मिलिमोद बढ़ावत । काहेकोतंपरवाहिकरैंलखनेशजेगोकुलनाथकहावत ४६० ॥ पुनर ॥ गुंजतभौंरकेशोरचहू दिशिकूहकैकोकिलापारति

श्वारत । पीवहिपीवपपीहारटैलखनेशसुनेजियधीरनाधारत ॥ टेसूकुसुंमतेलूकैउठैंबिरहानलकोधधकाइपसारत । प्रीतमभेरो बिदेशबसै दरशैकोदश्चायहचित्तबिचारत ४६१ ॥ श्रागधेवाक्य छप्पै ॥ बहत नीरसरिधारजातभननाइभँवरदुरि । कुसुम गंध गुलाबश्चादिरसलेतचुगतमुरि ॥ शीतलमंदसुगंधपवनतरुफंद रहैंफँसि । तावनविविधिविहंगउचतझंकारश्चहलसि ॥ लखि छपणदासजूकहतयह श्रलिनमलिनश्रतिकरतहिय । थिररहतन चितकरिश्यामसुधिबिरहदुमहदुखग्रसितजिय ४६२ ॥ पुनर दोहा ॥ शीतलमंदसमीरनिशि हियेबढ़ावतज्वाल ॥ क्योंकरि कैजियराखिहैंतरुनतरनिकरमाल ४६३ श्रायोयहऋतुराजश्रब हियतेसखीबिहाल ॥ बौरतहींबौरीकियामंजुलकुंजरसाल ४६४ साजिचमूरतिकंतकोश्रायोसखीबसत ॥ निशिदिनशोचौंहौंझखी खबरिनलीन्हींकंत ४६५ सोकतमरमगिताहरतपत्रमृजादब- संत ॥ श्रजहूं घरश्रायोनहींसखीहमारोकंत ४६६ मनभावन श्रावनकठिन धावनबिरहनरेश ॥ कुंजनकुंजनिमेंमधुपगुंजिरहे श्रबवेश ४६७ ॥ छंदत्रिभंगी ॥ कुसुमिततरुसोहैं मुनिमनमोहैंब्रजतियजोहैं चहुँश्रोरैं । मोहितदुखवागेदेखितड़ागैंवागे लागैंश्रलिगोरैं ॥ बिरहाश्रतिबाढ़ीहैंलखिठाढ़ीबिसमितगाढ़ीहौं जियते । बिलरैंनहिंबतियांछिनकबरतियांबिरहतिछतियांसुधि पियते ४६८ ॥ पुनरछंद ॥ ऐसे वेनिरमोहीमोहनछोड़िगयेहैं प्रीतिश्रली। वहमुसक्यानिचलनिवहचितवनिवहगरबीलीचाल भली ॥ बिसरतनहींछिनकश्रवतापरमजि श्रायोऋतुराजइतै। वहैनीरशीतलसमीरयहतीरसरिसकरपीरहितै ४६९ ॥ दोहा ॥ यहिबिधिबिकलबियोगश्रति श्रीवृषभानुकुमारि । बिबिधिविप तिवर्णनकरतिसमुझावहिंसबनारि ४७० ॥ सखीवाक्य । कवित्त सवैया ॥ जगमेंहकरैनाकोऊकबहूं बिछुरेतेघनोदुखपावतहै । मनभावतिहै कछूलोककीरीतिना प्रीतमनामुले ावतुहै ॥ लख नेराजताहिकीश्रावनश्रासलैरैनिदिनायोंबितावतुहै । घनधीरन ई नभईगुनिराधिकाधीरहींतोब्रजज्यावतुहै ४७१ ॥ पुनरसखी

वाक्य ॥ मिलिकेबिछुरेयहप्रीतमसोंदिनरातिसिरातनुभावतुहै। मनमोहिं हियोतेहियोकरिकैपरिकैउनसंगमेंधावतुहै ॥ लखने अयापीरनजातिकहीजियहीरभयोदुखपावतुहै। धनुधीरनई न भईगुनिशधिकाधीरहीतोब्रजज्यावतुहै ४७२ ॥ पुनर ॥ जबते गमन्यो परदेशपियातबते दिनरातिविहातनहों। यहशोचति है मनमें अपनेकोउबोरउतैअबजातनहीं ॥ लखनेशजूवालन वेलिनकेसुधिनेकुहैगातऔ वातनहीं। तिनपै यहहालकोजाइ कहैबिरहानलज्वालसिरातनहीं ४७३ ॥ पुनरसखीवाक्यसिंहा-वलोकन ॥ कलमारमरोरकरीछलमाजोहियेबसिकैबिलस्योभ लमा। भलमा अतिलागिहियेपलनापरचित्तफँदाइलियोबल मा ॥ बलमाअवसोचितभावतुहैकछुभावतनामोयही थलमा। थलमालखनेशरहै सोकहैब्रजबलबिहालनहींकलमा ४७४ ॥ पुनरसखीवाक्यसिंहावलोकन ॥ तावनकोकरिहैदुखकोसुनेकाहु कोबोलनलागैसुहावन। हावनभावननेकुकछू नहिंभोजियको अबकामबँधावन ॥ धावनह्वैबिरहाधिपकेघतेगुंजिरहेतनुभंग अपावन। पावनको नहिंकोऊकहैलखनेशजूवेसबसंतसतावन ४७५ ॥ पुनरसखीवाक्य ॥ छलीरीसतायोयकामभलेकछुनेकुन भावतसोगगलीरी। गलीरीनभावतिमोहियतेलेहिनेहबियोगिनि जीवोअलीरी ॥ अलीरीभयोहितूप्रीतमतोअबखाखलपेटैं को नाबिचलीरी। चलीरीसुकाननकोलखनेशगहेमृगछालाबिभू ति छलीरी ४७६ ॥ पुनरसखीवाक्यसवैया ॥ हिलेहूमिलेऔ मिलेचितदेहितकैबिछुरेनाहियावतुहैं। जिनहैंपरतीतिकेमीत सदाहियमांझसदामितभावतुहैं ॥ लखनेशयाशोचलग्योचित चारुबिचारुदुखैसोनसावतुहैं। मनभावतुहैंनकहैकोउसोबिरहा नलज्वालसिरावतुहैं ४७७ ॥ श्रीराधावाक्यछन्द भुजंगप्रयात ॥ ऋतुराजसाजेदलैआजुआयो। हियेमैनकोदौरिकैयेजगायो ॥ उचैंयेसुगंधैंछटाज्योतिपागी। मिलैनाअबैश्यामतोकोनरागी ॥ ४७८खिलीचांदनीमैनहोंकोजगावै। महासोगमेरेहियेमेंबढ़ावै ॥ न डोलौंडगौंदृष्टिहेरैंनमेरी। कहौंपीरतोसोंहियेकीघनेरी ४७९

भईआनिअंगो दुखैकीउमंगी। मेरेआनिऊपैउचीफौजजंगी॥ कहूंनामिलैंश्याममोकोत्रिरंगी। मिटैदुःखभारीअनंगैप्रसंगी॥ ४८० गयोफागुनौचैतहूदौरिआयो। हियेमैनकोयाभभूका जगायो॥ भईघामयोंघारतापैबढ़ाई। सखीश्यामकैमोपरैना रहाई ४८१॥ पुनरछंद॥ जगमगातझंकरभूभुरूकठिनतीब्र येघामवली। होतिलुवारपारउरअंतरपगभरिभूमिनजातिचली॥ लखिहौंऊबिसांसकोलेतीकहौंशोरकरिभांतिभली। मनमोह नसोंवदनदूजोदुसहबिरहजो मेटलली ४८२॥ पुनरछंद॥ कठिनकरालज्वालअतितीक्षणहै बैसाखकीधूपभली। लूकैउचैंभभूकैंजियतेचढ़तझुकौंपरयंकअली॥ जबतेगये खबरिनहिं लीन्हीं यहगुनिसोगनतापभरी। वैतोहैं निरमोहीमोहनको ब्रजकीअबखबरिकरी ४८३॥ पुनरछंद॥ मोकोंकछुनहिंभावत आलीवैवांसुरिकीलटकअरी। लटकिचलतमनहरतबिहँसिकै सोइसुधिहोइजलआंखिभरी॥ कैसेरहौंसखीबिनश्यामहिंबिसरतनाछिनएकघरी। हैपरवाहितिन्हैंकछुनाहींकौनपापतिन प्रीतिपरी ४८४॥ पुनरछन्द॥ तहँखानाखसखानासींचतको परिहैअबआली। अतरगुलाबसुगंधनभावतसुरतिश्यामकीशाली॥ मारिनैनकोबाणहियेमें करिघायलइतडारी। मरीनही रुजियेमेंनाहींगुणतहोतदुखभारी ४८५॥ पुनर॥ छिनछिन सुरतिसँवलियातोरीचालचलनिबिहँसनकी। तुमबिननाथको जानैमेरी जानतहौ मोमनकी॥ कृपाकीजियेलालमोहिंपरसुरतिनहींहै तनकी। हम अबलाहैंनाथगँवारीसुरतिकरौनिज प्रणकी ४८६ श्रीनँदलालदुलारेप्यारेक्योंगोपिनजियमारे। सबको देअधारअतिप्यारेबिरहसिंधुअबडारे॥ तबैकहयोजो नेह निबाहनसुरतिकरौसोप्यारे। अपनेसमाचारदिनप्रतिकेलिख्यो हालनिरधारे ४८७ लिख्योहालयह काग़जमाहींदुःखदुसह जेहिभांती। दिवसदीर्घज्योंज्योंकरिबीतत रातिबिरहसरसाती॥ आलीकोलैजाइयापातीदहतदुसहदुखछाती। कोउन हितूजगभावतहमकोश्यामसुरतिमतिमाती ४८८॥ पुनरछंद॥

हमसोंछलकरिहरिमनलीन्ह्योबिसरतिनावहभांतिभली । वह चितवनितिरछोहैं भौंहैंहियतेटरतिननेकुलली ॥ कोब्रजमेंश्र वरेहैआलोकयोंबनमालासुरतिकरो । छिनछिनमंजुमाधुरीबिहँ- सनिकुलकीलाजैकतलकरी ४८९ पुनर । अतिसुकुमारसुजान श्यामहैंकोबरणछबिसोई । कहँलौंकहौंहालउनकेरोकठिनपीर जियजोई ॥ कयोंरहियेकयोंत्रसियेआलोकयोंबसियेबिलनाई । नहिंपावैंननमोहनकोहमयाहियतपछिताई ४९० नेमकियोतैं हमसौंमोहनअबकुतमगहिलोनो । पावतिनहिंसपनेहूंदरसन थकयाजीवहैहोना॥काअबसकुचछोड़िकुलकेरीपातीपठवैआली । कपटोकरकुबुद्धी उतसबहैंअतिपरेजाली ४९१ अनियारीअदभुत रसवारीप्यारोसुरतितुम्हारो ॥ मैंवारीमेरोजियहारीसोंजिय कयोंतुमारो ॥ तूंउतजारीहालहमारीकहियोसुरतिहितैको । करुणरजारायहगतिमाराभोगोभईउतैको ४९२ ॥पुनर ॥ हैंसब वालविहालछालविनकोवरणोदुखनाई । वथोतेयहकढ़तनजियते कठिनपोरहियजोई ॥ खानपानभावतनहिंआलोहैसहायनहिंको- ई।परोममगाढ़ोअबनबकोनिशिदिनआरतहोई ४९३ पुनरछंद ॥ प्रातकरैअस्नानदानकोअर्घपात्रकोदेई । एकयामकेऊपरआली खानपानविषनेई॥त्राशाबजेमजेदलमदमथपथननलटिलियोई । पहरतोसरेहियकोआलीविरहादेतजलोई ४९४ संध्याकालसमै नाहंभावतयोंवरणोदुखनाई ॥ पहरएकयामिनिकेजातेहियमेंवि रहबढ़ोई । बढ़ैंतरगअगअंगनमेंरंगअनंगसमोई ॥ तबभावतमरि वावरयोंदुखजातानहींमहाई ४९५ पहरतोसरेयामिनिमाहींकछु नहिंभावतआली।हरिकोदरशभावतोहमकोकठिनपोरहियघाली॥ वैतौहैंनिरमोहोनाहकनैनवाणहियघालो ॥ नैनवाणकीसैनमारकों रोकिनकैनहिंढालो ४९६ यामयामिनीशेषरहेतेवेगमरतिअति आलो ।शेषनागगणईथाईगमोदासुणदुखहियगालो॥तूतौकरौसहा यहमारोदुखपावतिसोइआलो । लिख्योजोनविधिनाकोकर्महिं भोगकरतहैंआली ४९७ पुनरछंद ॥ हैंघनश्यामसकलंककिमूरतिने हकहांनिबहो। जितजितरहतसुनतिहमएसोतिततितकरतयहो॥

कैसेकैपरतीतिकीजियेपीरपरायगही ॥ लषणदासब्रजराजमिल
नकोश्रावसंतरहो ४९८ पुनःछंद ॥ यहिविधिविकलवियोगबा
लषबएकसमैब्रजमाहीं।उद्धवआवनकियोपत्रलैवोधदेवावनकाहीं
पहुंचेश्राइनंदकेद्वारेउरश्रनंदअधिकाई ॥ उठेनंदजूमिलेप्रेमसों
बांहपकरिबैठाई ४९९ उद्धवकहौहालहरिजूकोहैंप्रसन्नमनमाहीं
हमरिउखबरिकरतहैंकबहूंबारबारवलिजाहीं ५०० उद्धवखोलि
पत्रिकादोन्हींभोअनंदजियमाहीं ॥ फिरिफिरिबांचतनैनलगावत
कंठल्यायहियमाहीं५०१ऊधवश्रावनकोसुनिगोपीचितचोपीब्रज-
वामा। श्राईसकलनंदकेमंदिरबढ़ोप्रेमश्रतिकामा ॥ बोलिएकन्त
लियोऊधवकोबूझयोबचनललामा।हमरिहुंखबरिकरतहैंकबहूं सब
सखियनकीश्यामा ५०२ नेहबढ़ायकियोचितमैनहिंबांधिप्रेमकी
डोरी। सोगुणकीश्रबलाजनलागतिबिरहसिंधुमहँबोरी।उठततरंग
उमंगश्रांशुदृगपीरश्रगाधश्रथोरी। दाहतरहतशोकबड़वानलजल
चरदशाकरोरी ५०३ छिनछिनवहमुसुक्यानिमाधुरीसुमिरतबिहर
तिछाती। मुखतेंकहतबनतनहिंबैननैननझरसरसाती ॥ दिवश
मरूकरियुगसमबीततयुगसहस्रसमराती।भूलीलाजसाजकाकहि
येहमलखिलाजलजाती ५०४ योंकहिभईंबिकलसबबालाभैतन
मनगतिभोरी। गिरहिंधरणिपुनिउठहिंनसम्हरहिंहियपरितापश्र-
थोरी॥नहिंश्रवकासउसासभरनकोमरनलख्योवरजोरी।धरिउरधी
रधुरन्धरऊधवबचनकह्योश्रभिबोरी५०५धन्यधन्यवृषभाननन्दिनी
धन्यधन्यसबबामा। तुम्हरीप्रीतिरीतिश्रमाधवक्योंनरहैंवसुजा
मा॥मैंधनिभयोंलखेपदपंकजबंदितश्रजश्रभिरामा॥ धरिधीरजमम
विनयसुनौश्रबतुम्हैंकह्योघनश्यामा ५०६ छन्दत्रिभंगी ॥ तबसु
निइभिवानीश्रमृतसानीतजिश्रकुलानीधीरथिते । उठिउठिसब
गोरीतनमनभोरीमनौचकोरीचन्दचिते ॥ बैठीसबठौरेउद्धवबौरै
करिदृगजोरेमौनगहे। उरबिरहधरेश्रतिधीरग।हेमतिक्षीरलहेगति
नीरबहे५०७उद्धवकरजोरीकहगतिभोरीमोमतिखोरीजानिक्षमै।
श्रतिबिरहदुखारीगिरिवरधारीकहश्रसप्यारीबिनसमै ॥ बिछुरन
कीपीरापरमगँभीराश्रवगतधीराजानियहो। जोवतजोरेहैंतौफिरि

पेहैंप्रीतमएहैंऔरनहों ५०८ पुनःछन्द।मैंकिमिकहौंहवालआपनी
तुमबिहीनबृजवामा । भेसबसुखदपरमदुखदायकलहौंनछिन
बिसरामा॥ जेमयंकनिशिअंकविराजतलखतकरतउरसीरो। ते
विषकिरिणिनरबिअबमोपैरहतजरावतजीरो ५०९ जेबिहंगमृदु
बैनबोलिकैचैनबड़ोउपजावैं । तेअबबारिमिनकेपावकजियकरि
खाखउड़ावैं॥ जेवसन्तबिकसन्तकुसुमगणबिबिधिबिनोदबढ़ावैं
तेऋतुराजभयेअबसांचेहुंसाजिचमूभरछावैं ५१० जेकमलनब-
रणतकोमलअतितेकठोरह्वैलागैं । कुंजबिहारकियोजिनदिनमैंते
दिनविषसमजागैं॥ सप्तसुरनअरुतीनिग्रामकीवंशीवहअबभूली।
त्रिविधिसमीरतीरसमलागतउठतहियेमहँसूली ५११ शोचतहैं
मोचतजलनैननकछुदिनरैननभावै ॥ वहचन्नंकचातुरीकलावह
अबनहिंनेकौआवै। यौंकहविविधिवचनमनमोहनकेहिविधिवर
ननकीजै॥ राधाबुद्धिअगाधालैयहबांचिपत्रिकालीजै ५१२ छन्द
त्रिभंगी॥ इमिउद्धवबैनासुनिसुखऐनाकछुउरचैनाधारिलली ।
औरौसबगोपीअतिचितचोपीदुखगनलोपीभांतिभली॥ हरिकर
कीपातीविरहकिकातीगहिकरछातीलाइलियो । कोइधरिदृगदू
मैकोईमुखचूमैकोइचहुंछूमैहरषिहियो ५१३ सवैया॥ भूलिगई
सुधुदेहऔगेहकीनेहबढ्योउमह्योमुदछाती । बोलिनआवतवैनमु
खैअ्रतिसोनसुनैकहुंऔरकीवाती॥ यौंलपनेशसबैबृजवामभई
घनश्यामहिंमैंमतिमाती। नादरसेतरसेदृगतेझरसेवरसेपरसेकर
पाती ५१४ घनाक्षरीकवित्त॥ एकैकहैंशोकसिंधुतारिबेकोपोतयह
एकैकहैंऔषधीवियोगतापज्वालकी । एकैकहैंभीतितमतोमको
तमारिअहैएकैकहैंकाटनोहैबृजतियकालकी॥ एकैकहैंआनँदकुमु
दवृन्दचंदस्वक्ष एकैकहैंकृपाकोररसिकरसालकी। लपनेशदशाक
हीजातीनहींमातीमोदछातीलायपातीरहींमदनगोपालकी ५१५
दोहा॥ धरिधीरजललितासखीबोलीबचनविनीत। पातीसवहिं
सुनाइयेराधाशुचिजसगीत ५१६ तबराधाशुचिपत्रिकोदीन्ह्योषाम
उघारि॥ धरिधीरजदेखहिंसबैपढ़िनसकैंबृजनारि ५१७ हरिके
करकेअंककहुंवहेदहेकहुंहैंन। कहुंपूरेरूरेकरतचैनमैनजलनैन।

५१८ पुनिपुनिपातीबांचिइमिपुनिपुनिहियेलगाउ॥ गद्गद्गरग
हवरहियोएकसखिसबहिसुनाउ ५१६ छन्द॥ स्वस्तिश्रीवननंद
नादिमनिश्रीवृन्दावनवासी। श्रीसयुक्तश्रीसहजसलोनीश्रीराधा
सुखरासी॥ तथातथाश्रीयुक्तउक्तपुनिभिन्नभिन्नबज्रवामा। येतेनं
दनँदनकान्हरकोलीजैसबैप्रणामा ५२० समाचारशुभसदासर्वदा
दिनदिनछिनछिनगाऊं॥ विधीवारसोसकललाड़िलीलिखिवो
बलिबलिजाऊं। ताकोलाइनैनमुखउरभुजविरहतापसियराऊं॥
समाचारमेरोभलहैहैजबैदरशतुवपाऊं५२१कवित्तघनाक्षरी। दश
दिशि पालनको भूतिसबआदिअहैकाहनवनिद्धिअष्टसिद्धिहूवि-
ख्यातीहै। सातौसिंधुवारपारप्रभुतानभावैमोहिँतबतेंनषटरसर-
सनारसातीहै॥ पांचौतत्वहीनसोहौंचारौंचमूसरैनाहिँतीनिदेव
कोसौंयुतिउद्धवसँघातीहै। एकतुवहीनहमदीनपरवीनअहैंजानै
पीरछातीयेनपातीलिखिजातीहै ५२२ छन्दगीतिका। इमिसुनत
पातीश्यामकीवशप्रेमब्रजबनिताभई। हगउमगिअंबुप्रवाहसौं-
चतहियोअतिसुधिबुधिठई॥ तवखोलनेहसराहिउद्धवहरषअति
मनमहँलह्यो। तिनबोधहेतबनाइवैननज्ञानकोमारगकह्यो ५२३
परब्रह्महैंश्रीकृष्णजूनहिँआदिअन्तसमानहैं। सबसृष्टिकारणदास
तारणप्रेमबिवसप्रमानहैं॥ तेइत्रिगुणतनबिधिविष्णुहरह्वैसृजत
पालतनाशहों। हैंअगुणअजअद्वैतसबतेपरेज्योतिप्रकाशहीं५२४
नरतनधर्योजनत्राशभंजनदेवरंजनकाजहों। श्रुतिपंथरक्षनदलि
बिपक्षनसुयशइमिमुनिसाजहों॥ करिविविधियतनप्रवीणज्ञानी
भाग्यबशजेहिंजानहीं। तुमप्रेमबशकरिलियोतिनकोहमअचम्भ
वमानहीं ५२५ नहिंअहैंवप्रभुनन्दसुतब्रह्मादिकेपितुजानिये। क
रिभगतिगतितिनकोलहौममसीखयहशुभमानिये॥ सुनिइबिधि
बचनबिचित्रउद्धवहियसबैअकुलाइकै। गुणिउचितउत्तरदेहिँगो
पीप्रीतिहियसरसाइकै ५२६ कवित्त॥ निजगुणबांध्योब्रजअगुण
तेकैसेअहैंसुंदरसलोनोरूपतैसोनापिछानको। नन्दजूकेजातक-
हौनन्दहीको ताकोजातमतिविपरीतिकरौकोटिक बखानको॥
जानियामत्रासोहमैंनागरीदेखावतकीकैधौंमतिभूलीदेखियहबज

थानको। उद्धवकहौतौहौंसिखावैंहरिमित्रजानिऐसेअबबचनसु-
नायोनहीं आनको ५२७ कैथौंवेअक्रूरकूरदूरिहरिकीन्ह्योजिनतिन
होंसिखायोदेनसीषशुचिसत्तिहै।सुनैपुनिचेरीएककुदुष्टकंसकेरीअहै
वशकरिलीन्ह्योयहकैधौंतासुमत्तिहै।।कैधौंऔरइतउतकोईउपदेश
कियोउद्धवजूकैधौंबुद्धिरावरीसकत्तिहै। कहिलषनेशवेशकहांलौ
बखानकीजैयोगहमयोगबातयहईफवत्तिहै ५२८ देहैंनाअक्रूरसी
खदीखबजबासिनवैऔरकोनकामकछुबरउरधारिहै।श्यामजूहमा
रेप्रीतजानतहमारीगतितिनकीनह्वैहैमति बूझ्योहौंबिचारिहै॥
उद्धवविशुद्धतुम्हैंदेखतीहैं बुद्धिवृद्धतातेलषनेशनहिंतुवअनुहारि
है।बीसबिसेजानैंयहबुद्धिकुबिजाकीअहैदूसरोनऐसोजोनमारेहूपै
मारिहै ५२९ रसनअसनपटवसनलसनत्यागिजागिहवैविरागि
यंत्रमंत्रकेप्रयोगहै। भूतिकैविभूतिकरतूतिमजबूतिकैकैलैकैवन
बासआसत्राशनाशकोगहै॥ कहिलषनेशवेशकरिकैकलेशकेहूं
तपितपितनतपपायोमुनिलोगहै। हरिकोवियोगरोगशोगबड़ो
भोगकरैंअबलाअयोगभलायोगहमैंयोगहै ५३० होतजिनजैसो
तिनतैसोईसुभावगहै उद्धवविशुद्धमतिसमुझौबनाइकै। सत
संगसतऔअसतमैं असतजातगावतप्रबीनलषमेशठहराइकै॥
सजतनकेहू हमनीकेकैविचारिदेख्योकैसेमतिवेदअविखेदकोमि-
टाइकै। प्रीतमहमारेहरिकुबिजासौंभोगकरैंयोगकहाऐहैहमैं
तिनकीकहाइकै ५३१॥ छंदभुजंगप्रयात॥ सुनैवैनगोपीन
केयोंरसाले। हियेउद्धवैकेभयेहैंकसाले॥ कहयोहाथजोरे
कृपामोहिंकीजे। कहैंनाकरयोसोनचूकैगुणीजे ५३२ अहैप्रेम
सांचोतुम्हैंनंदनंदै॥ अहोभाग्यहैताहिक्यौंहूंजोवंदै। सखा
मित्रहूंअत्रकैभावकेहूं॥ कृपासिंधुदातारनिर्वानतेहूं ५३३
भज्योदारतंजारभावैविसारी। करैंगेकृपासिंधुतौधर्मधारी॥
भलीबात है ज्यों अमीपानगावैं। अजानौंसुजानौंगुणैएकपा
वैं ५३४ अहोतूकृपासिंधुकीप्रीतिबोरी। लखेतेलह्योमोद
मैंहूंअथोरी॥ अहैज्ञानवैरागसोनिंदमानै। जहांहैनहींकृष्ण
प्रेमैप्रधानै ५३५ लियोआपनीवश्यकैतूगोपालै। वृथाकौन

काजैकरौंयोगजाले ॥ अहोकृष्णरूपैसबैगोपकन्या । गुन्या
आपनेचित्तधन्यानिधन्या ५३६ ॥ दो० ॥ सुनिउद्धवकेवचन
इ मिवोलीगुनिब्रजबाल ॥ कहौनहमअबजानियउद्धवबुद्धि
बिशाल ५३७ योगयुगुतिगतिभगतिकीहमैंनहैकछुचाह ॥ क
हहुजाइभावतिजिन्हैंपरमारथकीराह ५३८ तेकाशीगंगावसैंबद
रीवनगिरिनार ॥ गोकुलकीहमकुलबधूचाहैनंदकुमार ५३९
कवित्त घनाक्षरी ॥ निशिदिनप्यारोगुणगावतविहातहमैंगावत
बनैगोनाहिंपौरिद्वारेद्वारेकी । देखतरहतदृगसहजसलोनोरूप
देखतबनैगोनाहितत्वअनियारेकी ॥ श्रवणसुननचाहैंमृदुवत
रानिवहसुननतभावैयोगमारगकतारेकी । छारमुखलावैंनाहिं
लालमुखलावैंमुखलावैमति छारछारज्ञानमतिवारेकी ५४०
दोहा ॥ वादियोगजपवादितपवादियज्ञब्रतजोर ॥ उद्धवभावत
हैंहमैंकेवलनंदकिशोर ५४१ तजनकलानिधिकालिमाकियेकोटि
उपचार ॥ तजहिंनगोकुलकीबधू ऊधवनंदकुमार ५४२ सुनत
बचनरचनाललितहरिपदप्रेमप्रधान ॥ प्रेमपुलकिउद्धवगुणयो
गोपिनगुरअनुमान ५४३ बहुबिधितिनहिंप्रशंसकरिमांगिअभै
बरदान ॥ कछुकदिवसतहँहरिसखारह्योसहितसन्मान ५४४
नितनूतनआदरपरमविविधिभांतिसत्कार ॥ कियोयशोमतिनंद
युतब्रजबासीसरदार ५४५ मांग्योविदाब्रजेशसोंबारबारपरि
पाय ॥ कयोंकरिमैंवर्णतकरौंआयोब्रजहिबिहाय ५४६ ॥ क-
वित्तघनाक्षरी ॥ एकैदेतपातीमुखबातकहिजातीनाहिंएकैमति
मातीआंशुढारैंमुखचूमिचूमि । एकैकहैंवेशयासँदेशकहिदीजोतात
भूलीसुधिगातएकैजातलुठिभूमिभूमि ॥ कहिलषनेशएकैउ-
द्धवैसम्हारकरैं पीपरकेपातसेवपुषरहेढूमिढूमि । एकैपहुँचावैं
फिरैंआवैंघरैंजावैंजहांधीरजनकयोंहोंधरैंएकैगिरैंघूमिघूमि ५४७
दोहा ॥ यहिविधिनिरभरप्रेमसबमिलिमिलिनरअरुवाम । ब्रज
बासीब्रजकोगयेउद्धवजहँघनश्याम ५४८ ॥ छंदत्रिभंगी ॥
राजैयदुवंशीशूरप्रशंसीबहुअरिध्वंसीभांतिभली । उग्रसेननरेशा
शोभितवेशामनहुंसुरेशा देवथली ॥ बसुदेवसुठामायुतहरि

रामाअतिबलधामाऔरसबै । सात्वकिकृतवर्म्मा दानसुकर्म्मा सभासुधर्म्माअमितफबै ५४९ उद्धवपुरआयेअसुधिपायेहरि उठिधायेजाइतहां । देख्योंबरमित्रै परमपवित्रै लह्योविचित्रै मोदमहा ॥ गहिहृदयलगायो नयनजुड़ायोआंशुनहायोमिलत भले । पूछ्योकुशलातागद्गद्बातादोउचितरातापेमफले ५५० कछुकहतनऊधौजनुमतिरूधौहरिमुखसूधौचाहिरह्यो । वह प्रेमबिचारतधीरनधारत दोउदृगआरतनीरबह्यो ॥ तबबचन सहैतैंयुगुतिसमेतैंपरमनिकेतैबिहँसिकह्यो । बोलौनहिंकेहिं हितचितवतजिततितब्रजसुखकछुचिततुमहुंसह्यो ५५१ सुनि प्रभुकीबानीहासहिसानीतजिअकुलानीकहतसखा । देख्योहम ब्रजधनऔरौबहुजनअसकोमलमननाहिंलखा ॥ जसतुमयदु नंदनहौजगबंदनमोहनिकंदननामधरे । सोसांचेहुदेखैंपुनिपु-निलेखैंरेखहिरेखैंधन्यहरे ५५२ ॥ दोहा ॥ होतकुलिश तौ वेधतोधारणकोगुणगाथ ॥ हौंराउरमनसोगुण्योरावरोईमनना थ ५५३ उद्धवकेसुनिमृदुबचनमाधवमृदुमुसुकाय ॥ कह्यो कहौब्रजकीखबरि केहिप्रकारसबभाय५५४ ॥ छंदचतुरानन ॥ उद्धववाक्य ॥ बाढ़तबिरहकृसानदहैउरश्वाससमीरजगावै । हितअनुमानिआपनोकेवदृगयुगताहिबुझावै ॥ पहरोदेतनाम हरपहरनतेहिनहिंकालपचावै । ब्रजबासिनकोहालकहैंकिमि अनहिंकहेभलभावै ५५५ लहलहायलोनीजेलतिकातरुतमाल छबिछामैं । तेमहिपरीमूलजनुतोरेजरतीदुसहदमामैं ॥ जे अरविंदचंद्मेंबिकसैंतेदिनहूंद्युतिहीने । ढारतरहतबुंदमकरंद नसुनुनँदनंदप्रवीने ५५६ खंजनशुककपोतकलकोकिलराजहंस जहँ भावैं । बिकसितकंजजपानवकिशलयअलिअवलीछबिछा-वैं ॥ दाड़िमफलकेकदलिकेलश्रीफलनवरसालछबिन्यारी । सो वनमेंअबदुसहदवानलदरशिपरतबनवारी ५५७ जरतवियोग विहँगमृगतरुगिरिसरिताजलअधिकाई । तनचेतनकीकौनच-लावैभूमिहुंमैंनरहाई ॥ तहँतुवहीनजरतहमदेख्योप्रजनसहि तब्रजराई । जोअसनंदनहोतहोतकिमितुमनँदनंदकन्हाई ५५८

॥ छंदत्रिभंगी ॥ सुनिउद्धवबैनाराजिवनयना चितहिय चैनापरमलह्यो । सुधिकरब्रजकेरीनिजदिशिहेरीपीरघनेरीदु सहसह्यो ॥ पुनिधीरजकैकैमित्रहिलैकैयकढिगह्वैकेभौनभ-ले । बासीब्रजजनजनगिरितरुवनबन सुधिकरिमनमनपूछि चले ५५९ उद्धवतबभाख्योगोइनराख्योहरिचितराख्योजानि सबै । पुनिकह्यो सँदेशनिविविधिकलेशनिपुनिउपदेशनिसब हितबै ॥ करिआरतबातीदियपुनिपातीसकलसँघातीजौनदिये । कहयशुमतिनंदैगोपिनवृन्दैजिमिसानंदैमानकिये ५६० बांचत हरिपातीकहीनजातीगहवरछातीरोमखरे । स्वरकंठकढ़ैनाजल झरिनैनातनसुधिहैनाकंपभरे ॥ करभूषणखरकेरुवेदहिढरकेअँग अँगकरकेबिरहदरे । गहिकंठलगायोहृदयजुड़ायोतनमनपायो ओकहरे ५६१ उद्धवसमुझावतनेकुनभावतजलबरसावतनैनन ते । अतिदुखितदयाकरभतेहिअवसरसोनकहोपरवैननते ॥ बोलेपुनिबानीहौंधिगमानीममगतिजानोतेअसहैं । ब्रजकेनर नारीसबतनधारीदुखअधिकारीकौनकहैं ५६२ उद्धवतबबोले बचनअमोलेमर्महिं खोलेज्ञानमहा । सपन्योदुखताहीप्रभुरति जाहीगुनचितयाहीविश्वरहा ॥ तेतुमअसभाषतहमचितराखत तेदुखचाखतमत्तमहा । सुमिरैंनहिं राउरबिषयहिबाउरसो हमब्रजपुरनाहिंचहा ५६३ सुमिरैंप्रतिश्वासैतुमहिंविलासैदूस रिआसैनाहिंधरैं । दर्शन अभिलाषततुवमुखभाषत कपटनरा खतआहिकरैं ॥ दर्शनतिनदीजैकृपाकरीजैऔरनकीजैकछु ओ चै । बिरहाकरिपोचैत्यागिसकोचैमोचितरोचैदुखमोचै ५६४ दोहा ॥ करिबिचारकेअवहियेसुनिउद्धवकेबैन । दुहुंदिशिको अतिपरमहितकियोकृपाकरिनैन ५६५ प्रकटपुहुमिपालतप्रजा वसेमधुपुरीमाहँ । कहौंयथाब्रजकोखबरि कोन्ह्योत्रिभुवन नाह ५६६ दियोदरशचलिस्वप्नमेंजनजनप्रतिसबकाहिं । करहु ओचनहिंहमवसतअबवृंदाबनमाहिं ५६७ सोदेखौसमुझौ सुनौ गुणौहियेसतित्रात । वृंदाबनकोत्यागिहमपगभरिकहूंनजात ॥ ५६८ ॥ छंदत्रिभंगी ॥ जागेब्रजबासीपरमहुलासीहरिसुखरासी

दरघलहे । हर्षितसबबामैंसरससुहावैंजहँतहँगावैंमोदमहे ॥ कहुंलखपगअंकैकहूंचमंकैकहुंस्वरबंकैमुरलिसुनै । भोपरमअनंदैगोपिनवृन्दैसबब्रजचन्दैघरहिगुनै ५६६ ॥ छप्पै ॥ जेहिविधिकैरववृन्दचंदनिधिप्रभापसारत । कलितकमलकुलकमलबंधुदिनछविविस्तारत ॥ जिमिऋतुनिजमर्यादसबहिंप्रगटतनिजधर्मनि । जिमियुगजगमैंआयकरावतनिजमैंकर्मनि ॥ लषनेशबरणिजिमिजननिप्रतिसबहिमद्धिअंबरलसत । इमिनंदनंदआनंदघनवृन्दाबनजनजनबसत ५७० ॥ कवित्तघनाक्षरी ॥ निकसिभयेहैं मंदमंदनंदमंदिरतैंपंथपदअंकनितैंअंकितप्रभातुहैं । मधुरमधुरसुरमुरलीवजावतहैंकालिंदीकेकुंजपुंजअधिकसुहातुहैं ॥ टेरतसखानिकोचरावतहैं धेनुसबैआइयो हमारोचाहिमनललचातुहैं । कहिलषनेशकहैंगोपीएकएकनसौंदेखु रीअनोखेनंदनंदनदेखातुहैं ५७१ कुंजनमैंकोईकहैंकोईनंदमंदिरमैंकोईकहैंकालिंदीकेकूलकेबसैयाहैं ॥ कोईकहैंगोधनकेपाछेहमआछेदेखिकोईकहैंवैतोदधिदानकेलेवैयाहैं ॥ कहै लषनेशअबकौनकीप्रतीतिकीजै आंखिनकीसाखिझूठकरतोकहैयाहैं ॥ घूमिघूमिमेरेभौनरहतचहूंघाकहूंमोकोछिनछोंड़िकैनगौनतकन्हैयाहैं ५७२ ॥ सवैया ॥ कुंजनिमैंवनपुंजनिमैंअलिगुंजनिमैंशुभशब्दसुहातहैं ॥ धेनुधनीधरणीधनधाममैंकौबरणैलषनेशविख्यातहैं ॥ थावरजंगमजीवनकोदिनयामिनिजानिनजातविहातहैं ॥ ह्वैगईकान्हमईब्रजहैसबदेखैंतहांनँदनंददेखातहैं ५७३ ॥ दोहा ॥ राधामाधवकोकथापारनशेषगणेश ॥रसतरंगशुभग्रंथयहिकछुबरन्योलषनेश ५७४ यहिविधिसकलसमाजमैंब्रजबिलसतब्रजराज ॥ गाइगाइगुणगणविमलछहतलोगमनकाज ॥५७५ नामपतितपावनकरनहरनशोकसंताप ॥ खबरिकरैनिजवानिकीते राधाहरिआप ५७६ भाउभेषनाचोकियोमोनहियोतोहिंख्याल ॥ शीतलकरततरंगरसअंगअंगतिहुँकाल ५७७ लिखेपढ़ैसीखेकहादीखेजगतत्रिकाल ॥ रसतरंगतेअंगनहिंजोधोयेमतिबाल ५७८ ॥ इतिश्रीराजपूज्यपांड़ेलक्ष्मणप्रसादज विरचितरसतरंगनामग्रंथसंपूर्णम् ॥

नामकिताब

रामायण शब्दार्थकोष
रामायण का इतिहास
रामायण मानसदीपिका
रामायण कवितावली
तथा वैद्यनाथ जी की
भाषा टीका सहित
रामायण गीतावलीमूल
श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण
कांडकांडभी मिलसक्ती है
रामचन्द्रिका सटीक
अद्भुत रामायण
रामायण रामबिलास
अध्यात्मरामायण सटीक
रामायणअध्यात्मबिचार
विनयपत्रिका मूल
बिनयपत्रिका सटीक
विजयदोहावली
ब्रजबिलास
ब्रजबिलास सारावली
गर्गसंहिता
अवतारकथाऽमृत
सीताबनबास
श्रीरामव्याहोत्सव
कृष्णबाललीला
नाममाहात्म्य
मिथिलामाहात्म्य
गोकर्णमाहात्म्य
कालिंजरमाहात्म्य
मिश्रितमाहात्म्य
बिजयचन्द्रिका

नामकिताब

रामकलेवा
अवतारसिद्धि
कृष्णसागर
बिश्रामसागर
प्रेमसागर
भक्तमाल
शनिश्चर की कथा
बलिचरित्र
कथाश्रीगंगा जीकी
रासलीला
हनूनाटक
चौरासीबार्त्तिक
शिवविवाह व वंशावली
सुदामाचरित्र
दुर्गायन नवकांड
बिजयमुक्तावली
शंकरदिग्विजय

भाषापुराण

देवीभागवतभाषा
लिंगपुराण
सुखसागर
गरुड़पुराण
ब्रह्मोत्तरखण्ड
विष्णु पुराण
भविष्यपुराण
स्कन्दपुराण
श्रीवाराहपुराण
शिवपुराणभाषा
शंकरचरितसुधा

नामकिताब

वेदान्त

योगवाशिष्ठभाषा
सांख्यतत्वकौमुदी
श्रीभगवद् गीतापंचरत्न
श्रीमद् भगवद् गीताभा-
षाटीकासहित
तथामूलउर्दू टीकासहित
रामगीता
कैवल्यकल्पद्रुम
बीजककबीरदास
पारसभाग
ब्रह्मप्रकाश
ज्ञानतरंग
आनन्दाऽमृतवर्षिणी
अद्वैतप्रकाश
युगलसंबाद
सुन्दरबिलास
सत्यनामबिहारवृंदावन
समरबिहारवृन्दावन

काव्य

नानार्थनवसंग्रहावली
कृष्णप्रिया
छन्दोर्णवपिंगल
रसराज
कविकुलकल्पतरु
सतसई बिहारीलाल
सभाविलास
तुलसीशब्दार्थप्रकाश

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
प्रेमरत्न	प्रेमाऽमृतसार	**वैद्यक**
चित्रचंद्रिका	संगीतप्रह्लाद	निघण्टभाषा
पीयूषलहरी	बारहमासाबलदेवप्रसाद	अमरविनोद
गंगालहरी	बारहमासाअलाबख़्श	वैद्यजीवन
यमुनालहरी	बारहमासीकृष्णचन्द्र	औषधसंग्रहकल्पवल्ली
जगद्विनोद	सूरसागर	अमृतसागर बड़ा, छोटा
भारतीभूषण	**क़िस्से**	वैद्यमनोत्सव
रसचन्द्रोदय व रसवृष्टि	बैतालपच्चीसी	इलाजुलगुरबा
अनुरागबर्द्धिनी	सिंहासनबत्तीसी	वैद्यप्रिया
नवीनसंग्रह	पद्मावतीखंड	कवितरंग
मनमोहनी	शुकबहत्तरी	दिललगनवैद्यक
सुन्दरीतिलक	सौदागरलीला	रसमंजूषा
कुंडलियागिरिधरदास	बकावलीसुमन	**ज्योतिषभाषा**
भुवनेशभूषण	क़िस्साचहारदरवेश	जातकचन्द्रिका
शृंगारलतिका	क़िस्साहातमताई	जातकालंकार
भुवनेशविलास	अपूर्व्वकथा	दैवज्ञाभरण
शिवसिंहसरोज	क़िस्सागुलसनोवर	रमलसार
राग	सहस्ररजनीचरित्र	रमलनवरत्न
रागप्रकाश	राबिन्सन्क्रूसोकाइतिहास	इन्द्रजाल
रागसंग्रह	पद्मावतभाषा	ज्ञानस्वरोदय
मनमोहन	मसनवीमीरहसन	पत्रा सं० १९४३
युगलबिलास	मनोहरकहानी	ज्योतिस्सारावली
लावनीबनारसी	दास्तानअमीरहमज़ा	**अन्यउत्तमपुस्तकें**
शृङ्गारबत्तीसी	क़िस्साऔरतऔरमर्द	ज्ञानमाला
भजनमाला	मोतीबिनोलेकाझगड़ा	गोपीचन्दभरथरी
श्रीकृष्णगीतावली	सोनेलोहेकाझगड़ा	**औरभीअन्यउत्तम**
नवरत्नभाष्य	सोनेरत्तीकाझगड़ा	**उत्तमपुस्तकें हैं**
वीणाप्रकाश	मनमोहचरित्र	
वंशीलीला		